गरीब घर

अमीर इरादे

★

सामाजिक उपन्यास

★

श्रीमती आदर्शकुमारी 'आनन्द'
साहित्य रत्न

★

नवयुग पुस्तक भंडार
अमीनुद्दौला पार्क
लखनऊ

प्रकाशक
नवयुग पुस्तक भण्डार
अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ

★

★

मूल्य तीन रुपया पचास न० पै०

★

प्रथमावृत्ति

★

मुद्रक
वर्मा प्रिंटिंग प्रेस
गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

समर्पण

स्वर्गीय पूज्य पिताजी की

स्मृति में

जिनकी स्नेह-युक्त प्रेरणा ही सदैव मुझे बल प्रदान करती है; उन्हीं के चरण कमलों में सादर............

'गरीब घर : अमीर इरादे'

—'आदर्श'

ਗਰੀਬ ਘਰ : ਅਮੀਰ ਇਰਾਦੇ

१

✦✦✦✦✦

'प्रति दिन गिरगिट की तरह तुम रंग बदलती जा रही हो इसका परिणाम ठीक न होगा।' भोलानाथ ने अन्दर प्रवेश करते हुए कहा—

चरखा बन्द कर शान्ता ने कहा—'मैंने तो कुछ नहीं किया।'

'तुम काहे को करोगी; बड़ी सीधी हो; रोटी को चोची कहती हो।'

'कुछ कहोगे भी कि उपदेश ही देते रहोगे।'

'कल श्यामू के ऊपर तूने थूका क्यों ?'

'अच्छा किया है। ऐसे गुण्डों के साथ इससे बुरा बर्ताव किया जाय तो ठीक है।'

'जो जैसा होता है सबको वैसा ही समझता है।'

'अच्छा मैं बदमाश ही सही, पर मुझसे यह बातें सहन नहीं हो सकतीं।'

'कौन-सी बातें ?'

'जब घर से निकलो। नमस्ते जी, घूंघट तो हटाना, आपका नाम पूरा न कह आधा कह कर कहता है......................सो तो परी मिल गई।'

'क्या सच कह रही हो ?'

'तो क्या मुझ पर विश्वास नहीं ।'

'वह तो बड़ा सीधा लड़का है। हर काम में मुझे मदद देता है। जब जाओ तभी आदर-सत्कार करता है ।'

'ठीक तो है; जैसे आप सीधे हैं सबको वैसे ही समझते हैं।'

'मैं उससे जरा पूछूँ तो सही ।'

'हाँ, हाँ, मैं चाहती हूँ उस पर ऐसी फटकार डालिये कि उसकी हिम्मत बोलने की न पड़े ।'

'अगर वास्तव में तुम्हारी बात सत्य है तो उसे और भी बुरी सजा मिलनी थी। मैं भी कुछ-कुछ तो अनुभव करता हूँ कि जब तुम यहाँ होती हो; प्रतिदिन एक-दो बार गली से निकलता है और तुम्हारे माँ के घर चले जाने पर महीनों शक्ल नहीं दिखाई देती ।'

'तो इसीलिए मुझे कहते थे।' शान्ता कुछ साहस करके बोली—

'अच्छा, मैं जरा उसके घर जाता हूँ पूँछता तो हूँ। उसने मुझे समझ ही क्या रखा है ?'

'लड़ना नहीं ।'

'नहीं, मैं सब ठीक कर लूंगा।' राजू कहाँ है ?'

'वह यहीं कहीं खेल रहा होगा ।'

'अच्छा मैं जाता तो हूँ। आज एक-एक करके आऊँगा; बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये जिन पैरों से आये थे उन्हीं पैरों से लौट गये।

'बदमाश, मुझसे कहता है। मुझे देखकर थूका है। मैं कहता हूँ दो जूते भी मार देतो। घर में बहिने नहीं है। आज के लड़के हाथी के दाँत के समान हैं देखने में और काम में और ।'

शांता बेचारी उदास मन से पुनः चरखा चलाने लगी।

'कितना कात लिया,' बाहर से ही शान्ता की सास ने पूछा—

'अभी तो बहुत कम हुआ है माता जी। बातों से छुट्टी मिले तभी

तो कुछ सूत भी काता जाये; न जाने क्या सारा दिन सारी रात खसम से फुसर-फुसर होता रहती है। एक हम थीं, बोलती तक नहीं थी और आज की औरतें है..........राम-राम कहिये।'

शान्ता उसी मुद्रा से बिना उत्तर दिये चरखा चलाती रही।

याद रखना जब तक सूत पूरा न कात लोगी खाना मैं भी नहीं खाने दूंगी। इतना कह वह भी अपनी पड़ोसिन के घर चली गई।

इधर शान्ता धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगी। आगे कौन खाने देती हो। मेरा भाग्य तो उसी दिन से फूट गया जिस दिन से तुम्हारे घर में पाँव रखा। सुबह उठो, चरखा लेकर बैठो। खाना बनाओ, खाना खाने को बाद में मिलेगा जब तक पूरा पाव सूत न कत जाये। इच्छा तो करती है सब कुछ छोड़-छाड़ कर चली जाऊँ।

'कहा जाना चाहती हो,' सरला ने अन्दर आते हुए पूछा—

'आओ सरला तुम तो मुझे ऐसा भूल गई जैसे कभी मिली ही नहीं थी।'

'तुम्हारे बिना शान्ता क्या बताऊँ; स्कूल में जरा भी चहल-पहल नहीं—क्लास भी ऐसी रहती है जैसे कोई बैठा ही न हो।'

'क्या कहती हो सरला। मन तो अब भी करता है, स्कूल ने चाहे मुझे छोड़ दिया हो पर मैंने नहीं छोड़ा; प्रतिदिन वही रंगरेलिया याद आती हैं। अब तो राजू कुछ बड़ा भी हो गया है। जब छोटा था तब मुश्किल था। पर उन दिनों राजू को माँ के पास छोड़ कर चली जाती थी। पर अब तो रंग भी और हो गये हैं। जब से सास रानी आई है क्या मजाल कि पाव सूत काते बिना खाना भी खाने दें।

'कैसे कात लेती हो, मुझसे तो सात जन्म भी न काता जाय।'

'मैं भी ऐसा ही कहा करती थी याद है न घर भर डांटता था। यहाँ से उठा कर वहाँ बर्तन न रखती थी। सुबह सात से पहले कभी उठती न थी। रात को चाहे दो बजे सोऊँ पर सुबह मुझसे कभी न

उठा जाता था। अब देखो चार बजने के पहले ही उठ जाती हूं। किसी दिन नींद न खुले तो सारा दिन गालियाँ सुनने को मिले।

'तो तुम्हें भूख नहीं लगती ?'

'क्या मैं आदमी नहीं हूँ। पहले तो खूब रोती थी, पर अब धीरे-धीरे आदत पड़ गई है।'

'क्या पिता जी सब जानते हैं। तुम वहाँ क्यों नहीं चली जाती ?'

'देखा न हो, पर सुना अवश्य होगा। इस बुढ़िया को कौन नहीं जानता तभी तो पिता जी ने सारी बरात में मेरे पाँवों पर गिर कर बोले थे, बेटी मेरी लाज तुम्हारे हाथ है।'

'चरखा चलाना बंद करो, कुछ सुनाई तो देता नहीं तुम क्या कह रही हो।'

'जरा और पास आ जाओ सरला! बस, थोड़ी सी पूनी रह गई है। बिना काते खाना कैसे मिलेगा। पेट में तो चूहे कूद रहे हैं।'

'भगवान ऐसी सास तो किसी को न दे। फिर दुनिया कहती है, आज कल की बहुएँ खराब हैं। अब तो इनके सामने अपने पति से बोलना भी पाप है।'

'ठीक कहती हो सरला! आँखों में आँसू भर शान्ता बोली। अभी थोड़ी देर पहिले वे कुछ मुझसे पूछने आये थे उसी समय चले गये तो बोलने लगी। 'न जाने सारा दिन खसम से फुसर-फुसर क्या कहती रहती है।'

'धन्य हो तुम शान्ता मेरी जैसी लड़की तो एक भी दिन इसके साथ न बिता सकती।'

'क्या कहूँ, ससुर, देवर आदि होते तो अलग रहने को भी कहती। अब क्या करूँ।'

'क्या अकेले हैं ?'

'हाँ बहिन !'

'तो वह भी कुछ नहीं कहते ?

'कभी कहते हैं, कभी मुझे समझाते हैं, चार दिनों की महमान है ; कह लेने दो।'

'वह तो तुम दोनों को देखकर भी जलती होंगी ?'

'और क्या खुश होती हैं ? न जाने शादी क्या सोचकर की थी।'

'हे भगवान ! क्या समाप्त हो गई पूनी ?'

'हाँ भाई ! सुबह से तो कात रही हूँ। आओ तुम भी चलो, खाना खा लो।'

'मैं तो खाकर आई हूँ, मैं इतनी देर बिना खाये रह सकती हूँ। खुदा का नाम लो ?

'मुसलमान हो गई हो क्या ? खुदा-खुदा चिल्ला रही हो।'

'सब एक हैं। राम, खुदा में कोई अन्तर नहीं, केवल थोड़ी सोच-समझ का अन्तर है। ऐसे तो संसार में पुरुष, पुरुष का भी अन्तर नही सब एक हैं।'

'ठीक तो है।'

'नहीं सरला ! तुम सोचो; जितना माँ अपने बेटे से प्रेम करती है दूसरे से नहीं कर सकती। एक यतीम गली में सड़-सड़ कर मर जाता है कोई पूछता नहीं। इधर घर में पचासों डाक्टर बुलाये जाते हैं। अपना पराया .... ।'

'सूत कात लिया'।

'जी माता जी।'

'तुम्हारी सास थी ,धीरे बोलो, सुन लेगी।'

कहाँ हैं ?

'सामने पड़ोसिन के घर बैठी है, वही तो इधर-उधर की आग लगाया करती हैं ; फिर लड़ाई होने पर वह तमाशा देखती हैं।'

बुढ़ियों को और चाहिये ही क्या ? उस दिन की बात है सरला, मैं

आलू आग पर रख आरती करने चली गई मैंने सोचा थोड़ी आग है, हो जायेंगे। इधर राजू ने लकड़ियों को हिला दिया आग तेज जलने लगी। आलू सब जल गये। आपने उसे लेकर पूरे मुहल्ले भर में दिखाया और कहा, बहू को सब्जी बनाना नहीं आता।

'यही पड़ोसिन मुझे कहती थी कि धन्य तुम हो जो सास की बातें सहन करती हो। नहीं आज की बहुएँ एक की दो सुनाती हैं। क्या हुआ सब्जी जल गई, क्या हमसे नहीं जल जाती। उधर उनसे कहने लगी, मूर्ख है तुम्हारी बहू, लपर-लपर बात करना आता है काम तो कुछ भी नहीं जानती। जब देखो कभी राजू के कपड़े बदले जा रहे हैं कंघी शीशा ले कभी बैठी है। क्या-क्या बताऊँ सरला, नाक में दम रहता है। इससे तो मौत आ जाय तो वही अच्छा है सच कभी तो सोचती हूँ संखिया खा लूँ, अफीम तो घर पर ही रहती है, उसे खा लूं।

'क्या पागलपन करती हो अभी तुमने देखा ही क्या है।'

'बहुत कुछ देख चुकी हूँ। राजू की चिन्ता है। दूसरी माँ आयेगी तो न जाने उस बिचारे का क्या हाल करेगी।'

'कहाँ है वह ?'

'बाहर खेल रहा होगा; वही उठा कर अपने साथ ले गये होंगे।'

'अच्छा फिर आऊँगी, जाओ तुम खाना खाओ।'

'थोड़ी देर तो बैठो। तुम्हीं देखो सूत को बीस बार पूछेंगी पूरा हुआ या नहीं। पर यह तो कभी नहीं कहेंगी कि खाना खा जाओ।'

'मैं भी यही सोच रही थी शान्ता।' पर तुम से कहा नहीं कि एक तो तुम पहले ही दुखी हो फिर मैं और आग में घी डालने का काम करूँ।'

'इसी पर मुझे रोना आता है कितने दिनों तो बिना खाये माँ के पास चली जाती हूँ, वहीं से खा-पीकर शाम को लौटती हूँ।'

'अपना-अपना भाग्य है शान्ता सब दिन रहे न एक समान' कभी तो दिन बदलेंगे। अच्छा तो मैं चलती हूँ फिर कभी आऊँगी।'

'रेखा, मधु, सुमन आदि सब ठीक हैं न? मुझे काहे याद करती होंगी।'

'ऐसा न कहो शान्ता, तुम अपने को दूर समझती हो वह तो ऐसे ही समझती है जैसे बहिनें होती हैं।'

'मिस वर्मा और निगम यह दो टीचरें भी तुम्हें खूब याद करती हैं। मेरी नमस्ते कहना। किसी दिन मैं आऊँगी।'

'शान्ता तुम वास्तव में देवी हो। मैं ऐसे न रह सकती।'

'अब आज्ञा दो बहुत देर हो चुकी है स्कूल का काम भी करना है।

'इच्छा तो नहीं करती पर जाओ, आती रहना।

शान्ता उठ कर हाँथ-मुँह धोकर रसोई में चली गई।

२

+++++

'बड़े दिनों बाद आई हो शान्ता ?'

'निशा कहाँ है।'

'वह तो अभी कालेज से लौटी नहीं,' निशा की मां ने कहा ?'

'कब लौटती है।'

'बस, आती ही होगी। आओ बैठो। राजू कहां है ?'

'उसको मां के पास छोड़ आई हूँ ; शर्म आती है।'

'शर्म किस बात की आज कल सब का यही हाल है। वर्ष पूरा ही

हुआ कि बच्चा पैदा हो गया, जानती हो अगर भारत ने उन्नति की है तो इसी में कि जनसंख्या अधिक बढ़ गई है।'

'आपको यह सब कैसे मालूम हुआ ?'

'यही निशा दीपक आदि कहते रहते है, नहीं तो मैं क्या जानूं।'

'जीजी ! जीजी ! राजू भैया गिर गये। शान्ता की छोटी बहिन घबराई हुई अन्दर आई। कहां से गिरा। निशा की मां ने पूछा। बिना कुछ उत्तर दिए वह लड़की शान्ता का हाथ पकड़ कर घर ले गई।

जैसे ही वह बाहर निकली। दूसरे दरवाजे से निशा ने प्रवेश किया किताबें मेज़ पर फेंक कर बोली, 'मम्मी नाश्ता ?'

'अभी शान्ता आई थी।'

'कौन शान्ता मम्मी ?'

'वही जो तेरे साथ बचपन में पढ़ती थी। वह ही तेरा इन्तजार कर रही थी। पर पीछे से उसकी छोटी बहिन आई बोली—राजू गिर गया वह भाग गई है।'

'राजू, कौन हैं मम्मी ?'

'उसका लड़का ?'

'अच्छा ? मुझे बताया तक नहीं उसको आने दो, कान खींचूगी।

बड़ी लजाती है। कहती है इसीलिए राजू को नहीं लाई, शर्म आती है। बड़ी अच्छी लड़की थी मम्मी। सदैव प्रथम आती थी। अब सुना है कि उसे आदमी पढ़ने नहीं देता वह तो अब भी तैयार है। जितना जिसके कर्मों में विद्या होती है उतना ही वह पढ़ सकता है। ठण्डी सांस लेकर बोली। मैं भी चार वर्ष से खोज कर रही हूं।

'किसकी खोज मम्मी ?'

'किसी की नहीं बेटी, चलो नश्ता कर लो।' मां के कहने का तात्पर्य था निशा के वर के लिए ?

निशा फोर्थइयर में थी। उसके पिता शहर के माने हुए सेठ थे।

कौन ऐसा मनुष्य होगा जो सेठ घनश्याम को न जानता हो। वह खुद तो पढ़े-लिखे न थे। पर पढ़ाई के लाभ वह जानते थे। उनके पिता मालदार थे। इसीलिए लाड़ प्यार में घनश्याम को अधिक विद्या न मिल सकी थी। पर अब उन्होंने अपने बच्चों को पूर्ण तौर से स्वतन्त्रता दे रखी है कि जो जितना पढ़ना चाहे, पढ़ सकता है। यही कारण था कि निशा बराबर पढ़ती जा रही थी।

पर एक बात थी। निशा के पिता, अर्थात् सेठ जी का स्वभाव सेठानी से बिलकुल ही भिन्न था इस पर कभी-कभी गप-सप भी हो जाती थी। सेठ जी नए विचारों के थे सेठानी जी पुराने आचार-विचारों में पली थीं। पर एक बात थी कि सदैव पति के कथनानुसार चलती थी। यही कारण था कि निशा भी आज्ञाकारी लड़की थी।

सेठ जी ने भी अपनी पत्नी को पूर्ण तौर से स्वतन्त्रता दे रखी थी। उनका मन रखने के लिए-कभी-कभी अपने विचार तक दबा जाते थे।

निशा के विवाह के लिए सेठानी जी की इच्छा थी कि पुरोहित द्वारा यह काम कराया जाय जबकि सेठ जी बिलकुल इसके विपरीत थे। उनका कहना था कि जो काम अपने हाथ से हो सकता है पण्डित आदि बुलाने से क्या लाभ ?

पर सेठानी जी पूजा आदि खूब करती थी। हर त्यौहार पर पुरोहित जी को बुलाती थी। लेकिन पति जी के डर से पुरोहित को कभी भी निशा के वर के लिए संकेत न करती थी।

एक रात ऐसे ही बातों बातों में सेठानी बोली। चार वर्ष से निरंतर आप निशा के लिए वर की खोज कर रहे हैं। पुरोहित द्वारा दो सप्ताह में काम हो जाता।

सेठ जी भी बहुत निराश हो चुके थे, उन्हें निशा के योग्य कोई वर दिखाई भी न देता था। वे बोले—'तो रामदयाल (पुरोहित) को कहती क्यों नहीं ?'

'आप नाराज न हो जाँय ।'

'मैं कभी आगे भी नाराज हुआ हूँ ।'

'तो कल बुला कर कह दूँ ।'

'तुम्हारी इच्छा ?'

'अगर तुम कहो तो ?'

'तुम अगर ठीक समझती हो तो कह देना ।'

'अच्छा मैं प्रातः ही पुरोहित जी को बुलाऊँगी । मेरी निशा जैसी आज्ञाकारिणी तथा सुन्दर है वैसा ही मैं दामाद चाहती हूँ ।'

'अच्छा अब सो जाओ ।'

'सेठानी जी भविष्य के मनसूबे बाँधती हुई करवटें बदलने लगीं ।

प्रातःकाल होते ही सेठजी अपनी दुकान पर चले गये । इधर सेठानी जी ने पुरोहित को बुलाने के लिए दीपक को भेजा । सारी रात शायद सेठानी जी ने इन्हीं बातों में बिताई हो । कब सुबह हो और वे पुरोहित को बुलाने भेजें ।

पुरोहित जी का तो यह काम ही था । सुबह सूचना पाते ही दीपक के साथ उठ कर चल दिये ।

'आइए, बैठिए, पुरोहित जी ।'

'आज कैसे याद किया बहू ! मैं तो आने ही वाला था कि दीपक पहुँच गया ।'

'पुरोहित जी ! आप जानते हैं निशा अब बड़ी हो चुकी है और अब उसके हाथ पीले....।'

'वह तो पण्डितानी जी भी कह रही थीं कि अभी तक निशा के विवाह की बात नहीं चली । क्या बात है ? लड़की सयानी हो गई है । मैं खुद ही कहने वाला था पर बाबू जी के विचार तो जरा........।'

'ठीक कहते हो पण्डित जी, पर वंश की मर्यादा कोई थोड़े ही तोड़ देता है ।'

'जब तक मैं हूँ तब तक तो मैं नहीं करने दूँगी। मेरे मरने के बाद·······।'

'राम-राम कहो बहू जी, ऐसी अशुभ बात क्यों करती हो अभी सब बच्चे हैं। कौन पढ़ाये-लिखायेगा।'

'हाँ, तो फिर लड़के की खोज तुम्हें जल्दी करनी है पंडितजी।'

'लड़कों की क्या कमी है बाबू जी—लड़का पढ़ा-लिखा हो, सुशील हो।'

'बिटिया रानी कितना पढ़ी हैं?'

'वह अब चौदहवीं में पढ़ रही है।'

'तो फिर लड़का सोलहवीं पास होना चाहिए, ठीक है न बहू जी?'

'और क्या? दो क्लास ज्यादा तो होना ही चाहिये।'

'अजी, ऐसा ही लड़का खोज करूँगा। 'आप याद करेंगी बहू जी?'

हाँ जब लड़की पढ़ी-लिखी है, सुन्दर हैं तो लड़का भी अच्छा ही होना चाहिये।'

'यह भी बहू कोई कहने की बात है। खुद सब जानता हूँ।'

'घर जायदाद, सब कुछ अच्छा है। देने में हम कमी भी नहीं करेंगी।'

'वह तो बहू जी मैं जानता हूँ, रामजी की कृपा से किस बात की कमी है।'

यह तो तुम्हें सब मालूम ही है। मैं चाहती हूँ इसी वर्ष निशा का विवाह हो जाय। फिर आगे दूसरी भी तो बैठी है।'

'मैं इसी सप्ताह में बिटिया के लिये वर खोज दूँगा। बहू जी, आप चिन्ता न करिए।'

'मेरी सबसे यही अच्छी लड़की है। पुरोहित जी, कभी नौकरानी

नहीं रखी, वही सब काम करा लेती है। मधु और सुमन तो ऐसी है कि क्या बताऊँ।'

'आप चिन्ता न करिए बहूजी, मैं आपको कभी कहने का अवसर न दूँगा।'

'हाँ एक बात तो याद भी नहीं रही पुरोहित जी?'

'वह क्या?'

'जन्मकुण्डली अवश्य लेते आइएगा।' बाबूजी तो इन बातों पर विश्वास नहीं करते। पर मैं तो शुभ-अशुभ का विचार करके ही कोई काम करती हूँ।'

'बहू जी! अँगरेजी पढ़कर सब पश्चिमी सभ्यता अपनाकर ऐसे होते जाते हैं। मेरा लड़का ही खुद मुझे पढ़ाता है। क्या कहा जाय?'

'पण्डित जी! अब सब भार आपके सिर पर है।'

'मैं कह तो रहा हूँ बहू जी, आप चिन्ता न करें, सब भगवान ठीक कर देंगे।'

पण्डित जी बहू से सभी बातें करके वहाँ से विदा हो गये और मन ही मन अपनी कही हुई बातों के अनुसार कार्य-क्रम बनाने लगे।

× × × ×

'आज कैसे भूल पड़े पंडित जी?' सेठ गंगाराम जी ने पूछा—

'आप को एक शुभ समाचार सुनाने आया हूँ सेठ जी?'

'अच्छा।'

'मैंने राकेश के लिए बड़ी सुन्दर लड़की देखी है। बड़ी होनहार, सुशील, पढ़ी-लिखी और चाँद जैसी सुन्दर है।'

'यह तो बहुत खुशी की बात है। मुझे खुद राकेश के विवाह की चिन्ता है। वह भी अब सयाना हो चुका है तथा मेरी भी वृद्धावस्था है। बहू का शुभ आगमन तो देख लूँ।

'आप से भी अधिक मुझे चिन्ता है सेठ जी, मैं तो रात-दिन यही सोचा करता हूँ।'

यह सुन कर सेठ जी की धर्म पत्नी सरस्वती जी भी बाहर आ गई और तुरन्त ही बोल उठीं—

'कहाँ लड़की देखी है मुझे बताइए पंडित जी ! मैं भी तो जानूँ, कौन है वह जिसकी चर्चा का बखान आप कर रहे हैं।'

'यहीं शहर की ही लड़की है, पढ़ी-लिखी सुयोग्य है।'

'तब तो और भी अच्छा है। कहीं दूर भी हमको न जाना होगा। भले-बुरे का पता भी आसानी से चल जायेगा।

'मैं कोई भोला हूँ बहूजी, लड़की देखो तो और भी दिल खुश हो जाय; वह तो सर्व गुण सम्पन्न देवी स्वरूपा है।'

'लड़की देख सकते हैं बहू जी ?'

'आजकल तो सब चलता है बहू जी ? आप फोटो कहिए, तो वह ला दूं। स्वयं सेठ जी जाकर देख सकते हैं।'

'मैं नहीं जाऊँगा। आज मैं जाऊँगा कल मेरी लड़की को कोई देखने आयगा। औरतों के काम औरतें ही जाने।'

'मैं तो जाऊँगी।'

'हाँ बहू जी, देखना तो अच्छा ही होता है पहले ही दिल मजबूत कर लेना चाहिए, सभी कुछ जान-समझ कर ठीक कर लेना चाहिए। फिर वह लोग तो किसी प्रकार का इनकार करते नहीं है। एक नहीं बीस बार देखो।'

'देखो पंडित जी—-'लेने-देने की हम को भूख नहीं है। लड़की सुन्दर हो, पढ़ी-लिखी हो।'

'बहू जी ! लेने-देने की तो बात न कहिए ; सेठ घनश्याम जी को यहाँ कौन नहीं जानता। फिर उनकी यह पहली लड़की का विवाह है। लड़की बी० ए० में पढ़ रही है, यकदम लक्ष्मी जैसी है।'

'क्या कहा ? बी० ए० में पढ़ती है ?'

'क्यों, क्या बात हो गई बहू जी !'

'लड़की बहुत ज्यादा पढ़ी है। पंडित जी इतनी पढ़ी-लिखी लड़कियाँ कहाँ सेवा करती हैं। वह तो फैशन में ही मस्त रहती हैं। वह अपने सामने किसी को कहाँ कुछ समझती हैं।'

'ऐसी बात न कहो बहू जी ! लड़की बहुत सीधी है, देखेंगी तो मन प्रसन्न हो जायगा। जिस घर वह देवी जायगी, घर स्वर्ग बन जायगा।'

'चुप क्यों हो गई बहू जी, आप जाकर देख आयें न ?'

'पंडित जी, मैं कल ही बताऊँगी। मेरा लड़का आ जाय, वह तो शायद ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की पसन्द नहीं करता।'

'कोई बात नहीं बहू जी, यहाँ नहीं तो और कहीं सही, कहीं लड़कियों की कमी है। पर एक बात कहूँगा बहू जी, मुझे भी दस वर्ष घनश्याम के घर आते-जाते हो गये हैं। लड़की ऐसी मैंने कभी देखी नहीं।'

'क्या बातें हो रही हैं।' अन्दर आते ही राकेश ने पूछा—

'तुम्हारे ही विवाह की बातें हो रही थी बेटा ! कहो, तुम्हारी क्या इच्छा है। सेठ घनश्याम जी को तो जानते ही हो, उन्हीं की बड़ी लड़की है।'

राकेश बोला—'मैं अभी विवाह नहीं करूँगा माँ जी—

'तो क्या बूढ़े होकर करोगे।' माँ ने कहा—

'तो मुझसे पूछने की जरूरत ही क्या थी, जो दिल में आये, कर दो।' राकेश यह कहता हुआ अपने कमरे में चला गया।

'अच्छा बहू जी ! अब मैं चलता हूँ। कल आऊँगा। आप अच्छी तरह सब देख समझ लें।'

'हाँ पंडित जी, जहाँ भाग्य में होगा वहाँ ब्याह हो जायगा। लड़का सेठ जी का लाडला भी है। रात को सेठ जी से सलाह कर लूँ आप कल आकर जन्मकुण्डली ले जाइएगा।'

वहाँ से पुरोहित जी बिदा होकर अपने घर की ओर चल दिए।

सरस्वती जी उठ कर सेठ जी के कमरे में गई, और राकेश को भी नौकर के हाथ वहीं पर बुला भेजा।

३

✦✦✦✦✦✦

आज प्रथम बार शान्ता विवाह के बाद खुशी के आँसू बहा रही थी। वह बार-बार घड़ी की ओर देख रही थी, न जाने किसका इन्तजार कर रही थी, घड़ी ने टन् टन् करके बारह बजाये। शान्ता ने चरखा छोड़ा और बाहर गली पर आकर खड़ी हो गई।

'मम्मी ! मैं आ गया। राजू ने कहा—

शान्ता ने उसे उठाकर छाती से लगाया। 'क्यों, राजू बेटा ! क्या क्या पढ़ा है आज ?

'पहले खाना दो; मम्मी।'

आज शान्ता ने शुभ दिन देख कर राजू को स्कूल में दाखिल करवाया था। एक तरफ तो वह खुश थी कि मैं अपने मन की आशा पूरी करूँगी। राजू को डाक्टर बनाऊँगी दूसरी तरफ बिचारी रोती थी कि मैं पाँच घण्टा किस से बात करूँगी। उसके बिना तो दिन कटना कठिन हो जायगा।

माँ, बेटा दोनों रसोई में गये, राजू को थाली में खाना परोस कर दिया। खुद भी उसी के साथ खाने लगी।

'दादी कहाँ है मा !' राजू ने पूछा—

'उनको रात से ही बड़ी जोर का बुखार आ गया है । तुम्हारे पिता जी को भी कहला भेजा है। देखो……… ।'

बात काट कर राजू बोला—'दादी मर जाँय तो …. …. ।'

'चुप—ऐसी बातें नहीं करते । फिर तुम्हें कौन खिलायेगा ? कौन तुम्हें प्यार करेगा ?'

'मैं तो कहूँगा, दादी मर जाय, दादी मर जाय ।'

ऐसा कहोगेतो मैं फिर नहीं बोलूँगी, जाओ खाना भी नहीं खाती ।'

शान्ता खाना की थाली छोड़ कर अलग बैठ गई ।

'मैं भीं नहीं खाऊँगा ।' राजू बोला—

'फिर बोलो एसी बात करोगे ?'

अच्छा मम्मी; खाना खा लो, फिर नहीं कहूँगा ।' 'हाँ ऐसी बातें अच्छे बच्चे नहीं करते; अब तुम पढ़ जाओगे, फिर डाक्टर बनोगे ।'

'अम्मा, तुम कौन सी क्लास में पढ़ती हो ?'

'बेटा! जब तुम पढ़ोगे तब मैं भी तुम्हारे साथ पढ़ूँगी ।'

'अच्छा अम्मा; मैं पढ़ूँगा ।'

'हाय मैं मर गई ?'

बेटा देखो—'दादी गिर गईं ? उठो, उठो ।'

'हाय राम रे, मैं मर गई ।'

'कहाँ चोट लगी माता जी ?'

'यह मेरी हड्डी टूट गई रे ।'

शान्ता ने पूरे जोर से माता जी को उठा लिया । अन्दर बिस्तर पर लिटा कर उपचार करने लगी।

'राजू बेटा, जाओ, पिता जी को बुला लाओ । माता जी मैं अभी तेल गरम कर मलती हूँ ।'

'नहीं बहू ! हड्डी टूट गई ।'

'क्यों क्या हो गया अम्मा ? लो मैं डाक्टर भी बुला लाया हूँ ।

देखिये डाक्टर साहब जल्दी आराम आ जाय ।' अन्दर आकर भोलानाथ ने कहा—

'इनके घुटने की हड्डी टूट गई है, पलस्तर लगेगा ।'

'कैसे गिर गई अम्मा ?'

'बेटा ! ठण्ड लग रही थी, ऊपर धूप में बैठने गई थी । नीचे उतरने लगी कि पैर फिसल गया ।'

डाक्टर पलस्तर चढ़ा कर चला गया और शान्ता पाँव के पास के बैठ कर सास के पाँव दबाने लगी । शान्ता के पति माँ का सिर दबाने लगे ।

'राजू जाओ, बाहर जाकर खेलो ।' शान्ता बोली—

'नहीं माँ, मैं नहीं खेलूँगा ।'

'शान्ता उठो और जाकर गरम-गरम दूध ले आओ ।'

'दो ही मिनट में शान्ता दूध गरम करके ले आई ! दोनों ने मिल कर माता जी को उठाकर दूध पिलाया । पुनः माता जी को विस्तर पर लिटा कर उन्हीं के पास वह दोनों बैठ गये ।

'बेटा ! अब मैं न बचूँगी, मेरा आखिरी समय है ।' माँ ने आँसू बहाते हुए कहा—

'राम-राम कहो अम्मा ! अभी तो तुम्हें राजू का विवाह भी देखना है, तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी । तुम कोई फिक्र न करो, कुछ सोने की कोशिश करो । नींद आ जाने पर दर्द कुछ कम हो जायगा । सिर का दर्द भी हलका हो जायगा । मैं अभी अँगीठी गरम करके सेंक करता हूँ, आराम हो जायगा । घबड़ाओ नहीं माँ ।'

माँ कुछ देर सोचते-सोचते निद्रा देवी की गोद में चली गयी ।

४

‘मिठाई खिलाओ भैया !’

‘क्यों ? किस बात की रेखा ?’

‘अच्छा ! अच्छा ! बड़े ही भोले बनते हो। अब कहते हो किस बात की ?’

‘बताओगी भी तो, या ऐसे ही कहती रहोगी।’

‘हाँ, हाँ, तुम तो रोटी को भी चोची कहते हो। अब मिठाई खिलानी पड़ रही है न। तभी तो............।’

‘अरे भई ! बताओ तो सही।’ राकेश बोला—

रेखा—तुम्हारी शादी हो रही है।

राकेश—‘कहाँ पर?’

‘क्या तुम्हें नहीं मालूम ?’

‘नहीं।’

‘झूठ बोलते हो।’

‘सत्य कह रहा हूँ रेखा।’

‘निशा को जानते हो जो कालेज पढ़ने जाती है।’

‘हाँ जानता हूँ।’

‘वह बी० ए० में पढ़ रही है। उसी के साथ व्याह होगा।’

परन्तु मैं तो मैट्रिक में ही............।’

राकेश बात पूरी कह भी न पाया था कि रेखा ने बात काट दी और कहा—‘क्या हुआ इसमें ?’

राकेश—तुम सोचो रेखा कि मैं मैट्रिक में हूँ, वह बी० ए० में हैं। मैं तो यह सम्बन्ध ठीक नहीं समझता।'

'क्या हुआ? आजकल सब कहीं यह हो रहा है। तुम तो मैट्रिक पास हो, जो लोग बिलकुल ही नहीं पढ़े हैं' उनकी औरतें भी बी० ए० पास हैं।' रेखा ने कहा—

राकेश—'हों, पर मैं ऐसा ठीक नहीं समझता।'

रेखा—'भाभी पिक्चर देखा है?'

'हाँ!' राकेश ने कहा—

रेखा—'शान्ता भी तो बी० ए० पास थी।'

राकेश—'उसकी नकल कोई नहीं कर सकता।'

रेखा—'आप तो हमेशा यहीं बातें कहते रहते हैं।'

राकेश—वह तो हमेशा प्रथम आती है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।

रेखा—सारा दिन तो घूमते हो। जानोगे क्यों नहीं?

राकेश—ऐसी बात नहीं रेखा; उस दिन मेरा दोस्त जो होस्टल में रहता है, न जाने उसे क्या कह दिया कि वह सीधे प्रिंसपल के पास पहुंची। उसी ने मुझे सब कुछ बताया है।'

'उसे कैसे मालूम हुआ।' रेखा पूछने लगीं।

राकेश—उसकी बहिन इसी के साथ पढ़ती है।

रेखा—तो वह इसकी बहिन से कह देती।

राकेश—जैसा भाई वैसी बहिन।

रेखा—नहीं भैया! तुम मान जाओ। वह मुझे पढ़ायेंगीं।

राकेश—अच्छा, इसीलिए तुम शिफारिश कर रही हो।

रेखा—मैं तो उन्हें मां, भाभी, बहिन सब कुछ मानूंगी। कभी काम नहीं करने दूंगी।

राकेश—हाँ, हाँ, तुम सब कर लेना। जाओ कुछ ले तो आओ खाने को।

रेखा—पहले मुझे मिठाई खिलाओ।

राकेश—जाओगी, कि मार खाओगी, बड़ी आई है खाने वाली।

रेखा............मैं तो पहले खाऊँगी, बाद में खिलाऊँगी।

राकेश नम्रता से बोला—बड़ी अच्छी है रेखा, जाओ मुझे भूख लगी है।

रेखा—अच्छा फिर खिलाओगे न ?

राकेश—हाँ, खिलाऊँगा, जाओ तो।

राकेश खा-पीकर अपने कमरे में गया। आज वह बारबार इसी बात को सोच रहा था कि अब वह क्या करे, किस प्रकार इस परिस्थिति का सामना करे। वह कभी-कभी मन ही मन सोचता कि इस युग में अधिकतर पढ़ी-लिखी लड़कियाँ खराब होती हैं। कोई सौ में एकाध अच्छी होती हैं। जीवन भर का सम्बन्ध होना है, क्या करूँ। इसी बीच में उसके पिता ने आवाज दी।

'बेटा राकेश ! नीचे आना।'

'अभी आया पिता जी।'

'बेटा ! तुम्हारी जन्मकुण्डली घनश्याम जी की लड़की से ठीक मिल जाती है। यह रहा उसका फोटो, चाहो तो जाकर देख भी आओ।

'पिता जी मैं नहीं जाउँगा।

'क्यों ? क्या बात है बेटा ?'

'मैं अभी शादी नहीं करना चाहता।'

'बेटा राकेश ! मेरी अवस्था तुम जानते ही हो, दिन पर दिन स्वास्थ्य गिरता जा रहा है, अंतिम समय में मैं चाहता हूँ—कि तुम्हारा ब्याह देख लूँ। बहू मेरे जीते जी घर आ जाय।'

'जैसा भी आप ठीक समझते हों आपकी आज्ञा मुझे सब स्वीकार है।'

'जीते रहो बेटा, जैसा नाम है वैसा ही तुममें गुण है।'

'राकेश अपने कमरे में चला आया और सोचने लगा कि मां-बाप की आज्ञा मानना सबसे बड़ा धर्म है। राम ने चौदह वर्ष बनवास पितृ-आज्ञा में काट दिए, श्रवण ने मां-बाप के पीछे जीवन बलिदान कर दिया। अगर मेरे मन का विवाह न हुआ तो मैं समझूंगा कि मैंने भी मां-बाप का कहना माना है। यही सोच रहा था कि रेखा ने पुकारा—

'भैया ! भैया!'

'आओ रेखा।'

'छिपो नहीं पहले मुझे मिठाई खिलाओ।'

'चलो आज तुम्हें पिक्चर दिखाऊँ और फिर दोनों पिक्चर देखने चले गए।

५

++++++

शान्ता की सास अब आगे से बहुत कुछ ठीक है। पर अभी कमजोरी इतनी है कि बिना लाठी का सहारा लिए वह चल नहीं सकती थी। जब तक माता जी बीमार रहीं। शान्ता को सेवा अवश्य करनी पड़ती थी पर वह तो कोई पूछने वाला न था कि सूत कात लिया, खाना बनाया है या नहीं, सब्जी तो नहीं जली। परन्तु अब फिर वही बात शूरू हो गई। बुढ़िया लाठी का सहारा ले सारा दिन इधर-उधर घूमा करती थी। सदैव इसी ताक में रहती थी कि कोई ऐसी बात मिले तो

बहू के कान खींचूं। शान्ता की छोटी बहिन नीरू का विवाह हुआ। उसकी शादी में शान्ता को ग्यारह सेर मिठाई मिली। जिसमें बरफी, लड्डू, रसगुल्ला आदि सब मिठाइयां थी। शान्ता ने वह मिठाई मुहल्ले भर में बांटी। रसगुल्ला बहुत कम थे। वह पूरे-पूरे नहीं आए। दो-चार पहले ही राजू ने खा डाले थे। जब उसने शेष मिठाई सास के सामने रखा तो सास रानी ने पाँव की ठोकर से सब मिठाई आंगन में फैला दी। आंख मटकाती हुई बोली—

'चुड़ैल, डायन, अब मेरी याद आई है, जब उसमें एक भी रस-गुल्ला नहीं बचा। क्या मैं बची-खुची मिठाई लेने वाली हूँ। चली जा मेरे सामने से, नहीं तो अभी.......... ।'

शान्ता ने रोते हुए सब मिठाई उठाकर कहा, 'माता जी, नाराज न हो, मिठाई कम ही थी, थोड़ी सी ही राजू ने खा ली है और मुहल्ला भर में बँटी है।'

'मैं कुछ नहीं सुनना चाहती, मुझे तो मेरी पांच सेर मिठाई चाहिए, चाह जहाँ से लाकर दो।'

शान्ता ने राजू को बाजार भेजकर मिठाई मंगाया और सबकी सब मां के पास जाकर रख दिया। उसने अपने राजू के लिए भी मिठाई न बचा रखी। वह दुःख में कुछ कह न सकी और राजू को-फुसलाकर चुप कर दिया और जब राजू रोने लगा तो उसने कहा कि—'आज संध्या के समय मामा के घर चलकर खूब मिठाई खायेंगे।'

शान्ता ने राजू को गोद में उठा लिया और आंखों में आँसू भर अपने कमरे में चली आई। राजू को जब वह सुलाने लगी तो उसने मचल कर कहा—'मैं नहीं सोऊंगा मम्मी।'

'क्यों राजू ? आज क्यों नहीं सोएगा ?'

'हम मामा के घर जाएगें। खूब मिठाई खाएगें।'

'अच्छा चलना, संध्या के समय चलेंगे। अभी मैं कुछ घर का काम कर लूं।'

'तुम काम कर लो माँ और मैं बाहर खेलूँगा ।'

'वाह राजू खेलता रहेगा, यह तो नहीं कहता कि पढ़ता रहूंगा । मैं तो कहती थी राजू डाक्टर बनेगा । अब कहूंगी राजू सबको पानी पिलाएगा ।'

हूँ, ऊँ, ऊँ, मैं तो सबको डाक्टर बनकर सुई लगाऊँगा । कार पर बैठकर सब के घर जाऊँगा ।'

'बिना पढ़े ही डाक्टर बन जाओगे न ?'

'नहीं मम्मी, अब मैं खूब पढ़ता हूँ यह देखो तो, मास्टर साहब ने मुझे कितनी अच्छी किताब इनाम में दी है । भागकर अपने बस्ते में से एक किताब निकाल कर ले आया और माँ को दिखाया ।

राजू की बात सुनकर वह मन ही मन बहुत ही प्रसन्न हुई और भगवान से राजू के भविष्य के लिए प्रार्थना करने लगी ।

वह न जाने राजू के बारे में कितने ऊँचे-ऊँचे सपने देखती थी । वह उसे एक बहुत बड़ा आदमी बनाना चाहती थी । जब वह अपने मन में कल्पनाएँ कर रही थी उसी समय राजू ने कहा—'अच्छा अम्मा, यह तो बताओ पिता जी घर पर क्यों नहीं आते ?'

'पगला लड़का, घर पर रहेंगे तो खाना कैसे खाओगे । उनका काम ही इतना है कि वह खतम नहीं हो पाता ।'

'अगर दादी मर गई तो·········· ।'

'चुप रह । मैं तुमसे कभी नहीं बोलूंगी शैतान कहीं का ।'

'राजू उठकर शान्ता की पीठ पर चढ़ कर बैठ गया । और बोला—बोलोगी कि नहीं ?'

'नहीं बोलूंगी ?'

'अब बताओ, बोलोगी कि नहीं ,' राजू माँ के कान पकड़कर बोला—

'फिर तुम गाली निकालोगे ?' माँ ने पूछा—

'मैंने कब गाली दी है।' राजू कुछ रुआंसे मुख से बोला—

'यह गाली नहीं तो फिर क्या था।' मां ने कहा—

'अच्छा अब कभी न कहूँगा। अब तो बोलोगी न ?' राजू बड़े प्यार से बोला—

'हाँ बोलूँगी।' अब तुम अपना पाठ पढ़ो और मैं अन्दर जाती हूँ।'

\+ + +

निशा और राकेश का विवाह बड़ी धूम-धाम से हुआ। दोनों ओर की धूम-धाम बड़ी अच्छी थी। निशा के बाप ने दिल खोल कर रुपया बरातियों को दिया। निशा दुल्हन बनकर अपने घर में पहुँच गई। राकेश ने पहली रात तो निशा के साथ काटी। परन्तु फिर उसने रात की ड्यूटी ले ली। दिन भर आकर सोता रहता। दिल में सदैव उसे यही काँटा चुभा रहता कि कहीं निशा यह न कह दे कि तुम तो मैट्रिक ही हो और मैं बी० ए० हूँ। दो-चार दिन बाद निशा को सेठ जी बिदा करा ले गए ! अभी वहाँ एक महीना ही हुआ था कि निशा की ननद और सास सरस्वती उसे लेने के लिए आ गईं। माँ ने रोती हुई निशा को उनके साथ विदा किया। चलते समय निशा की माँ ने कहा—'अब निशा पर हमारा अधिकार ही क्या है ? जब आप चाहें तभी ले जा सकती हैं। पर मेरी बेटी अनजान है, इसे प्यार से समझाइयेगा। अभी तक यह पढ़ती ही रही है ! काम-काज में अधिक तेज नहीं है। धीरे-धीरे अभ्यस्त हो जायगी।'

'वाह, आप भी कैसी बातें करती हैं। पहले दिन वहाँ जो बहूरानी ने खाना बनाया आज तक सब को याद है। रेखा के पिता जी तो दूसरे ही दिन भेजने वाले थे। पर मैंने कहा कुछ दिन वहाँ अभी रह लेने दो।

बाहर तांगा खड़ा था। रेखा, निशा सरस्वती तीनों बैठ गईं, जाती बार निशा, रेखा, सरस्वती तीनों को सेठ जी ने सामान आदि देकर आदर के साथ विदा किया।

निशा के अपने मैके चले जाने पर पुनः राकेश ने सुबह की ड्यूटी ले ली थी परन्तु जैसे ही निशा घर पहुँची कि फिर वह रात को ड्यूटी पर जाने लगा। एक दिन दोपहर को निशा राकेश के ऊपर पंखा झल रही थी कि राकेश ने पानी माँगा। निशा ने उठकर सुराही से एक गिलास पानी पीने के लिए दिया। राकेश पानी पीकर वहीं लेट गया। परन्तु आज उसकी आँखों से नींद उड़ गई थी। निशा पहले की तरह पंखा झलती रही। कुछ समय पश्चात राकेश ने निशा की ओर देखकर कहा—'तुम थक गई होगी निशा! अब रहने दो पंखा झलने को।'

'मैं कभी थक सकती हूँ ? आप तो रात भर काम करते हैं तो नहीं थकते और मैं थोड़ी देर पंखा झलने में थक जाऊँगी ?'

राकेश चुप हो गया क्या उत्तर देता। आँखें खोलकर यकटक निशा की ओर देखता रहा। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह कुछ बोलने में भी अपने को असमर्थ पा रहा हो।

निशा ने लज्जा से मुंह नीचे झुका लिया, और वह कुछ नहीं बोली, कहती भी क्या। परन्तु खामोशी भंग करते हुए राकेश ने निशा से पूछा—'निशा ! तुम मुझसे कितना प्यार करती हो ?'

'जितना मीरा कृष्ण से, पार्वती शंकर से, लक्ष्मी विष्णु से प्रेम करती थीं।'

'परन्तु मैं तो तुम्हें नहीं चाहता।' राकेश बोला—

'यह मेरा अभाग्य ही है। मुझमें ऐसा कौन सा अवगुण है जिससे आप मुझे नहीं चाहते ?'

'निशा ! तुम तो नाराज हो गई हो ! मैं तुम्हारे योग्य न था, तुमसे हर बात में कम हूँ तुम्हारी समता का भी तो नहीं हूँ।'

'अयोग्य तो मैं हूँ स्वामी !' निशा ने कहा—

निशा ! तुम ग्रेजुएट हो।'

'कौन कहता है ? सब गलत कहते हैं कि मैं बी० ए० हूँ।'

'वाह निशा, मेरे लिए तुम अपनी डिग्री भी दूर कर रही हो।'

'नहीं प्रिय, झूठ बोलना पाप होता है। मैं बी० ए० अवश्य हूँ अगर मुझे मालूम होता कि मेरे बी० ए० पढ़ने से मुझे पति देव के हृदय में स्थान नहीं मिलेगा तो मैं कभी भी बी० ए० न करती। मैं आपके सामने अभी अपने सार्टीफिकेट जलाए देती हूँ। अब उनका मेरे जीवन में महत्व ही क्या ? यह कह कर निशा अपने कमरे में चली गई और अपने सार्टीफिकेट निकाल कर ले आई। वह सार्टीफिकेट फाड़ने ही वाली थी कि राकेश ने उठकर उसके हाथ पकड़ लिए। वह सार्टीफिकेट अपने हाथ में लेता हुआ बोला—'निशा क्या पागलपन करती हो, मैं तो तुमसे मजाक में ही कह रहा था।'

रेखा ने मुझे बताया है कि मेरे यहाँ आने पर आप रात की ड्यूटी ले लेते हैं। मुझसे दूर रहने की सदैव आप कोशिश करते हैं।'

बात आगे न बढ़े अतएव तुरन्त राकेश बोला—'रेखा तो बड़ी ही पागल है। समयानुसार ड्यूटी करनी पड़ती है; कभी रात को, तो कभी दिन को।'

'मेरे यहाँ रहने पर तो आप कभी भी दिन को ड्यूटी पर नहीं गये।' निशा ने कहा—

राकेश थोड़ी देर मौन रहा और फिर बोला—'हाँ ठीक है, पर कल से सुबह की ड्यूटी पर जाया करूँगा।'

आज निशा मन ही मन कुछ प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी। साधारण स्त्री-हृदय की भाँति चंचलतावश राकेश से उसने पूछा—'आपको मेरी सौगंध है, सच-सच बतलाइयेगा कि आप मुझे नहीं चाहते ?'

'पगली ! मैं तुम्हें उतना ही चाहता हूँ जितना साँप अपनी मणि को। मेरी भी वैसी ही दशा हो जाती है सोचते-सोचते जैसी एक मणिहीन साँप की होती है।' इतना कहते हुए राकेश ने बड़े प्रेम से

निशा को अपनी ओर खींच लिया और प्रेमातुर हो उसके बालों पर अपने हाथ फेरने लगा। निशा को आज महसूस हो रहा था कि उसे पति-प्रेम प्राप्त हुआ है। आज उसका हृदय पति-प्रेम को पाकर स्वर्ग-सुख का अनुभव कर रहा था। वह धीरे-धीरे अपनी विजय पर अपने को सराह रही थी। इसी बीच राकेश ने निशा से कहा—'आज हम लोग सिनेमा देखने चलेंगे।'

इसकी मौन स्वीकृति निशा ने राकेश को दे दी। संध्या समय दोनों सिनेमा देखने गये और अपने-अपने संसार में मस्त हो गये। दोनों ने यह अनुभव किया कि आज ही से उनका यह नया संसार शुरू हुआ है।

६

पाँच सेर मिठाई तो शान्ता की सास ने ले ली थी पर अभी एक सेर भी वह समाप्त न कर पाई थी कि अतिसार का रोग उसे हो गया। सारी मिठाई बाहर आ गई। अब वह चारपाई से उतर तक न सकती थी। भोलानाथ को दूकान से छुट्टी लेनी पड़ी। दोनों अपनी माँ की सेवा में संलग्न रहने लगे। अतिसार के दस्तों में इतनी बदबू आती थी कि कोई भी पास न आता था। अकेली शान्ता सब साफ करती थी। रात-रात भर वह सास के पास ही बैठी रहती। राजू अभी छोटा ही था। उसे भी समय-असमय डाक्टरों के पास भागना पड़ता था। शेष मिठाई से भी बदबू आने लगी थी। शान्ता ने उसे उठाकर बाहर फेंक

दिया। भोलानाथ की छुट्टी के दो महीने बीत गए पर अभी तक कुछ आराम नहीं आया। अगर दुकान ऐसे ही बन्द रहेगी तो खायेंगे कैसे ? यह सोच भोलानाथ शान्ता की मां को ले आया। उन्हें शान्ता के पास छोड़कर आप दूकान पर चला गया।

शान्ता की माँ की भी वृद्धावस्था थी। इसलिए वह मेहनत का काम तो कर न पातीं। केवल राजू को सम्भाल लिया करती थीं। इधर शान्ता रात को बारह से पहले कभी न सोती, प्रातः सूर्य निकलने से पहले ही रात को मैले भरे कपड़े उठाकर कुएँ पर चली जाती जो कि उनके घर से एक मील की दूरी पर था। घर के पास जो नल था उस पर कोई कपड़े धोने न देता था, क्योंकि अतिसार एक भयानक छूत का रोग होता है। कीटाणु बड़ी जल्दी हवा द्वारा फैल जाते हैं। वह बेचारी प्रतिदिन गन्दे कपड़ों को ले कुएँ पर साफ कर नहा-धोकर सूर्योदय के पहले ही घर पहुँच जाती थी। माँ अपनी लड़की को देख हैरान होती थी कि जो मेरी शान्ता सूर्य निकलने पर भी विस्तर न छोड़ती थी आज किस प्रकार सेवा कर रही है। हर समय कहती रहती थी—'शान्ता बेटी ! तुम्हें सेवा का मेवा मिलेगा।'

अब सास रानी भी शान्ता की सेवा को देखकर मन ही मन लज्जित हो रही थीं। रात को जब शान्ता सब काम को पूरा कर सास के पैर दबाने बैठती तो सास कहती—'बेटी ! तुम थक गयी होगी, जाओ सो जाओ।'

शान्ता बड़ी नम्रता से उत्तर देती—'नहीं मां जी ! अभी मुझे नींद नहीं आई।'

सास ने कहा—'बेटी ! मैंने तुम्हें बहुत बुरा-भला कहा है। बुढ़ापे में अक्सर ऐसा हो ही जाता है, उस सबको भूल जाना। अब मैं बचने की नहीं, मेरा अन्तिम समय है।'

'आप माता जी कैसी बातें कर रही हैं। बीमारी आती रहती है,

डाक्टर कह रहा था बड़ी जल्दी ठीक हो जायँगी। आप ने मुझे कभी कुछ कहा ही क्या है ? अगर कहा भी होगा तो मेरी गलती के सुधार के लिये ही तो कहा होगा।'

'भगवान तुम्हारी बड़ी उमर करे' फलो-फूलो, तुम्हें कभी कोई दुःख न हो। राजू कहाँ है ?

'वह सो रहा है माँ जी।'

'अच्छा, अब तुम भी आराम करो बहू।'

शान्ता वहीं पास में चारपाई के किनारे चटाई बिछाकर पड़ रहती और सदैव सास की सेवा का ध्यान रखती।

इस प्रकार शान्ता सात महीने अपनी सास की सेवा करती रही। पर कोई सुधार दिखाई न देता था। सास का मन रखने के लिये वह समय-समय पर कह देती थी कि डाक्टर कह रहा है, जल्दी ठीक हो जायँगी। परन्तु वास्तव में सभी डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। धीरे-धीरे कमजोरी के कारण सास जी में इतना भी साहस नहीं था कि वह बोल पाती या बैठ ही सकतीं। वह अब बिल्कुल लाचार हो चुकी थीं।

'कैसी तबियत है अम्मा जी !' भोलानाथ ने अन्दर प्रवेश करते हुए कहा—

'आपको कौन बुलाने गया था।' शान्ता ने पूछा—

'राजू गया था, क्या तुमने नहीं भेजा था।' भोलानाथ ने कहा—

'नहीं तो' और सास की ओर संकेत करके बोली, 'अब क्या किया जाय। माँ की हालत बहुत गिर गई है।'

'जो भगवान को स्वीकार होगा, वही होगा, उस पर अपना वस ही क्या हो सकता है ?'

अब उनकी आँख की ज्योति भी समाप्त हो चुकी है, अब आपको पहचान भी नहीं पाएँगी। बोलना भी बन्द हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अब वह चन्द मिनट की और मेहमान हैं। भोलानाथ ने

माँ के पैरों पर सिर झुकाया और प्रणाम किया। उसकी आँखों से टपाटप आँसू गिरने लगे। शान्ता से भी न रहा गया और एकदम से माँ की ओर देखकर रो पड़ी। माँ की अन्तिम विदाई का समय था। बुझते हुए दीपक की आखिरी लौ ही शेष थी जो हवा के मामूली झोंके में किसी समय बुझ सकता था। इसी करुणायुक्त वातावरण के समय माँ को एक हिचकी आई और उनके प्राण-पखेरू उड़ा ले गई। भोलानाथ और शान्ता वहीं पर दहाड़ मार कर रोने लगे। आस-पास के पड़ोसी भी रोना सुनकर आ गये। राजू की आँखों से भी अविराम गति से अश्रु प्रवाहित थे।

\+ + +

निशा भी अब अधिक दिन ससुराल में रहती थी, क्योंकि राकेश, और उसके पिताजी, एक दिन के लिए भी बहू को न भेजना चाहते थे! निशा सबसे पहले उठते ही अपने पति के चरणों में शीश झुकाती, फिर अपने ससुर तथा सास के पावों का स्पर्श करती। बाद में गृह-कार्य में लग जाती। रेखा उठती तो हैरान रहती कि भाभी जी नाश्ता तैयार किये बैठी हैं। रेखा मुंह-हाथ धोकर खाने को आ जाती। इधर निशा खाना बनाती तो रेखा कालिज जाने के लिए तैयार होती। खाना खाकर वह कालिज चली जाती। निशा सब कमरे साफ करती, सब चीजों को उचित स्थान पर रखती। राकेश की मेज पर पेन, दवात, कापी, किताब हर समय मौजूद रहती।

रेखा की किताबें पास की अलमारी में सजा कर रखती। निशा के यहाँ आने से पहले राकेश, रेखा को अक्सर डांट पड़ती कि तुम लोगों की किताबें सब कमरों में फैली रहती हैं। पर अब उसने आकर स्वर्ग-सा बना दिया था। राकेश प्रतिदिन लायब्रेरी से दो-चार उपन्यास ले आता और छुट्टी के समय पढ़ा करता था। इधर निशा भी जब कामों से छुट्टी पा जाती तो इन्हीं उपन्यासों में उलझ जाती।

एक रात निशा रेखा को पढ़ा रही थी । राकेश पास ही में बिस्तर पर लेटा हुआ था वह बोला—'निशा मुझे भी पढ़ाओगी ?'

मेरे में इतनी योग्यता कहां है ? हां जितना जानती हूँ । उतना अवश्य बता दूंगी ।'

'इसका मतलब है कि तुम मुझे पढ़ाना नहीं चाहतीं । क्योंकि जब मैं ग्रेजुएट बन जाऊँगा तो तुम कह तो नहीं सकोगी कि मैं ग्रेजुएट हूँ और आप मैट्रिक ।' राकेश ने हँसी में कहा—

इसका उत्तर रेखा ने दिया ।

'भाई साहब । आप हमेशा भाभी जी को बनाया करते हैं । उन्होंने कभी आज तक कहा भी है । बी० ए० की सार्टीफिकेट तो भाभी जी उसी दिन जला रहीं थीं जिस दिन आपने कहा था कि मैं मैट्रिक हूँ और तुम्हारी भाभी ग्रेजुएट फिर भाभी तो ऐसी देवी हैं कि कभी उनको किसी बात का घमंड है ही नहीं ।'

आपस में यह वादाविवाद चल ही रहा था कि बाहर से सेठजी की आवाज आई, उन्होंने कहा—रेखा, बेटी अब सो जाओ, दस कब के बज चुके हैं, सुबह उठना भी तो है । तुम्हारा इम्तहान भी तो है ।'

सेठजी की बात सुनकर सब सो गये । रेखा का दूसरे दिन टेस्ट था, वह आज कुछ पढ़ भी न पाई थी । निशा ने भी नहीं रोका, क्योंकि उसके दिल में राकेश भी बात बान के समान लग रही थी कि "मेरे ग्रेजुएट बनने पर तुम कह न सकोगी कि मैं ग्रेजुएट हूं और आप मैट्रिक ।'

निशा ने झटके से स्विच दबाकर बिजली बुझा दी और अपने विस्तर पर जाकर लेट गई । उसके हृदय में एक कचोटन-सी थी ।

'क्यों नाराज हो गई हो निशा ? राकेश ने पूछा—

नहीं, "नाराज ? क्यों होऊँगी ।' आगे कुछ और वह कहना चाहती थी पर उसका मन भर आया और रो उठी ।

'तुम तो रो रही हो निशा । मैंने तो मजाक में कह दिया था और तुम सत्य मान गईं । वास्तव में मेरी इच्छा अब पढ़ने की है, और मैं सोचता हूँ कि मेरी पढ़ाई से जितनी तुम प्रसन्न होगी उतना मैं भी नहीं हो सकता । तुम बड़ी भोली हो कि हँसी भी नहीं समझतीं ।'

'जब तक आप ग्रेजुएट नहीं बन जाएँगे । तब तक मैं अपने को वैसा ही समझूँगी जैसे मैं कुछ पढ़ी ही नहीं हूँ मैं सदैव आपसे कम ही रहना चाहती हूँ अधिक नहीं, मैं तो आपकी सेविका हूँ, वही स्थान मेरे लिये उचित है ।'

राकेश ने मन ही मन कुछ सोचा और फिर निशा से बिजली जलाने को कहा । निशा ने आज्ञा का पालन किया । राकेश उठकर एफ० ए० का कोर्स देखने लगा । ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अब आगे पढ़कर ही मानेगा ।

\+ \+ \+

'निशा एफ० ए० का कोर्स विशेष कठिन तो है नहीं, आसानी से मैं पास कर सकता हूँ ।'

'मैं समझती हूँ जितनी आप में योग्यता है उतनी मेरे में नहीं, केवल अन्तर इतना है कि मेरे पास कागज का प्रमाण है आपके पास वह नहीं है । आप आरम्भ करिए जो कठिनाई पड़ेगी वह भी दूर हो जायगी ।'

'अच्छा ! यह बताओ कि अब बुरा तो नहीं मानोगी ।'

'कभी नहीं ।'

निशा अपने उमड़ते हुए स्नेह को न सम्हाल सकी और वह पति के पास जाकर उसकी सेवा में लग गई । वह राकेश के पास बैठकर उसका सिर दबाने लगी । कुछ देर पश्चात राकेश ने कहा—'अब सो जाओ, समय काफी हो चुका है । अब मैं कल से ही पढ़ना शुरू कर

दूंगा। इसी वर्ष इण्टर का फार्म भर दूंगा। अभी फार्म भरने का समय भी है।

समय की गति तथा परिस्थितियों ने राकेश को प्रेरित किया और पढ़ने के लिए कटिबद्ध हो गया। उसने फार्म भर दिया। उसका मन अब एक मात्र पढ़ने में एकाग्र था। वह अब आगे पढ़कर ही मानेगा। निशा भी अब बड़ी प्रसन्न थी। उसकी खुशी का वारापार न था। उसके हृदय में जो भावनाएँ उठा करती थीं। पति के आगे बढ़ने पर कौन स्त्री प्रसन्न न होगी, वह पूछता कि 'बड़ी प्रसन्न दीखती हो निशा ?'

निशा विह्वल हृदय से कह उठती, 'भगवान ने मेरी सुन ली, मेरे देवता ने प्रगति-पथ अपना लिया, अब और क्या चाहिए मुझे।'

भगवान आपके स्वप्न पूरा करे, मेरी भगवान से यही प्रार्थना है।' बातें करते-करते दोनों स्वप्न-संसार में विचरण करने लगे।

७

अब सुमन नवमीं कक्षा में पहुँच गई थी निशा के रहने पर वह उसे पढ़ा दिया करती थी। सुमन सदैव क्लास में प्रथम आती थी पर अब निशा के न रहने पर सुमन कोई भी डिवीजन प्राप्त न कर सकी केवल सफलता प्राप्त के अंक ही प्राप्त कर सकी। अब वह पिता जी से ट्यूशन के लिए कहने लगी तो पिता जी कहते, 'बेटी निशा ने भी तो बी० ए० पास किया है। उसने तो ट्यूशन के लिए कभी नहीं कहा

था, यह आदत बुरी होती है। इस वर्ष ऐसी ही चलने दो। अगले वर्ष परीक्षा बोर्ड की होगी उस समय ट्यूशन रख देगें।'

'इस वर्ष अगर मैं फेल हो गई तो ?' सुमन रोती हुई बोली—

'अच्छा, ऊपर जो लड़का रहता है वह बी० ए० में पढ़ रहा है उसी से आज बात करूँगा कि वह तुम्हें पढ़ा दिया करे।'

'सुमन प्रसन्न होकर बोली—'अवश्य बात कीजिएगा।'

'सेठ जी का मकान बहुत बड़ा था। छत पर एक कमरा था, उसको उन्होंने किराए पर दे रखा था, उस कमरे में अकेला गांव का लड़का मधुप रहता था। सेठ जी ने मधुप से इस बात को पहले कह रखा था कि मैं अधिक दोस्तों को आने-जाने नहीं दूंगा। अगर तुम्हारा चाल-चलन ठीक न हुआ तो मैं तुम्हें भी निकाल दूंगा। मधुप विचारा एक गांव का भोला-भाला लड़का था जिसके पिता गांव में एक स्कूल के मास्टर थे. गांव में दसवीं तक तो स्कूल था पर आगे नहीं, मधुप की पढ़ने की बड़ा इच्छा थी। इसलिए वह शहर चला आया था। बहुत खोज करने पर भी जव मकान न मिला तो मधुप ने सेठ जी की सभी बातें स्वीकार कर लीं और उन्हीं के मकान पर रहकर पढ़ाई शुरू की।

दूसरे दिन सुमन ने पिता जी पूछा—'आपने बात की थी ?'

सेठ जी बोले—'मुझे तो याद नहीं रहा, तुम खुद ही चली जाओ न।'

सुमन बोली—'अच्छा, अभी जाती हूँ।'

सेठ जी ने कहा—'जल्दी चली आना।' सुमन छत पर गई। उस समय मधुप एक चित्र बनाने में लगा हुआ था। थोड़ी देर तक सुमन खड़ी रही। जब मधुप का ध्यान न हटा तो सुमन बोली—'आप से मैं कुछ बात करना चाहती हूँ।'

'मधुप यकाएक चौंक पड़ा और नमस्ते करके सुमन से बोला,'बैठिए।

क्षमा करिएगा। मैं जरा काम में लगा हुआ था। इसलिए ध्यान आपकी ओर नहीं गया।'

सुमन बोली—'यह कोई नई बात नहीं, प्रत्येक ही विद्यार्थी को अर्जुन की तरह अपने काम में लीन होना चाहिए कि उसे चारों ओर का ज्ञान भी न रहे। हाँ जो मैं बात करने आई हूँ वह यह है कि आप ट्यूशन करेंगे ?'

'कहाँ ?' मधुप ने पूछा—

सुमन बोली—'मुझे ही पढ़ाना है।'

'मेरे पास समय होता तो मैं अवश्य कर लेता, आप तो योग्य हैं आपको ट्यूशन की आवश्यकता ही नहीं, जो आपको प्रश्न न समझ में आए वह कभी-कभी पूछ लिया कीजिएगा।'

'एक-दो महीना भी नहीं ?' सुमन ने पूछा—

'एक-दो महीना क्या, एक-दो दिन भी नहीं हो सकेगा।' मधुप ने पुनः कहा, 'मैं अपने को अभी किसी बंधन में नहीं डालना चाहता। हाँ, जो आप पूछना चाहती हैं। वह पूछ लिया करियेगा।'

'अच्छा, नमस्ते।'

'बैठिये तो, चाय पीजिये। अभी मँगवा रहा हूँ। मैं घर में तो खाना भी कभी नहीं बनाता हूँ।'

'नहीं, मेरा घर ही कौन दूर है, माफ करियेगा आपका इतना समय नष्ट कर दिया।'

'कोई बात नहीं, आपको जो भी मुश्किल मालूम हो, निःसंकोच पूछ जाइयेगा; मैं बता दूँगा। पर ट्यूशन पैसे लेकर की जाती है, आदमी को नौकर बनना पड़ता है, वह मुझसे न हो सकेगा।' मधुप ने कहा—

'अच्छा !' ठंढी साँस खींचकर सुमन बोली—

बिना किसी प्रकार की ओर ध्यान किये वह नीचे चली आई। पिता जी उस समय दुकान पर जा चुके थे। वह अपने कमरे में आकर रोने लगी। क्या इस वर्ष में मेरी कोई डिवीजन नहीं आयेगी? मैं अब कमजोर लड़कियों में गिनी जाऊँगी? इससे तो अच्छा है इम्तहान ही न दूँ। यह मन में सोच ही रही थी कि इतने में मधु अन्दर आई और बोली—'सुमन दीदी! दीदी आई है।'

सुमन ने जल्दी से आँखे पोंछी और अपनी सखी को लेकर बगीचे में चली गई।

\+ \+ \+

समय बड़ी जल्दी बीत जाता है। अब राजू आठवीं में पढ़ रहा है। वह प्रतिवर्ष अपनी कक्षा में प्रथम रहा है इसलिये उसे फीस नहीं देनी पड़ती। इधर राजू के तीन भाई और पैदा हो गए हैं। परिवार बढ़ गया तो राजू के पिता ने राजू का पढ़ना बन्द कर देना चाहा। पर शान्ता न मानी। इस पर भोलानाथ ने उसे खूब डांटा. शांता बिना उत्तर दिये अपने माँ के घर चली आई। सारा मुहल्ला भोलानाथ की ओर था क्योंकि मुहल्ले में किसी का लड़का भी नहीं पढ़ रहा था। सबके लड़के दुकान पर अपने बाप की मदद किया करते थे? कुछ छोटी-मोटी मजदूरी कर एक दो रुपया कमा लेते थे। यही देख भोलानाथ मन ही मन जलता था कि सबकी सन्तान अपने बाप को सुख दे रही है मेरी सन्तान मेरे पर भार बनी हुई है। यह सब शान्ता की ज्यादती है। मैं एक भी पैसा शान्ता को नहीं दूँगा; मै देखूंगा फिर कैसे अपने लाड़ले को पढ़ाती है।

शान्ता भी अपने बाप की लाड़ली थी। उसने खुद मैट्रिक पास नहीं की थी उसके लिए पछता रही थी अब राजू को न पढ़ा क्या जन्म भर पछताती रहेगी। अपने मां-बाप पर भार न डाल शान्ता ने उसी पाठशाला में जिस में खुद पढ़ी थी; नौकरी कर ली। दोपहर के

समय चार टयूशनें कर लीं। सब लोग गर्मियों के दिनों में पंखों के नीचे आराम किया करते थे जब तभी भी शान्ता घर से पढ़ाने के लिए निकलती थी। पढ़ाते-पढ़ाते उसे अभ्यास हो गया वह अब आठवीं तक की लड़की को पढ़ा लेती थी इस प्रकार वह अपने बच्चों को शिक्षा दे रही थी। राजू आठवीं में भी प्रथम आया वह अब बड़ा हो गया था अपनी मां के इस कष्ट को नहीं देख सकता था उसने आगे पढ़ने से इनकार कर दिया। शान्ता रो पड़ी वह अपने मन में बहुत ऊँचे महल बनाए हुए थी कि राजू को डाक्टर बनाऊँगी। परन्तु राजू ने सब धूल में मिला दिया था। माँ को रोता देखकर राजू बोला—'माँ मेरी तो पढ़ने की बड़ी इच्छा है, पर तुम्हारा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है मैं यह नहीं देख सकता।'

शान्ता बोली—'बेटा तुम्हारे पिता जी भी मेरा साथ नहीं दे रहे हैं अगर तुम भी न दोगे तो मैं क्या कर सकती हूं। मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता न करो। मेरे मन के स्वप्न को पूरा करो।'

'अच्छा माँ!'

रात के समय भोलानाथ शान्ता को लेने आये। माँ की इच्छा तो नहीं थी पर शान्ता के पिता बोले—'नहीं शान्ता तुम्हें वहीं जाना है वहीं तुम्हारा घर है।'

शान्ता रोते-कलपते भोलानाथ के साथ अपने घर पर आ गई। रात को कोई बात नहीं हुई। सुबह शान्ता जब स्कूल जाने को तैयार हुई तो भोलानाथ ने कहा—'शान्ता तुमने कभी मेरा कहना नहीं माना है अब राजू काफी बड़ा हो गया है। उसको मैं दूकान खुलवाए देता हूँ एक-दो रुपया वह भी लायेगा, अब वह आगे क्या करेगा पढ़ कर।'

'नहीं, वह अवश्य पढ़ेगा।' शान्ता बोली—

'शान्ता मेरा कहना मान जाओ।'

'नहीं, मैं कभी न मानूँगी।' वह स्कूल जाने को आगे बढ़ी।

'मैं तुम्हें कभी स्कूल पढ़ाने के लिए न जाने दूंगा। चाहे राजू को पढ़ाओ या न पढ़ाओ। मैं यह देख नहीं सकता कि औरत तो नौकरी करे और जवान लड़का स्कूल पढ़ने जाय।'

इस तरह बहुत देर तक तर्क-वितर्क होता रहा। अगर राजू इस समय घर होता तो शायद वह आगे न पढ़ता, पर वह तो स्कूल जा चुका था जब शान्ता किसी भी तरह न मानी तो भोलानाथ ने गुस्से में आकर जोर से धक्का दिया और घर से बाहर निकल गया। शान्ता अन्दर कमरे में जा गिरी ? बहुत देर तक अचेत रही, और फिर होश आने पर उठी।

जब राजू स्कूल से घर आया। माँ की यह दशा देखी तो उसे सब कुछ समझने में देर न लगी। ठंडी साँस खींचते हुए बोला—'माँ मेरे भविष्य की तुम्हें क्यों इतनी चिन्ता है ? अपनी हालत क्या कर रखी है तुमने।'

'बेटा ! तुम आ गए। जाओ रसोई में खाना रखा है, खा लो।'

'माँ ! तुम्हें क्या हो गया है ?' राजू ने पूछा—

'आज मैं सीढ़ियों से गिर गई थी, इसी कारण सिर में दर्द हो रहा है।' शान्ता ने झूठ कह दिया—

'पिता जी कहाँ हैं ?' राजू ने पूछा—

'काम पर गये हैं।' शान्ता ने कहा—

'माँ किताबें सब आज लिखवा दी गई हैं। मैं, लिस्ट ले आया हूँ, जल्दी ही खरीदनी हैं।'

'यह ले जाओ पचास रुपया, अगर और जरूरत हुई तो मैं और दे दूंगी।' शान्ता ने बाक्स से पचास रुपया निकाल कर दे दिये।

ठीक उसी समय भोलानाथ ने कमरे में प्रवेश किया, पचास रुपया छीनते हुए बोले—'अच्छा, पचास-पचास रुपया केवल किताबों पर खर्च होता है। आगे तो कभी न सुना था कि इतना बड़ा लड़का हो

जाय, तब भी पढ़ता ही जाए। अरे गिनती जान लेना ही बहुत है। दूकान पर हिसाब ही तो करना होता है।'

'देखिए, आप उसकी पढ़ाई का खर्च भले ही न दें, लेकिन लड़के का दिल न तोड़िये।'

'मैं एक पैसा भी खर्च न दूँगा। भोलानाथ ने कहा।—

'मत दीजिएगा, यह पचास तो दीजिए।' शान्ता ने कहा —

'यह भी नहीं दूँगा। स्कूल में तुम्हें नौकरी भी नहीं करने दूँगा। हाँ अगर यह सब तुम्हें स्वीकार है तो मैं कुछ नहीं कहूँगा।'

'मुझे सब स्वीकार है। अब आप आगे से केवल पढ़ने-पढ़ाने के विषय में मुझे कुछ न कहिएगा।'

'अच्छा।'

राजू अपने कमरे में रो रहा था, वह उसी समय चला गया था जब कि पिता जी ने रुपए छीन लिये थे। वह यही सोच रहा था बेकार मैं आज स्कूल गया, लड़के मुझे बनायेंगे। बस एक ही दिन पढ़ने का शौक था, पूरा हो गया।

भोलानाथ पचास रुपया साथ ले बाजार से आवश्यक सामान खरीद कर अपनी दुकान पर चले गए। शान्ता ने पहले राजू को चुप कराया और बोली—'बेटा तुम पचास रुपए को रो रहे हो यहां कितने ही पचास रुपए हैं।'

'माँ पैसा कहां से लाओगी मैं नहीं पढ़ूँगा।'

'बेटा! मैंने तुम्हें क्या कहा था जो भी तुम माँगोगे मैं वही तुम्हें दूँगी। लेकिन यह बात मुंह से न निकाला करो। चलो खाना खाओ।' राजू माँ के साथ रसोई में जा खाना खाने लगा।

शान्ता बोली—'बेटा मैं अभी अपनी चाभी तुम्हारी नानी से लेकर आ रही हूँ। तुम कहीं मत जाना मेरे आने पर रुपया लेकर किताबें खरीद लाना।'

'अच्छा माँ।'

शान्ता सीधे सेठानी के घर गई ! और बोली —'माँता जी ! आज मुझे पचास रुपया उधार दे दीजिए मैं आपको परसों तक दे दूँगी ।'

सेठानी बोली—'सेठ जी को पता न चले, यह लो रुपया । परसों दे अवश्य जाना ।'

'हाँ, हाँ, आप विश्वास करिए ।'

शान्ता बड़ी ही जल्दी घर पहुँच गई ! अपने बेटे को रुपए देकर बोली, 'यह लो बेटा !'

राजू रुपए लेकर बाजार गया और आवश्यक कापी-किताबें खरीदीं । उन रुपयों में कुछ रुपए बचा भी लाया ।

माँ ने राजू को समझाया—'पढ़-लिख जाने पर सभी बड़े आदमी बनते हैं, रुपए-पैसे कमाते हैं । जो लोग नहीं पढ़ते वह पीछे बहुत पछताते हैं । रुपया पैसा तो आता-जाता रहता है परन्तु विद्या ऐसा धन है जो सदैव अपने पास रहता है । तुम दिल लगाकर पढ़ो । तुम्हें अवश्य ही प्रथम श्रेणी में पास होना चाहिए ।'

राजू ने माँ की बातें गौर से सुनीं और कहा—'माँ ! मैं अवश्य तुम्हारे स्वप्नों को पूरा करूँगा । मैं कठिन यातनाएँ सहकर पढ़ूँगा । कभी भी पढ़ने की ओर से जी न चुराऊँगा ।'

८

✦✦✦✦✦✦

एफ० ए० की परीक्षा समाप्त हुई । निशा को बड़ी प्रसन्नता हुई । क्योंकि रेखा से भी राकेश के पेपर्स अच्छे हुए थे । अब निशा ने कुछ दिन के लिए मां के घर जाना चाहा । राकेश से केवल उसे एक महीना

की छुट्टी मिली, निशा अपने माँ के घर चली आई। इधर सुमन को निशा का आना जरा भी अच्छा न लगा। कारण जब तक निशा रहेगी, । सुमन मधुप से मिल न सकेगी । वह मधुप जिसके पास एक घन्ठा पढ़ाने का समय न था अब वह दिन-रात सुमन के पास ही रहना चाहता था । पर एक महीना बड़ी ही जल्दी बीत गया और निशा को राकेश लेने आ पहुँचा । सुमन को छुट्टी मिली । निशा के जाते ही वह मधुप के पास पहुँची और बोली—मैं तो डर गई थी कि दीदी हम दोनों का साथ जान जायँगी । पर अच्छा यह हुआ कि उन्हें कुछ खबर ही नहीं लगी ।

'मुझे क्या तुम बुद्धू समझती हो, जब तक निशा रही । मैंने नीचे झाँका तक नहीं हां, रिजल्ट तो तुमने अपना बताया नहीं ।'

'फेल हो गई हूँ ।'

'क्या बकती हो ?'

'और क्या कहूँ । गनीमत यह है कि थर्ड डिवीजन के मार्क्स ले आई हूँ । जो फर्स्ट डिवीजन पर मरती थी ।'

'अपने राम को देखो थर्ड डिवीजन भी पास होते हैं कि नहीं ।' मधुप ने कहा—

'ऐसा नहीं कहो ।' सुमन ने कहा—'अच्छा यह बताओ कि क्या बी० ए० पास करने के बाद आप अपने घर चले जाइएगा ?' सुमन ने पूछा—

'नहीं रानी जी, अब मधुप सुमन से कभी अलग नहीं रहेगा ।'

'तो फिर क्या कीजिएगा ?' सुमन पूछने लगी—

'या तो मैं यहां पर एल० टी० करूँगा नहीं कोई सर्विस ढूँढ़ लूँगा । फिर तो मैं अपनी रानी को नित्य नए-नए उपन्यास पढ़ने को ला दूँगा ।'

'आपने उपन्यास दे-देकर तो मुझे बिगाड़ दिया है । आज तक,

मेरी थर्ड डिवीजन नहीं आई थी। निशा दीदी जब सुनेंगी तो अवश्य मुझे डाटेंगी।'

'अब कभी न लाऊँगा, तुम खूब मेहनत करो, बोर्ड में प्रथम आकर दिखाना।'

'वह तो अब सपने ही रह गये हैं। प्रथम आने के दिन तो बीत गये। मैं तो निशा दीदी के पास चली जाती हूँ, वहीं पर रहकर पढ़ूँगी।'

'अगर तुम यहाँ से चली जाओगी तो मैं भी पढ़ना छोड़ कर गाँव में चला जाऊँगा। मैं यहाँ केवल तुम्हारे लिए ही तो रहता हूँ, नहीं तो कब का चला गया होता। सुमन तुमने अपने में मुझे बाँध लिया है। मेरी इच्छा एक साधू बनने की थी, पर अब तो अपनी प्रिय सुमन को छोड़कर कहीं न जाऊँगा।'

मधुप बड़े काले होते हैं वह तो सुमन पर मँडराया ही करते हैं। वह कभी एक के होकर नहीं रहते।' सुमन बोली—

'सुमन यह भी तुम्हें मालूम होना चाहिए कि कुछ मधुप सुमन में बन्द हो जाते हैं, अपने प्राण तक त्याग देते हैं।'

'और सुमन भी तो अपने प्रिय मधुप की प्रतीक्षा में सूख-सूख कर गिर जाते हैं।'

'यह तो अब देखा जायगा कि कौन अपने पथ से पीछे हटता है! तुम या मैं! हाँ देखो, आज मैंने कितना सुन्दर चित्र बनाया है।'

'किसका!'

'भावी पत्नी का?'

'दिखाओ तो?'

'बिना कुछ उपहार दिए उसे तुम देखना चाहती हो, ऐसे मैं न दिखाऊँगा।'

'अच्छा न दिखाओ, मैं जा रही हूँ ।' यह कर सुमन जाने को तैयार हो गई ।

'तुम तो बड़ी ही जल्दी नाराज हो जाती हो, बैठो अभी दिखाता हूँ ।'

मधुप अपने बाक्स से सुमन का चित्र निकाल लाया ! सुमन उसे देख हैरान रह गई । मन में सोचने लगी क्या मैं इतनी सुन्दर हूँ ! वह बोली—'इस चित्र को मैं न दूँगी ।'

'तुम मुझे भी ले लो सुमन, मैं कब इनकार करता हूँ ।'

'आप बनाते बहुत हैं ।' सुमन ने कहा—

'अच्छा, अब तुम को छोड़ 'आप' पर आ गई, यह कब से सीखा है ।' मधुप ने कहा—

सुमन उत्तर भी न दे पाई थी कि नीचे से सेठानी जी की आवाज आई । सुमन चित्र को अपनी कापी में छिपा बड़ी जल्दी नीचे उतर आई । सुमन का हृदय खुशी के सागर में हिलोरें ले रहा था ।

सुमन किताबें कमरे में फेंककर माँ के पास आई और बोली—

'कहिए माता जी ।'

'काम कुछ भी नहीं; कितने प्रश्न तुम्हें पूछने होते हैं ? ऊपर जाने की जरूरत अब नहीं, मैं आज ही कोई लड़की ढूँढ़कर तुम्हें पढ़ाने को लगा देती हूँ । सयाने लड़के-लड़कियों का इस प्रकार मिलन ठीक नहीं ।'

सुमन बोली—'नहीं माता जी, मुझे ट्यूशन की जरूरत नहीं, मैं अब अपने आप मेहनत करूँगी ।'

'तुम्हारे पिता जी तो कह रहे थे अबकी बार सुमन बड़ी मुश्किल से पास हुई है । यदि नहीं तो निशा के घर चला जाओ. उसे तो यहाँ कोई रहने ही नहीं देता, जैसे मैंने उन्हीं के लिए पाल-पोस कर इतना बड़ा किया था ।'

'जैसी आपकी इच्छा ।' इतना कहकर सुमन अपने कमरे में चली गई ।

सुमन एक जवान लड़की है । इसका ऊपर जाना ठीक नहीं, फिर आज के संसार में कोई बिरले ही अच्छे होते हैं । व्यर्थ का कहीं कलंक ही न लग जाय । यही सोचकर सेठानी जी ने अपनी बड़ी बेटी निशा को चार-पाँच महीना के लिए बुलाने के लिए सोचा । इधर सुमन अपने कमरे में जाकर सोचने लगी । क्या माता जी मुझ पर शक करने लग गई हैं ? ठीक ही तो कह रही हैं । इस बार मैंने फर्स्ट आने का स्वप्न बनाया था, पर वह स्वप्न ही बन कर रह गया । अब मै कभी उपन्यास न पढ़ूँगी । माँ तो यही समझती हैं कि मेरी बेटी रात भर पढ़ती रहती है उन्हें यह क्या मालूम कि वह भावी जीवन के सपनों में विचरण किया करती है । निशा भी तो मेरी बहिन थी । घर का काम भी करती थी, पढ़ती भी थी और एक मैं हूँ, घर का कभी बर्तन तक उठा कर नहीं रखा, फिर भी यह हाल, कहीं निशा यहाँ पर आ गई तो, खैर इतना तो निश्चय है कि अब मैं कभी ऊपर न जाऊँगी । मधुप को भी बता दूँगी कि माँ शक करने लगी हैं, तुम मुझे पत्र लिख दिया करो, और मधु के हाथ भेज दिया करो । पर हिन्दी तो मधु पढ़ लेगी, अँग्रेजी में लिखा न पढ़ सकेगी ! यही ठीक रहा । अगर मधु पूछेगी तो कह दूँगी कि यह प्रश्न है मेरी समझ में नहीं आ रहा था । इस प्रकार सुमन मन गढ़न्त कल्पना करती हुई बिना खाये-पिये ही सो गई ।

रात को भी जब वह न उठी तो सेठ जी स्वयं उसके कमरे में गए और उसे उठाते हुए बोले—'उठो सुमन बेटी, चिन्ता न करो, नीचा-ऊँचा तो होता ही रहता है, यह तो प्रकृति का नियम है । मैं खुद निशा को विदा कराने जाऊँगा वह तुम्हें आकर पढ़ा देगी ।'

सुमन बिना कुछ उत्तर दिये अपने पिता जी के साथ खाना खाने के लिए रसोई घर में चली गई ।

× × ×

जैसे-जैसे परीक्षा-फल समीप आ रहा था निशा को बेचैनी हो रही

थी मानो उसी ने परीक्षा दी हुई हो। प्रतीक्षा करते-करते वह दिन आ ही गया। रात को ठीक एक बजे अखबार वाला चिल्लाया—'इन्टर मीडियट का रिजल्ट आ गया, इन्टर मीडियट का रिजल्ट आ गया। 'रेखा, राकेश, निशा, घर के सभी प्राणी जाग पड़े। सेठ जी तुरन्त एक अखबार खरीद लाये। राकेश का नाम व्यक्तिगत छात्रों में था, निशा ने उसे खोज निकाला, वह द्वितीय श्रेणी में पास था। रेखा को अपना कालेज ही नहीं मिल रहा था वह रोने लगी, इतने में निशा ने अखबार उसके हाथ से लेकर रेखा का भी रोल नम्बर ढूंढ़ निकाला, दोनों भाई-बहिन द्वितीय श्रेणी में सफल हुए थे। रेखा अखबार को साथ ले अपने कमरे में अन्य सखियों के रोलनम्बर खोजने लगी। इधर निशा ने अपने बाक्स से कैमरा निकाला, राकेश को देती हुई बोली, 'यह तुच्छ उपहार आप को स्वीकार करना ही होगा।'

'यह कहाँ से लिया तुमने, मुझसे तो मँगवाया नहीं था।' राकेश ने कहा—

'जब मैं एक महीना के लिए अपने घर गई थी, वहीं से खरीद कर लाई थी। मैं जानती थी कि मेरे स्वामी पास होंगे और उनके लिए मुझे कुछ उपहार देने के लिए ले चलना ही चाहिए।'

उपहार लेते हुए राकेश ने कहा—'उपहार तो मुझे देना चाहिए था तुमको, उल्टे उपहार तुम दे रही हो।'

राकेश ने कैमरा अपने विस्तर पर रख दिया और अपने बाक्स से सोने का हार निकाल निशा के गले में डालता हुआ बोला—'यह मेरा उपहार भी तुम्हें स्वीकार करना होगा। तुम्हीं ने पढ़ाया था तभी तो पास हुआ हूँ।'

निशा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह अपनी सफलता पर उस समय गर्व कर रही थी। वह मन ही मन बड़ी प्रसन्न थी। ईश्वर

को उसने लाख-लाख धन्यवाद दिया। उसने उपहार की उपेक्षा न की बल्कि हँसकर कहा—'धन्य हो मेरे देवता।'

'धन्य हो मेरी देवी।' राकेश ने कहा—

'तुम्हारा नाम कितना सुन्दर है निशा।'

'और आपका'

दोनों का भगवान ने भी क्या मेल बनाया है, निशा + राकेश।

दोनों इसी प्रकार जन्म-जन्मान्तर तक एक ही साथ रहने की कल्पना मन में करने लगे। धीरे-धीरे अपनी इस खुशी के साथ सम्पूर्ण संसार को इसी प्रकार की खुशी प्राप्त करने की कामना करने लगे। खुशी में किसी को पता ही न चला और सबेरा हो गया। प्रातःकाल राकेश ने उठकर अपने माता-पिता के चरण छुये! निशा भी चरण छूकर और नहा-धोकर बगीचे में फूल लेने चली गई। दिन भर रेखा की सखियों का तथा राकेश के मित्रों का जमघट लगा रहा। सेठ, सेठानी जी के खुशी का पारावार न था। अब वह चाहते थे अपने छोटे बेटे का विवाह भी इसी प्रकार की देवी से हो, जो हमारे नाम को ऊँचा करे। दिन बड़ी जल्दी से बीतते गये। रेखा ने बी० ए० में एडमीशन करा लिया। इधर राकेश ने भी व्यक्तिगत रूप से पढ़ना आरम्भ कर दिया। एक दिन रेखा, राकेश और निशा तीनों पिक्चर देखने गए हुए थे कि पीछे से मधु और सेठ घनश्याम जी भी आ पहुँचे।

घनश्याम जी ने बहुत बार सेठ जी से कहा था कि निशा को एक वर्ष के लिए छुट्टी दे दीजिए। पर सेठ जी अपनी बहूरानी को एक दिन के लिए भी न भेजना चाहते थे।

निशा जब घर पहुँची तो मधु को दरवाजे पर देखकर हैरान रह गई।

'दीदी घर चलो।' मधु ने कहा—

'क्यों तुम कैसे आ पहुँची ?' निशा ने पूछा—

'पिता जी आए हैं, सुमन दीदी बीमार हैं।'

निशा अन्दर गई, अपने पिता के पाँव छूकर रसोईघर में खाना बनाने चली गई। जब राकेश को मालूम हुआ कि निशा को एक वर्ष के लिए घनश्याम जी लेने के लिए आए हैं तो उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। वह कैसे अपने ससुर के सामने कहेगा कि वह निशा को अपने से अलग नहीं करना चाहता।

घनश्याम—'सेठ जी आप एक वर्ष के लिए न सही आठ-दस महीना के लिये ही निशा को छुट्टी दे दीजिए। इनकी माता जी बहुत तरसती हैं। सुमन भी बीमार पड़ी है। ऐसी अवस्था में वह चाहती हैं कि निशा मेरे पास ही कुछ समय रहे। यह सही है कि अभी जल्दी ही निशा यहाँ आई है। पर मजबूरी है, इसीलिये आपसे कहता हूँ।'

'दीदी को हम लेकर जाएँगे।' बाहर से मधु चिल्लाती हुई अन्दर आई।

'तुम कौन सी क्लास में पढ़ती हो बेटी।' सेठ जी ने गोद में उठाते हुए कहा—

'छठे में', मधु बोली—

'अगर मैं तुम्हारी दीदी को न जाने दूँ तो........।' सेठ जी मधु से कहने लगे—

'नहीं, हम तो लेकर ही जाएँगे, माता जी ने कहा था, जरूर लेकर आना, निशा दीदी को।'

'अच्छा अगर मैं तुम्हारी दीदी को तुम्हारे साथ भेज दूँ तो तुम मुझे क्या खिलाओगी ?'

'लड्डू।' मधु ने चंचल स्वभाव में कहा—

मधु की बातों पर सेठ जी को हँसी आ गई। उन्होंने बड़ी कठिनता के साथ सोचकर निशा को विदा कर दिया। विदा करने के साथ ही साथ जल्दी ही मँगा लेने की बात भी निशा के ससुर ने कह दी।

९

माँ की कल्पनाओं के अनुसार राजू इस बार भी प्रथम ही आया। अब वह दसवें में था, माँ के स्वप्न पूरे होंगे। पर अभी तो मंजिल बहुत दूर है। फिर माँ के ऊपर कब तक बोझ बना रहूँगा। न जाने माँ को क्या धुन सवार है, 'डाक्टर बनाऊँगी' डाक्टर, डाक्टर कभी गरीबों के लड़के भी बनते हैं। क्या हुआ अगर इतिहास में एकाध लड़का आगे निकल गया। पर माँ जो यह किताबें पढ़ा करती है, क्या उसमें कुछ तरीके लिखे रहते हैं, मैं भी पढ़ूँगा, देखूँ तो क्या लिखा है। राजू माँ से चोरी करके किताबें पढ़नी शुरू कीं। शान्ता आधुनिक विचारों में पली थी। रामायण, गीता आदि पर उसका विश्वास था पर वह अधिकतर उपन्यास ही पढ़ा करती थी जिसमें समाज का नग्न चित्र उसे मिल जाता था उसी पर वह टीका-टिप्पणी करती रहती थी, नहीं इस उपन्यास में नायक को मारना नहीं चाहिए, इस उपन्यास में आपस में नायक-नायिका को मिला देना चाहिए था। सारा दिन वह उपन्यास पढ़कर यही सोचती रहती थी।

राजू अब रात-रात भर जाग-जाग कर उन किताबों को पढ़ता। हर व्यक्ति का मन कहानियों में लगता है। छोटा बच्चा भी माँ से कहानी सुनने को चाहता है। राजू अब युवक था, ज्यादा नहीं तो कुछ तो अवश्य ही समझता था। इन कहानियों में वह अपना कोर्स भूल गया। उसको यह ध्यान ही नहीं आता कि मेरे लिए माँ सेठ के घर बर्तन साफ करती हैं, कपड़े धोती है, तब जाकर कहीं उसका ऋण पूरा होता है।

एक दिन दोपहर को निशा शान्ता को यह कहकर बुलाने आई कि माता जी के सिर में बहुत दर्द हो रहा है। शान्ता ने कहा—'थोड़ी देर रुको, चाय तो पी लो, फिर मैं अभी चलती हूँ।'

'चाय मैं न पीऊँगी' तुम जल्दी चलो, हाँ वह उपन्यास लेती चलना, पढ़ तो लिए ही होंगे।'

'हाँ, मैंने उसी दिन पढ़ लिये थे।' शान्ता बोली—

'उसके लिए चाहे तुम्हें रात भर जागना पड़े, तब भी जागती रहती होंगी।'

'क्या करूँ निशा, सुबह समय ही नहीं मिलता, तुम्हारी कृपा से अब राजू दसवीं में है। सुबह उसे खाना तैयार कर देती हूँ फिर जो यह उमेश, रमेश, कमल है, वह तैयार होते हैं उन्हें खाना बनाकर देती हूँ। बाद में दो घर लड़कियों को पढ़ाने जाती हूँ, शाम को फिर खाना बनाना होता है।'

'बड़ा परिश्रम करती हो शान्ता।'

'क्या करूँ निशा, बिना इसके काम भी तो नहीं चलता। शान्ता ने कहा—

'रात भर में किताब समाप्त कर लेती हो ? हाँ, हाँ, कभी एक बज जाता है, कभी-कभी दो-तीन भी बज जाते हैं पर इन किताबों के पढ़ने से मुझे नींद आती ही नहीं।'

'इससे ज्यादा अच्छा होता कि तुम व्यक्तिगत रूप से मैट्रिक कर लेतीं।'

अब मैं बूढ़ी हो गई, बच्चों को पढ़ाऊँगी। मेरा मन अब पढ़ने में नहीं पढ़ाने में लगता है। कोर्स की कितायें मुझे बिच्छू मालूम पड़ती हैं और इन उपन्यासों ने तो मुझ पर जादू किया हुआ है। पहले पहल जब आई तो सास जी पाव भर सूत कतायें, मैं एक भी किताब छू न सकती थीं। मैं इन उपन्यासों के लिए घुल-घुल कर आधी हो गई।

अब जब मे वह नहीं रही, मैंने चरखा उठा कर छत पर फेंक दिया है। फिर इन्होंने मुझको और मैंने इनको अपना लिया है।'

'पगली हो शान्ता तुम।'

'क्या करूँ, चाहती हुई भी नहीं छोड़ सकती।'

'जल्दी करो, हां किताबें तो मुझे मिली नहीं, राजू के कमरे में देखती हूँ। वह राजू के कमरे में भाग कर आ गई तो सहम गई, राजू उन्हीं किताबों को पढ़ रहा था।'

'क्या कालिज नहीं गए राजू ?'

राजू किताब पढ़ने में मग्न था। माँ की आवाज सुनकर डर गया, डरते हुए बोला—'माँ ! आज छुट्टी है।'

'यह क्या छिपा रहे हो, मुझे दो, मैं जानती हूँ आज छुट्टी है या तुमने छुट्टी मनायी है।'

राजू ने कुछ उत्तर नहीं दिया शान्ता किताब ले नीचे चली आई। अगर निशा नीचे न खड़ी हुई होती तो आज वह अवश्य राजू को मारती, क्या हुआ अगर राजू बड़ा भी हो गया, पर उसके लिए तो अभी बच्चा ही है। उसके लिए वह कितना कष्ट उठा रही हैं, मार खा रही है, भूखी रह रही है पर यह........।'

शान्ता अधिक न सोच सकी। वह निशा के साथ चल पड़ी। घर पहुँचने पर मालूम हुआ कि सेठानी जी का सिर दर्द पहले से कम है, पर शान्ता ने तेल गरम कर खूब अच्छी तरह मालिश की, इधर निशा ने दूध गरम कर एक एक्स्प्रो की गोली माँ को निगलने के लिए दी। माँ को होश आया वह शान्ता को देख कर बोली—'ठीक तो हो बेटी, जैसी मेरे लिए निशा वैसी तुम, मैं तो तुझे बहुत याद किया करती हूँ। जिस दिन भी तुम नहीं आती हो, यही सोचती हूँ, न जाने उस बिचारी पर क्या बीत रही होगी।'

शान्ता सान्त्वना के शब्द सुन आँखों से आंसू पोंछने लगी।

'रो नहीं बेटी ! और रुपयों की जरूरत है तो ले जाओ।'

रुपयों की बात सुन शान्ता अपनी जेब से पचास रुपया निकाल इधर-उधर देखती हुई सेठानी के हाथ पर रख कर बोली—'मैं आपका अहसान कभी नहीं भुला सकती हूँ।'

'आप ही तो मेरी मददगार हैं। जब जरूरत होगी तब मँगा लिया करूँगी।'

'अभी इतनी जल्दी क्या थी शान्ता ? सेठानी जी रुपयों को तकिये के नीचे रखते हुए बोलीं—

'मेरे पास रहने पर खर्च हो जाते।'

'सेठानी यह सुन हँसने लगीं। और बोलीं—'सुनाओ, सब ठीक है न।'

'और तो सब कुछ ठीक है, पर इधर राजू का मन पढ़ने में नहीं लगता। रात भर लैम्प जलता रहता है नीचे से आवाज देती हूँ तो मालूम पड़ता है, सो रहा है।'

'यहाँ भेज दिया करो। दीपक भी तो दसवीं में है। इकट्ठे पढ़ लिया करेंगे; दोनों को आसानी रहेगी।'

'आज कहूँगी ! अगर मान जाय तो। क्या कहूँ आप से, मैं उसको अपने शरीर की अन्तिम रक्त की बूँद देने तक को तैयार हूँ पर वह ऐसा नालायक लड़का है कि········।'

बात काट कर सेठानी जी बोलीं—'वाह शान्ता ! हर वर्ष तो वह प्रथम आता है।

'हाँ, मगर इस वर्ष न आया तो मैं उसे आगे न पढ़ाऊँगी। मैं उसके लिए मरती रहूँ और वह इस प्रकार रहे, नहीं ऐसा कभी न होगा मेरे दूसरे भी तो बच्चे हैं।'

'नहीं शान्ता, जितना वह पढ़ना चाहे उतना तुम उसे पढाना। रुपया-पैसा आता-जाता रहता है। जो दूध पी रहे हैं, वह भी जी रहे हैं और जो सूखी रोटी खा रहे हैं वह भी जी रहे हैं।'

'अच्छा देखा जायगा। हम क्या सोचते हैं भगवान क्या करता है। अच्छा चलूँ, देर हो रही है। यहाँ से जाकर दो घर अभी पढ़ाने भी जाना है।'

+ + +

जैसे ही शान्ता निशा के साथ राजू की किताब ले गई थी, राजू उसी समय से रो रहा था। इतना बड़ा लड़का रोये कितने आश्चर्य की बात है पर वहाँ कौन देखता है उसे अपने ऊपर ग्लानि आ रही थी कमल, रमेश सब कालिज में हैं और वह घर बैठकर उपन्यास पढ़ रहा है। मेरी बुद्धि को क्या हो गया है? दो रात मैं लैम्प जलाकर सिनेमा देखने चला गया। माँ से बताया तक नहीं, अगर कहीं माँ ऊपर आ जातीं तो मुझे कितना धोखेबाज समझती। अगर मेरे प्रति माँ का कर्तव्य है तो मेरा भी कुछ कर्तव्य उनके प्रति है। पर यह मैं क्या कर रहा हूँ? माँ को आज कितनी ठेस पहुँची होगी आज से मैं शपथ लेता हूँ, कभी कोई काम बिना माँ के पूछे नहीं करूँगा। यह सोचकर उसने किताब उठाई। अपनी आँखों के आँसू पोंछे। परन्तु वह अत्यन्त दुखी था। उसे प्रतीत हुआ कि मैंने बहुत बड़ा धोखा माँ के साथ किया है। उसका हृदय ग्लानि महसूस कर रहा था। उसने तय किया कि मैं अब कभी घूमने न जाऊँगा। माँ ने मुझे प्रथम आने के लिए कहा था। मुझे प्रथम अवश्य आना है। यह सोचकर पढ़ने में व्यस्त हो गया। उसी बीच नीचे से आवाज आई—

'राजू बेटा!'

शान्ता आ चुकी थी उसके हाथ में दो उपन्यास थे और वह ,बोली—लो बेटा! पहले तुम यह पढ़ लो, फिर मैं पढ़ूँगी।'

राजू यह सुन माँ के पाँवों पर गिर कर जोर-जोर से रोने लगा और बोला—'माँ मुझसे गलती हुई है आगे से कभी ऐसा न होगा। मैं कभी इन्हें हाँथ तक न लगाऊँगा। माँ! मुझे माफ कर दो।'

माँ ने उसे उठा कर हृदय से लगा लिया और बोली—'बेटा!

तुम ऐसे काम करते क्यों हो ?' जिससे तुम्हें और तुम्हारी माँ को पछताना पड़ता हो ।'

राजू ने उत्तर न दिया । केवल सिसकियाँ भर कर रोता रहा । शान्ता ने राजू की आँखें देखीं, जो रोते-रोते लाल हो चुकी थीं । ठंडी साँस भर कर बोली—'जाओ बेटा, थोड़ी दूर घूम आओ फिर पढ़ना ।'

'नहीं माँ, मैं अब कभी घूमने नहीं जाऊँगा ।'

टप, टप, टप, की आवाज सुनकर शान्ता ने कहा—'देखो राजू, क्या तुम्हारे पिता जी आ रहे हैं ?'

'हाँ माँ, पिता जी ही हैं ।' राजू ने कहा—

शीघ्र ही भोलानाथ अन्दर आ गए । राजू तथा शान्ता ने पाँव छुए और फिर राजू बाहर घोड़े पर से सामान उतारने चला गया । घर आकर शान्ता से भोलानाथ ने हाल-चाल पूछा ।

साथ ही राजू के बारे में भी पूछा कि वह अब क्या करता है ? किस क्लास में पढ़ता है आदि-आदि । राजू को दसवीं क्लास में पढ़ता जान वह बड़े ही अप्रसन्न हुए । शान्ता अपने को कष्ट देकर राजू को पढ़ा रही थी । उसके सभी गहने तक पढ़ाई में समाप्त हो गये थे । उसकी ऐसी दयनीय दशा देखकर भोलानाथ ने कहा—'अब राजू की पढ़ाई बन्द कर दो । राजू अब सेठ जी की दुकान पर नौकरी कर ले ।'

शान्ता ने कहा—'अभी राजू छोटा है ।'

'मैं जब इससे भी छोटा था, तभी से काम करने लग गया था ।'

'आपकी माँ ने रोका नहीं ?' शान्ता ने कहा—

'वह तुम जैसी स्त्री नहीं थीं, जो लोगों के घर बर्तन साफ करती और कपड़ा धोती फिरती, और अपनी इज्जत भी·········।'

बात काटकर शान्ता बोली—'बस, अधिक कहने की जरूरत

नहीं है अभी आर हैं, न खाना, न पीना, केवल राजू की ही बात छेड़ दी। राजू ने आपका क्या बिगाड़ा है ?'

'इज्जत तक तो बिक गई, अब बाकी ही क्या है ?'

शान्ता तीव्र स्वर में बोल उठी—'आप सब कह सकते हैं पर अगर मेरी इज्जत पर तनिक भी धब्बा लगाया तो मैं सहन न कर सकूँगी।'

'मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। तुम उसको पढ़ाने में अन्धी हो गई हो, कितना समझाओ पर कभी मानेगी नहीं, कौन मुहल्ले में ऐसा है जिसका लड़का दसवें में पढ़ रहा हो; दसवीं तो बाबू लोग भी नहीं पढ़ाते जिसके यहाँ मैं काम करता हूँ; उस सेठ ने भी बच्चों को दसवाँ नहीं पढ़ाया। यह दसवाँ पढ़ायेगी !'

'मैं उसे डाक्टर बनाऊँगी।' शान्ता ने कहा—वादाविवाद में भोलानाथ अपने गुस्से को थाम न सके और एक छड़ी उठाकर शान्ता के सिर पर दे मारी। छड़ी के लगते ही उसके सिर से खून की धार बह चली। उसका सिर फट गया था। वह अचेत उसी स्थान पर गिर पड़ी और भोलानाथ बड़बड़ाते हुए कहते रहे, 'अब डाक्टर बना ले, देखें, कैसे डाक्टर बनाती है।'

प्रत्येक माँ अपने पुत्र को आगे बढ़ते रहने की कामना करती रहती है और अपने को कष्ट में डालकर, संसार की ठोकरें सहकर अपने पुत्र को आगे बढ़ाती है। शान्ता में भी यही एक मात्र धारणा थी कि उसका पुत्र डाक्टर बने।

राजू उसी बीच माँ के पास पहुँचा और हकबकाकर माँ को देखकर रो उठा। भोलानाथ का अब भी क्रोध शान्त न हुआ था, उसने राजू के सिर पर भी एक छड़ी दे मारी और बड़बड़ाता हुआ बाहर चला गया।

१०

निशा घर पर आ गई थी, सेठानी मधु दीपक, आदि सभी खुश थे। पर सुमन उदास दिखाई देती थी। उसे समझ नहीं आता था कि वह किस पथ पर चल रही है, उसे कहां किस ओर जाना है? निशा उसे जो भी समझाती या पढ़ाती, सुमन के पल्ले एक अक्षर न पड़ता वह सदा अपनी छत के दूसरे कमरे की ओर देखती रहती थी, उधर की दो आँखें भी सदैव नीचे झाँकती थीं। निशा ने कई उपन्यासों में पढ़ा अवश्य था कि नायक, नायिका परस्पर प्यार करते हैं उसी में घुल-घुल कर मरते रहते हैं पर वास्तविक जीवन में उसने तो कभी ऐसा प्यार न किया था।

वह तो केवल अपने एक राकेश को जानती थी। यूनिवर्सिटी में उसने लड़कों के साथ बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है पर उसका तो एक लड़के से भी प्रेम नहीं हुआ है। सुमन को हो क्या गया है, वह कुछ समझ ही न पाती थी। सुमन का कार्य-क्रम था कि रात को जब निशा सो जाय तो वह प्रेम-पत्र अपने मधुप को लिखना शुरू कर दे। रात के तीन बजे जब खिड़की के पास उसे अपने मधुप की छाया दिखाई दे तो उसे दे दे। बिजली बुझा दी जाती थी और इस प्रकार मधुप तथा सुमन दोनों खिड़की के पास मिलते रहते थे। जब किसी की आहट मिलती तो मधुप वहाँ से चला जाता था। सेठ जी का घर सड़क पर था उस पर हजारों व्यक्ति चलते-फिरते रहते हैं! मधुप भी उन्हीं में से एक व्यक्ति था।

उनका रोज का यही कार्य-क्रम था। सुमन सारा दिन रात का

इन्तजार करती और घड़ी की ओर देखती रहती, कब तीन बजे और कब उसका मधुप घर आए। किसी-किसी दिन तो वह मधुप के साथ [illegible] घूमने के बहाने चला भी जाया करती थी। अगर कभी उसे पांच बज जाएं, घर में कोई जाग पड़ा हो तो, सुमन सीधा-सा उत्तर दे अपने कमरे में चली जाती थी कि घूमने गई थी। कोई भी काम प्रारम्भ कीजिए, उसे पूरा करने में कुछ न कुछ समय की आवश्यकता होती है परन्तु प्रेम एक ऐसा काम है जिसे कुछ भी समय नहीं चाहिए, वह दिनों-दिन बढ़ता ही रहता है। दुकान खोलने पर चिन्ता होती है न जाने लाभ होगा या नहीं, और वह भी धीरे-धीरे, परन्तु प्रेम की आग इतनी जल्दी जलती है कि उसे बुझाया नहीं जा सकता, केवल वही उसे समझ सकते हैं जिन्हें सौभाग्य से या दुर्भाग्य से जीवन में ऐसा अवसर मिला है।

दिन बीता, रात आई और दो बजे ही आज मधुप की छाया दिखाई देने लगा। सुमन ने घड़ी उठाकर उस पर पांच बजा दिए, घड़ी बन्द कर धीरे से दरवाजा खोलकर चल पड़ी। सुमन शीघ्र ही मधुप के पास पहुंच गई। सुमन का हाथ अपने हाथ में लेकर मधुप ने पूंछा—'कभी छोड़ोगी तो नहीं यह हाथ।'

सुमन—मैं जीवन भर नहीं छोड़ सकती, जन्म-जन्म नहीं छोड़ सकती। मधुप—अगर कहीं तुम्हारे पिता जी तुम्हारा रिश्ता कहीं और कर दें तो?

सुमन—मैं वहां से भी भाग आऊँगी। मैं अब और कहीं नहीं जा सकती। मैं अपने मधुप के ही..........।'

मधुप हंस पड़ा और बोला—'तुम्हारा पति मुझे आकर मार डालेगा।'

सुमन—हम दोनों ऐसी जगह चले जाएँगे जहां कोई जान ही नहीं पायेगा।

मधुप ने प्रसंग बदला ओर सिनेमा जाने का दोनों ने प्रोग्राम बना

डाला। परन्तु उनके हृदय में भय था कि कोई देख न ले। निशा भी इस समय यहीं पर थी। दोनों में दृढ़ विश्वास था कि अब उन्हें कोई अलग कर ही नहीं सकता। दोनों ने प्रोग्राम तय किया और घर लौट आए। उस समय सभी निद्रा-देवी की गोद में थे।

मधुप उन युवकों में से था जो नित्य नई तितलियाँ फँसाना चाहता था। जब तक वह यूनिवर्सिटी में रहा सुमन की ओर वह कम ध्यान देता था। क्योंकि यूनिवर्सिटी में ही वह बहुतों से दिल बहला लेता था। नीरा, रजनी, रेखा आदि सब उससे प्रेम करतीं थीं। वह उसके पीछे जान देने को तैयार थीं। इधर सुमन से भी उसका प्रेम हो गया था।

मधुप मन ही मन सोचता था कि सुमन कितनी बेवकूफ लड़की है। आधी रात, घर से चुराकर मुझ से मिलती है! 'सौ दिन चोर के एक दिन साधु का।' किसी दिन, किसी ने देख लिया तो मुझे तो कोई कुछ कहेगा नहीं, इसी का नाम कलंकित होगा। जहाँ रिजल्ट आया नहीं मैं गायब, पीछे रोती रहेगी। मैं कितना भाग्यशाली हूँ, सुन्दर भी तो हूँ। मधुप शीशा उठा कर अपना मुँह देखने लगा। अपने आप पर हँसने लगा। फिर सोचने लगा एक बात है सुमन पवित्र प्रेम करती है। मुझे पिता जी कितना रुपया भेजते हैं। मैंने कितनी बार इसे गिफ्ट रूप में देना चाहा पर इसने नहीं लिया। उधर रजनी रूप के पीछे मर रही है। अभी तक मेरे लिए जान देती रही जब देखा कि विनय ज्यादा रुपया उस पर खर्च कर सकता है तो वह उधर खिंच गई, मैंने भी चिन्ता नहीं की, मुझे भी इधर नयी तितली मिल गई। जिसे अभी कुछ ज्ञान ही नहीं, केवल उपन्यास पढ़कर ही प्रेम-पथ पर चलने लग गई है, जानती नहीं कि यह एक बहुत बड़ा खिलवाड़ है।

सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख, गर्मी के बाद सर्दी, सर्दी के बाद गर्मी, प्रकृति का यह नियम चलता ही रहता है। सर्दियों के दिन आए। निशा भी सुमन के पास अन्दर कमरे में सोने लगी। जरा-

सी आहट पाकर वह उठ बैठती थी। निशा काफी बड़ी थी! उसके साथ की शान्ता चार बच्चों की माँ है।

अब सुमन डर गई। उसका साहस न पड़ता था कि दरवाजा खोलकर बाहर जाय। दो-तीन बार निशा उठ कर देखती थी कि सुमन क्या पढ़ रही है? एक दिन तीन बजे सुमन जाग रही थी। वह अपने उपन्यास पढ़ने में इतना तल्लीन थी कि उसे कुछ खबर ही नहीं थी कि मेरे पीछे निशा खड़ी हुई है। निशा ने किताब छीन लीन ली और बोली—'सुमन, क्या उपन्यास पढ़ने के यही दिन हैं! स्वास्थ्य गिरता जा रहा है, परीक्षा सिर पर है। आप उपन्यासों में लगी हैं! लम्बी जिन्दगी में क्या करोगी यही तो पढ़ना है।'

'बड़ा अच्छा है दीदी, थोड़ा-सा रह गया है। अभी सो जाऊँगी।'

निशा ने किताब वापिस कर दी, पर उसे नींद न आई। वह यही सोचती रही कि समय कितना जल्दी से बदलता जा रहा है। यह उपन्यास कौन लाकर देता है। मेरे उपन्यास तो अलग पड़े हैं, इस दीपक को मालूम नहीं कि दोनों की मेट्रिक की परीक्षा है। पर दीपक तो जल्दी ही सो जाता है। मुझसे मन लगा कर पढ़ता है।

निशा को नींद न आ रही थी वह यही सब सोच रही थी कि तीन बजे, मधुप खिड़की के पास दिखाई दिया' सुमन ने निशा की ओर देखा, उसकी आँखें बन्द थीं। किताब समाप्त हो चुकी थी। बिजली बुझा दी गई। एक बार पुनः निशा की ओर देखा, आँखें फिर बन्द थीं उसने मधुप को खिड़की से किताब दे दी मधुप ने धीरे से आने को कहा। सुमन ने और धीमे स्वर में कहा—'नहीं!'

मधुप उस किताब को ले दूसरी किताब देकर वापस चला गया! इधर निशा के कान में दोनों के स्वर सुनाई दिये वह सब समझ गई। ठण्डी साँस खींच वहीं लेटी रही। ऐसा प्रतीत होता था कि वह कुछ सुन ही नहीं रही है।

नियमानुसार वह चार बजे उठ बैठी सुमन सो रही थी। खिड़की में एक बहुत सुन्दर जिल्द की किताब पड़ी थी उसने देखा—'खोलो, एक कागज नीचे गिर पड़ा। जिस पर केवल दो लाइनें लिखी हुई थीं—

प्रिय सुमन,

'तुम्हारी परीक्षा अभी दूर है मेरा रिजल्ट कल आ रहा है। मैं जाने की सोच रहा हूँ। तुम्हारा क्या विचार है? अभी साथ चलोगी या फिर·······।'

—तुम्हारा ही

निशा उस पत्र को पढ़कर हैरान रह गई। संसार की आग हमारे घर में भी लग चुकी है। अगर सुमन इसके साथ भाग गई तो हमारी इज्जत क्या रह जायगी? धन्य है शान्ता जो इतनी गरीबी में भूखी रहकर भी अपनी इज्जत बचाये है। अगर मुझे पहले यह सब मालूम हो जाता तो कितना अच्छा था। उसे रात की बातें याद आने लगी। 'आओ', नहीं।

वह सोचती रही कि क्या रोज सुमन इसके साथ घूमने-फिरने जाती है। कई दिन तो मैंने देखा है कि वह चारपाई पर नहीं है। उसके आने पर पूछा—'तो घूमने गई थी,' उसने उत्तर दिया। उसका क्रोध सुमन पर बढ़ता जा रहा था, वह सोचने लगी कि इस कुल-कलंकिनी को मार ही क्यों न डालें?

'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी', फिर सोचती कि सुमन ऐसी थी तो नहीं। पिता जी की गलती है। उन्होंने एक लड़के को घर के ऊपर जगह क्यों दी? क्या उनके पास धन कम है जो किराये पर दे रखा है। मैं आज ही उससे मकान खाली करवाती हूँ। फिर सोचने लगी! अगर घर खाली करवा भी लिया जाय तो भी भागने वाले भाग ही जाएँगे! इसी के साथ इसका विवाह क्यों न कर दिया जाय। आज

का युग ही ऐसा हैं और न जाने कितनी देर वह वहाँ खड़ी सोचती रहती परन्तु पीछे से शान्ता का मधुर स्वर सुनाई दिया। निशा ने उस कागज को लपेट लिया ? और बोली—'बहुत दिनों में आई हो शान्ता, इतना सबेरे क्या काम पड़ गया है ?'

'सेठानी जी कहाँ हैं ?' शान्ता ने कहा—

'कहीं होंगी, काम तो बताओ।'

'काम हो तभी आते हैं क्या ?'

'नहीं मैंने वैसे पूछा तुम इतनी जल्दी जो आ गई।' सिर पर बँधी पट्टी देखकर निशा बोली—'यह क्या हुआ शान्ता ?' 'कुछ मत पूछो निशा ! भाग्य में जो होना होता है, होकर ही रहता है।' शान्ता का हृदय दुःखी था इसी कारण निशा ने बात बदल दी। उसने पूछा—'राजू कहाँ है ?' वह पढ़ता है या नहीं ?'

'घर पर है, किसी तरह उसे पढ़ा रही हूँ। उसी के लिये तो यह सिर फटा है। वह उसे पढ़ाना नहीं चाहते।'

'क्यों ?' निशा ने पूछा—

'वह कहते हैं मोहल्ला में किसी का बच्चा नहीं पढ़ रहा। कोई आइसक्रीम बेंचता है। कोई फल बेंचता है, यह इतना बड़ा जवान घर में बैठकर खा रहा है।'

ठंडी साँस भरते हुए निशा ने शान्ता को धन्य कहा और फिर शान्ता ने इस वातावरण को बदला। शान्ता ने कहा—

'निशा ! तुम आज कुछ मुझसे छिपा रही हो। ऐसा तो तुमने कभी नहीं किया। क्या कोई नयी बात है निशा ?'

निशा ने मन में सोचा कि शायद शान्ता ने उसे वह पत्र छिपाते हुए देख लिया है। इसलिए वह कहने लगी. 'कोई खास बात नहीं, यही सुमन········।'

'रुक क्यों गई हो, निशा, मुझे तो पहले ही से बहुत-कुछ मालूम है।'

'क्या ?' निशा ने कहा—

'यही कि सुमन मधुप से प्रेम करती है।'

'क्या यह सत्य कह रही हो शान्ता ?'

'हाँ निशा, मैं तो इन दिनों घर से निकलती नहीं हूँ। राजू बता रहा था कि एक दिन मैंने उसे सिनेमा में मधुप के हाथ में हाथ लिए बैठे देखा और फिर एक बार होटल में।'

'तुमने मुझे बताया क्यों नहीं शान्ता ?'

'मैंने सोचा कि आप जानती ही होंगी।'

'शान्ता बताओ, यह सब क्या हो रहा है ? घर वाले कुछ भी नहीं जानते और संसार में सब फैल चुका है।'

'एक बात बताऊँ निशा, बुरा तो नहीं मानोगी।' शान्ता ने कहा—

'शान्ता तुम मेरी वास्तविक बहिन हो, हम एक साथ इकट्ठे पढ़े हैं क्या ऐसे समय हमें उचित राय न दोगी ?' रात के समय दो-दो बजे सुमन का अकेले में मधुप से मिलना कहाँ तक ठीक है ?'

'बहिन ! मेरे तो जीवन में कभी ऐसा अवसर आया ही नहीं। विवाह के पहले या बाद में जो दो-चार मुझसे प्रेम-याचना की इच्छा रखते भी थे। मैंने उनको ऐसे छका दिया कि फिर उनकी शक्ल न दिखाई दी। अब तो दोनों के हित के लिये यही ठीक होगा कि उनका ब्याह कर दिया जाय।'

निशा—मैं भी यही सोचती हूँ शान्ता।' कितना जमाना बदल गया है। मैंने भी बी० ए० पास किया है। पर फिर भी मां-बाप शादी के विषय में बात करते थे तो दूसरे कमरे में चली जाती थी।

शान्ता—अभी और रंग देखना निशा, अभी तो तुम बच्ची हो।'

दोनों में बातें होते-होते काफी देर हो गई थी। तेज धूप निकल

आई थी। शान्ता निशा से विदा होकर अपने घर चली आयी। वहाँ से आते समय वह निशा को अपने घर आने को बुला आई थी।

निशा के सामने कठिन परिस्थिति थी। वह कैसे सुमन को मधुप से अलग करे। इसी सोच-विचार में परेशान थीं।

११

अब राजू मन लगाकर पढ़ता था। उपन्यास सिनेमा घूमना सब बन्द कर दिया वह अपने पीछे की ही बात पर पश्चात्ताप करके डूबा जा रहा था। आदमी अपने आप ही सुधर सकता है किसी के कहने पर नहीं। वही राजू का हाल हुआ। वह अपनी मार अभी भूला न था। इधर वह दो ट्यूशन भी करता था जिससे बीस रुपया उसे मिलने थे। उसमें से वह एक भी पैसा अपने पास न रखता था। भोलानाथ बीस रुपया पाकर ही सन्तुष्ट थे। उन्हें यह बताया गया कि राजू दूकान पर नौकरी करता है।

इससे दोनों माँ-बेटा मार से बचे हुए थे। भोलानाथ अब घर पर ही अधिक रहते थे। सुबह दुकान पर चले जाना, शाम को वापस आ जाना, यही उनका कार्य-क्रम था।

भोलानाथ को बीस रुपया मासिक वेतन मिलता था, जिसमें वह दूकान का काम भी करते और कभी-कभी सेठ जी के घर गाय या घोड़ा को पानी पिला देना, चने डाल देना, सब्जी ले आना आदि कार्य भी कर दिया करते थे। सेठ जी के यहाँ लड़का पैदा हुआ और दूसरे दिन ही इस दुनिया को पसन्द न कर छोड़ गया।

अब भोलाँनाथ को दो दिन की छुट्टी थी। उन्होंने शान्ता से भी कहा कि सेठ जी के घर पर अफसोस कर आना।

वह बोली—मैं घर नहीं जानती।

भोलानाथ ने कहा—'मैं बता दूंगा।'

शान्ता की अवस्था अब चलने-फिरने की न थी फिर भी उसे पति का कहना मानना पड़ा। वह जानती थी कि न मानने पर फिर मार पड़ेगी। अबकी बार बचना कठिन हो जायगा। शान्ता अफसोस करके गई। सेठ की औरत को उसने देखा। काली-कलूटी और बहुत मोटी थी, पर थी तो अमीर।

शान्ता ने देखा सामने बहुत से आदमी बैठे हैं उसमें भोलानाथ भी है। वह थोड़ी देर बैठी रही। सेठ जी की आवाज आई भोलू।'

'क्या घोड़े को पानी पिला दिया ?

'हाँ, हुजूँर।'

'गाय को भूसा डाल दो।'

'अच्छा जी।'

शान्ता इतनी लज्जित हुई। मानों उस पर सौ घड़े पानी पड़ गया हो। मेरे पति की यह इज्जत जैसे एक नौकर से भी बुरी होती है। बीस रुपया में सेठ ने मानों खरीद ही लिया है। घर में मुझ पर कितना रोब दिखाते।' यहां तो भीगी बिल्ली बने रहते हैं।'

शान्ता वहाँ अधिक देर न बैठी! उठकर घर की ओर चल पड़ी। उसको बड़ी ही ग्लानि मालूम हो रही थी। रास्ते भर यही सोचती रही कि हमारा भाग्य कैसे बदलेगा! क्या जन्म भर इस बीस रुपए पर वे जन्म काट देंगे। कभी मेरा राजू कमाने लगे तो मैं इन्हें एक क्षण भी यहाँ न रहने दूँ। क्या हम उनके नौकर हैं? सेठ की औरत कैसी काली-कलूटी थी देखने को जी न चाहता था पर भगवान ने पैसा दिया है तभी तो राज कर रही है। अब भी तो राजू

बीस रुपया लाता है केवल दो घण्टे पढ़ाने जाता है। वहाँ उसकी कितनी इज्जत होती है। मैं भी तो पढ़ाने जाती थी। पर क्या इज्जत थी ? अभी उस दिन मैंने राजू को बुलाने के लिए रमेश को भेजा था तो उन लोगों ने पाँच रुपया तथा कई दर्जन केले उसके हाँथ में दिए थे कि बच्चा हमारे घर पहली बार आया है। शान्ता सोचते हुए घर पहुँच गई। जैसे ही उसने कदम अन्दर रखा था कि भोलानाथ जी चिल्लाते हुए पहुँचे।

'क्या तुम से दो मिनट भी नहीं बैठा जा रहा था ?'

'आप उनके पशुओं को पानी पिलायें, मैं वहाँ बैठ कर देखूँ, मुझ से नहीं होता।'

'तो क्या हुआ, घर ही तो है।'

शान्ता ने वाद-बिवाद नहीं किया। उसकी हालत ठीक न थी। उसने कहा—'पहले जाकर दाई को बुला लाओ मेरी हालत ठीक नहीं है।'

भोलानाथ प्रसन्नचित्त दाई को बुलाने चले गए, खाने को उसे चाहे न मिले पर दुनियाँ उसे यह तो कहे कि इतने लड़कों का बाप हो गया। वह सोचता था कि मेरी बात मान जाय तो आज दो लड़के मेरे बराबर हुए बैठे हैं। दूकान खोल ली जाय तो घर का खर्च चल जाय, खैर कभी तो मानेगी, राजू बीस रुपया ला रहा है उमेश भी अब बड़ा हो ही रहा है, दिन कट जाएगें।

'ओ जन्नत'! भोलानाथ ने जन्नत के घर पर पर आवाज दी।

'कौन ?'

'मैं भोला हूँ।'

'अच्छा चलो, मैं आ रही हूँ।' जन्नत ने कहा—

जल्दी आने की ताकीद करके भोलानाथ चले आए। भोलानाथ जल्दी डग भरते हुए घर पहुँचे, दूर ही से बच्चे के रोने की आवाज

उन्हें सुनाई दी। उनके हृदय की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वह यह जानने के लिए व्यग्र थे कि लड़का हुआ है, या लड़की। उसी बीच दाई पहुँच गई, बच्चे को उठा कर साफ किया और भोलानाथ को खबर दी गई कि उनके लड़की पैदा हुई है।

'लड़की!'

'बहुत अच्छा हुआ, मेरे घर भी देवी जन्मी है।'

शान्ता ठण्डी सांस खींचकर बोली, 'इसे भी मेरे ही घर जन्म लेना था।' वह जानती थी कि इस घर में वह किस प्रकार दिन बिता रही है। सभी प्रकार की कठिनाई उसके सामने समय-समय पर आती रहती है। वह सोच-विचार में पड़ी थी कि राजू पहुँच गया। उसकी कापी में पच्चीस रुपया थे, पिता जी को देते हुए बोला, 'मैं जिन दो बच्चों को पढ़ाता हूँ, एक लड़का छमाही में प्रथम आया है तो उसके बाप दस के बदले पन्द्रह रुपए कर दिए हैं।'

भोलानाथ ने खुशी पूर्वक रुपए ले लिए और बोले—'बेटा, पढ़ना कब बन्द करोगे?'

'बस पिता जी, दो महीने बाद बन्द कर दूँगा।' राजू बोला—

'हाँ बेटा, अब तुम हो गए हो, उमेश और तुम दोनों मिलकर दुकान खोल लो, मैं भी वहीं काम करूँगा।'

'राजू! राजू!' शान्ता ने पुकारा—

'हां माता जी।'

'यह कौन रो रहा है, माता जी?'

'तुम्हारी बहिन आई है।' दाई ने अन्दर से जवाब दिया—

'बड़ा ही अच्छा हुआ, मैं भगवान से बहिन मांग भी रहा था, अब मुझे राखी बँधवाने तो कहीं न जाना पड़ेगा।'

'बेटा! मुझ पर एक डिग्री और बढ़ गई है। एक तो यूँही खर्च नहीं चलता है और फिर............।' यह कहते हुए उसका हृदय भर

आया परन्तु बच्चे के सामने कैसे आँसू बहाती, उसने अपने को रोक लिया।

दाई चली गई ! आज घर का खाना भोलानाथ और राजू ने मिलकर बनाना शुरू किया। वैसे अन्य दिनों की भांति आज का वातावरण शान्त था। भोलानाथ भी आज गंभीर थे।

१२

******

मधुप जो भी उपन्यास सुमन को देता था वह पहले खुद पढ़ लेता था. जिसमें प्रेम अधिक दर्शाया गया हो, नायिका नायक के पीछे मरने को तैयार हो या नायक नायिका के मरने पर साधू बन गया हो। इसी प्रकार के उपन्यास सुमन को पढ़ने को मिलते थे। वह इन्हीं में विश्वास करती थी। वह छोटी सी बच्ची जो बाहर के वातावरण से कम ही परिचित थी, वह वास्तविक संसार की बातें क्या जानें। इधर जो रात को उपन्यास सुमन ने पढ़ा था, उसी की बातें वह याद करने लगी कि किस प्रकार रीता घर से विनय के साथ भाग गई, पीछे पिता मारने को पहुँचा तो रीता डर के मारे वहीं मर गई। विनय भाग गया, जब रीता के पिता जी उसको नहीं खोज पाए और वापिस चले गये तो विनय ने वही घर में अपनी रीता की मजार (कबर) बनवाई। सारा दिन वह उसके पास ही रहता, प्रति रात उस पर दिया जलाता, सुबह उठकर नहा-धोकर उस पर फूल चढ़ाता। अन्त में

विनय भी मर गया। उसके मित्र ने रीता के पास ही विनय की मजार बनवा दी।

कितनी सुन्दर कहानी है। उसका मित्र भी कितना अच्छा था। दोनों का कितना प्रेम था, उसके मुसलमान मित्र ने कितनी मदद की, इन्हीं बातों में सुमन डूबी रही।

और इधर निशा अपने विचारों में मग्न थी कि अब वह क्या करे। अगर सुमन को डाटती है तो वह घर से भाग जायगी। पिता जी को बताते लज्जा आती है। माँ से आज तक मैंने ऐसी बात नहीं की, क्या करे, क्या न करें। निशा से आज घर का कुछ भी काम नहीं हो रहा था, वह उतनी ही परेशान थी जितना एक गरीब की झोपड़ी में आग लग जाने से वह परेशान होता है। वह सोचकर भी कुछ न सोच पाती थी। निशा चाहती थी कि मैं आज आराम करूँ और इस विषय पर अच्छी तरह विचार करूँ। कि क्या किया जाना चाहिए। वह अपना सिर नीचे कर के बैठ गई। अँगीठी पर रखा दूध सब नीचे गिरता रहा, जब दूसरे कमरे में बैठी हुई निशा की माँ को दूध के गिरने की सुगध मालूम हुई तो उसने आकर देखा कि निशा रो रही है और दूध सब उबल-उबल कर आग में गिर रहा है। माँ ने हकबकाकर पूछा—'निशा ! निशा। क्या बात है ?'

निशा ने जल्दी से दूध उतार कर नीचे रख दिया। बात खुल न जाय और दुख के वह शब्द उसके मुह से निकल न जाँय, उसने सिर में दर्द होने का बहाना किया और माँ से बोली—'मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है।'

'जाओ आराम करो, आज मधु और सुमन खाना बना लेंगी।'

निशा उठ कर कमरे में चली गई। वहाँ चारपाई पर जाकर लेट गई। मन की व्यथा किसी से कहे भी तो कैसे। उसी की बहन के कदम गलत रास्ते पर चल चुके थे। ऐसे में इधर कैसे लाज बचे, यही जटिल प्रश्न उसके सामने था। सुमन अवसर की ताक में रहती ही थी

वह मौका पाकर ऊपर पहुँची हुई थी, और दोनों अपनी बातों में मग्न थे। मधुप ने सुमन से पूछा—'रात को बाहर क्यों नहीं आई ?'

'निशा जाग रही थी, इसीलिए।'

'हाँ, तुमने मेरा पत्र पढ़ा ?'

'कहाँ था ?'

'किताब में ?'

'नहीं तो।'

'अब उसे पढ़ लेना, और बताना, तुम्हारा क्या विचार है ? मेरा रिजल्ट आज आ जायगा। मेरी इच्छा यहाँ से चले जाने की है।'

'मैं कैसे चलूँगी ?'

इसी बीच आवाज आई उसकी माँ उसे पुकार रही थी—'सुमन ! ओ सुमन।'

सुमन डर गई यह माता जी की आवाज थी, धीरे-धीरे छत की दूसरी ओर से उतर कर नीचे आई और बोली—'क्या है माता जी।'

'आज खाना तुम बना लो, मधु को भी बुला लो। निशा की तबियत ठीक नहीं है।'

सुमन डरी हुई थी। बहाना करना चाहती थी। पर वह कुछ न कहकर खाना बनाने चली गयी। परन्तु उस पत्र को देखने की उसकी तीव्र इच्छा थी। वह पुस्तक खोलकर पत्र ढूंढ़ने लगी लेकिन पत्र वहाँ न था। सुमन अब और भी डर गयी। अब वह सचमुच समझ गयी कि निशा मेरे बारे में सब कुछ जान गई है।

सुमन की हिम्मत भी न थी कि वह निशा से जाकर पूछे। अनमनी सी वह रसोई में आकर खाना बनाने लगी। सब्जी बनाई, नमक ज्यादा डाल दिया, दाल में नमक छोड़ा ही नहीं, हलवा में चीनी ही नहीं डाली। जब खाना सबको परोस दिया गया, तो सभी हैरान थे कि इस लड़की ने किया क्या है ? निशा समझ गई थी कि क्या बात

है ? सुमन अवसर ढूँढ रही थी कि मुझे समय मिले मैं मधुप से जाकर कह दूँ कि मैं तुम्हारे साथ चालूँगी । वह डरती थी कि अब घर में निशा सबको बतायेगी, दीपक, पिता जी, सब मेरी ओर से निराश हो जाएँगे, डाटेंगे, मारेंगे, न जाने क्या-क्या कहेंगे । यह सब सोच ही रही थी कि इतने में बाहर से मधुप के मित्र की आवाज आई—'बी० ए० का रिजल्ट ।'

मधुप—अपने मित्र को ऊपर ले आया । उसे प्रथम आने की आशा थी, वह पिता जी को विश्वास दिला कर आया था कि पोजीशन नहीं, पर फर्स्ट डिवीजन अवश्य पास होगा । पंजाब में बी० ए० की परीक्षा अप्रैल में और दूसरी सितम्बर अर्थात् साल में दो बार होती थी । मधुप ने सितम्बर में परीक्षा दी थी, नवम्बर में रिजल्ट आ गया । मधुप ने सम्पूर्ण अखबार में खोज डाला, परन्तु उसे अपना रोल नम्बर कहीं न दिखाई दिया ।

वह अपने मित्र से बोला—'तुम देखो दोस्त, मुझे तो अपना रोल नम्बर कहीं नहीं मिल रहा है ।'

मधुप का मित्र रमेश घर से देखकर ही आया था कि मधुप फेल है । परन्तु उसके सामने उसने यही बताया कि 'मैंने अभी अपना ही नहीं देखा, यहीं से अखबार खरीदकर सीधा तुम्हारे घर भागा चला आया हूँ ।' मधुप के मित्र ने कहा—

रमेश, मधुप दोनों ने इकट्ठी परीक्षाएँ दी थीं, प्रभाकर, एफ० ए०, दोनों में मधुप प्रथम आया था तथा रमेश थर्ड, और इस बार रमेश तो द्वितीय श्रेणी में पास था पर मधुप थर्ड भी पास न हो सका । रमेश यही दिखाने आया था कि तुम्हारा गर्व चूर हो गया । अभी तक तुम मुझे पिछाड़ते आ रहे हो, पर मैं पास तो होता रहा हूँ । इस बार मैंने

ऐसा नीचा दिखाया कि याद करो कैसी हेकड़ी दिखाता था कि प्रथम आऊँगा, न जाने रमेश और क्या-क्या सोचता रहा फिर बोला—

'पेपर्स तो खास कठिन नहीं थे भाई मधुप !'

'पता नहीं क्या हो गया ?' मधुप ने कहा—

'घबड़ाओ नहीं, कभी गिरना तो कभी उठना लगा ही रहता है।

'मधुप ने कुछ उत्तर नहीं दिया। रमेश उठ पड़ा। मधुप ने भी बैठने के [illegible] रमेश मन में मुस्कराता हुआ वहाँ से चला गया।

मधुप रो पड़ा। उसने सारा दोष सुमन पर लगाया। अगर वह मेरे जीवन में न आती तो आज मुझे यह दिन न देखना पड़ता। वह सोचता रमेश जैसा विद्यार्थी पास हो जाय और मैं फेल हो जाऊँ। खुद तो डूबी साथ में मुझे भी ले डूबी। इसी के लिए मुझे सारा दिन उपन्यास पढ़ना पढ़ता था कि कौन-सा अच्छा है और कौन-सा नहीं, क्या करूँ। इस बेवकूफ लड़की ने मेरा सत्यानाश कर दिया।

इधर निशा कमरे में लेटी यही सोच रही थी कि किस प्रकार पिता जी से यह सब कहूँ, कितना अच्छा होता अगर शान्ता मुझे यह सब पहले बता देती, तो बात इतनी बढ़ भी न पाती, फिर अपने आप कहने लगी कि अगर वह पहले बताती भी तो मैं उसका विश्वास कर लेती, अपितु उसे और भी भला-बुरा कहती, कि जिस घर का नमक खा रही हो उसी को बदनाम करती हो; तुझे शर्म नहीं आती तब वह चुप रह जाती। कितनी बुद्धिमान औरत है ! कितने कष्ट में अपने लड़के को पढ़ा रही है ऐसा तो मैं भी न कर पाती। बेचारी घर का काम करती है, टयूशन भी करती रही, हमारे घर के बर्तन भी कितने दिन साफ करती रही, फटे-पुराने कपड़े में ही गुजर करती रही।

अगर वह चाहती तो क्या भाग न सकती थी। कितनी सुन्दर है वह, वह किसी से भी झूठा प्रेम करके भी हजारों रुपये ले सकती थी पर उसने ऐसा नहीं किया, इधर सुमन हर प्रकार के वैभव में पलती

हुई भी, डूब गई, अभी उमर ही क्या है, न जाने आज कैसा जमाना आ गया है।

\+ \+ \+

'निशा बेटी, डाक्टर बुला लाऊँ ?'

'नहीं पिता जी।'

निशा ने कह दिया कि डाक्टर की जरूरत नहीं। लेकिन उसकी आँखों के आँसू न बंद हुए। यह देखकर उसके पिता ने कहा—'बेटी ! तुम मुझसे कुछ अवश्य छिपा रही हो, तुम जानती हो मैं कितने स्वतंत्र विचारों का हूँ इसी से मैंने तुम्हें, सुमन, मधु सबको स्वतन्त्रता दे रखी है। तुम्हारी इच्छाओं को मैंने कभी नहीं कुचला है। फिर बेटी यह परेशानी क्यों ? तुम रो क्यों रही हो ?'

निशा ने कुछ दृढ़ता से कहा कि 'पिता जी सुमन का विवाह कब करियेगा।'

'अभी क्या जल्दी है बेटी ? अभी तो उसने दसवाँ भी पास नहीं किया है। समय आने पर विवाह भी हो जायगा।'

निशा स्पष्ट रूप में तो कुछ सुमन के लिये कह नहीं सकती थी लेकिन उसने बराबर अपने पिता जी से जोर दिया कि अब सुमन की शादी कर ही देनी चाहिए। उसने यह भी कहा कि दुनिया बदलती जा रही है, पता नहीं कैसा समय आ जाय।

उसके बार-बार कहने पर सेठ जी कुछ-कुछ समझ गए। उन्होंने ज्यादा बहस नहीं की, फिर लड़की से कैसे करते, सोचने लगे कि हो सकता है कि सुमन कहीं गलत·······। फिर सोचते कि नहीं मेरी सुमन ऐसी नहीं। बेटी का मन रखने के लिए उन्होंने कहा—'कि क्या बेटी, तुम्हारी नजर में कोई लड़का है ?'

'हाँ, खोजने पर तो मिल ही जायगा।'

बात हो ही रही थी कि मधुप की ओर उसके पिता का ध्यान गया और वह बोले—

'ऊपर जो लड़का रहता है, शायद बी० ए० की परीक्षा दी है। वह कैसा रहेगा ?' मैं अभी उसे बुलाता हूँ। पूरा पता मालूम कर लेते हैं। मैं उसके बाप के पास चला जाऊँगा और रिश्ता तय कर लूंगा। तुम्हारी क्या राय है ?'

सुमन दूसरे कमरे में कान लगाकर सब बातें सुन रही थी उसे भय था कि कहीं निशा यह सब कह न दे। पर उसे बड़ी खुशी हुई जब पिता जी ने कहा कि मैं उसे बुलाकर सब बात करता हूँ। सेठानी जी खाना खाकर किसी के घर चली गयी थीं।

\+ \+ \+

मधु दूसरे कमरे में पढ़ रही थी और सुमन किताब आगे रख पढ़ने का बहाना मात्र कर रही थी। वह निशा और पिताजी की बातों को गौर से सुन रही थी।

वह यह जानना चाहती थी कि पिता जी मधुप से क्या कहते हैं ? मधुप इस इस सम्बन्ध को जानकर कितना खुश होगा, वह खुशी के ओर फूला न समायेगा। हम दोनों के मन की मुरादें पूरी होंगी। उसे आज ऐसा प्रतीत होता था कि मानो बहुत बड़ा वरदान मिलने वाला हो।

मन ही मन निशा की भी सराहना कर रही थी।

इसी बीच उसे सुनाई पड़ा कि निशा पिता जी से जोर देकर इसी व्याह के सम्बंध के लिए कह रही है।

मधुप के कानों में इस सम्बंध की खबर पहुँची तो उसने सोचा कि भगवान ने मेरी इच्छा की पूर्ति कर दी। धीरे-धीरे वह इम्तहान में फेल हो जाने की बात भूल गया। उसे इस सफलता की अधिक चिंता थी जो उसके सामने थी।

शान्ता के लड़की क्या पैदा हुई मानों पहाड़ गिर गया हो। अब उसे सारा दिन उसी की चिन्ता रहती कि क्या करूँगी। इधर राजू टेस्ट में भी अच्छे नम्बर न ला सकेगा। वह चाहती थी कि राजू ट्यूशन छोड़ दे। एक छोटा सा लड़का खुद पढ़े और घर का काम करे, ट्यूशन पढ़ाये फिर अगर कहीं परीक्षा में फेल हो गया तो मेरे सारे बने बनाए महल गिर जाएँगे। मैंने कितनी ऊँची कामनाएं की हुई हैं। क्या वह केवल स्वप्न मात्र रह जाएँगी।'

'शान्ता! शान्ता!' राजू के पिता ने पुकारा, और कहना शुरू किया-—

'तुम जो कहती थी कि राजू दुकान पर नौकरी करता है तो क्या झूठ कहती थी? वह तो सेठजी के लड़कों को पढ़ाता है।

'किस सेठ के?'

'जिनके यहाँ मैं काम करता हूँ।'

'पर मुझे तो उसने नहीं बताया।'

आज जब मैं घर सब्जी देने गया तो मुझे राजू की आवाज सुनाई दी। मैंने समझा शायद तुमने मुझे बुलाने भेजा हो, यह सोचकर मैंने जोर से उसे पुकारा—'राजू।'

मेरी आवाज सुनकर वह बाहर आ गया और बोला—'आइए पिता जी! मैं उसके साथ अन्दर गया तो वह एक कुर्सी पर बैठा था, आगे मेज पड़ी थी, उस पर चाय और मिठाई रखी हुई थी, मुझे चाय पीने के लिए कहने लगा।' सेठ का छोटा लड़का राजू सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। मैं देखकर हैरान हो गया।

'फिर आपने चाय पी,?' शान्ता ने पूछा—

'हाँ, हाँ, मिठाई भी खाई थी।

'तुम्हें तो ताना देना बहुत आता है।' शान्ता बोली—

'मैं आज ही उसकी सभी ट्यूशन बंद करवाती हूँ, वह कालिज में

कमजोर चल रहा है, दो ट्यूशन आगे करता था तीसरी और कर ली है तो क्या खाक पास होगा।' शान्ता ने कहा—

'तुम तो पागल हो शान्ता, रुपया किसे नहीं अच्छा लगता है।'

'उसका भविष्य खराब हो जाय और रुपया मिलता रहे; क्या आप यह चाहते हैं ? अगर आप पढ़े होते तो आपको मालूम होता कि भविष्य के लिये पढ़ना जरूरी है।

'इसी का तो तुम्हें घमण्ड है। माँ से कहती मेरा विवाह किसी पढ़े-लिखे लड़के से करो।'

'मेरी सुनता ही कौन था।' शान्ता ने कहा—

'अब कर लो न, ?' भोलानाथ ने जवाब दिया—

'अब बुढ़ापे में क्या करूँगी अब अपने राजू की दुल्हन पढ़ी लिखी लाऊँगी।'

'क्या राजू का विवाह तुम करोगी ?'

'जी हाँ।'

'यह कभी नहीं होगा, सेठ जी ने राजू का विवाह पक्का कर दिया है। मैं तुम्हें पहले बताने वाला था, पर लड़की कुछ बड़ी हो जाय, यही देर है।'

'अभी कर दीजिए न ?'

'अच्छा सेठानी जी को मेरे पास भेजना मैं उनसे बात करूँगी।'

भोलानाथ खुश हो गए और उसी समय सेठ के घर की ओर चल पड़े। शान्ता रोकती रही कि कल चले जाना पर भोलानाथ को चैन कहाँ ?

शान्ता सब काम करके बर्तन साफ करने में लगी थी, कि वहीं काली कलूटी कुरूप सेठानी आ पहुँची। शान्ता बर्तन छोड़ अन्दर सेठानी को ले गई और छोटे लड़के को रुपया देकर बाजार भेज दिया।

'हाँ आपने रिश्ते के लिए कहा है न?' शान्ता ने पूछा—

'हाँ, भोलू कह रहा था कि अब मैं राजू का विवाह करूँगा। मेरे

दूर के रिश्ते में एक लड़का और लड़की अच्छे हैं उन्हीं को मैंने रोक रखा है राजू के लिए।'

'सेठानी जी ! शान्ता ने बात काट कर कहा, आज आपने यह शब्द कहे मगर आगे से आपने यह बात कही तो अच्छी बात न होगी। वे आपके नौकर हैं हम नहीं, बीस रुपये में हम बिक नहीं गए कि आप जो चाहें, वह करें, लड़के का विवाह तो अभी मैं बीस साल और न करूँगी। राजू का विवाह मैं खुद करूँगी, उसमें आप लोगों की बोलने की जरूरत नहीं।'

बेचारी अनपढ़ी सेठानी शान्ता की बातें सुन हैरान रह गई, और बोली, तुम्हारी इच्छा है, मैंने तो भोलू के कहने पर यह घर बताया था।

'यह तो मैं जानती हूँ कि आप लोगों को अच्छा नौकर बीस रुपया में मिला हुआ है। पर मैं अपने बच्चों को आप लोगों का नौकर न बनने दूंगी।'

'सेठानी अपने अपमान को सहन न कर सकीं, और उठते हुए बोलीं, तो भोलू को भी अपने घर बिठा लो, कौन तुम्हारे घर हाथ जोड़ने आया था।'

शान्ता बिचारी चुप चाप खड़ी देखती रही। उमेश मिठाई लेकर आया तो वह सब भाइयों ने बाँट कर खा ली। अभी शान्ता वहीं लेटी हुई थी कि भोलानाथ छड़ी लेकर पहुँच गए। आज तुमने सेठानी का अपमान किया है। क्या इसीलिए उन्हें घर बुला भेजा था ?'

'मैंने तो कुछ नहीं कहा।' शान्ता डर गई थी, वह अधिक न बोल सकी—

मैं सब जानता हूँ, ले जाओ अपने बच्चों को, जहाँ ले जाना हो मेरे घर तुम लोगों के लिए न जगह है और न रुपया, 'सेठ ने मुझे नौकरी से जवाब दे दिया है।'

शान्ता चुप रह गई। लेकिन भोलानाथ ने पुनः कहा—'मैंने कुछ कहा है—तुमने कुछ सुना है कि नहीं ?'

शान्ता फिर भी चुप रही। वह कहती भी क्या, भोलानाथ ने छड़ी उठाकर शान्ता के दे मारी, जाओ जहाँ जाना हो, मैं देख लूंगा तुम लोग कहाँ से खाते हो, अगर घर-घर भीख न माँगो तब कहना।'

'क्या बात है पिता जी ?' राजू बहुत देर से छत पर बैठा पिता जी की आवाज को सुन रहा था, बोला—

'निकल जाओ अभी मेरे घर से, मेरे यहां तुम लोगों के लिए जगह नहीं है। शान्ता का हाथ पकड़ कर उसे बाहर कर दिया।'

राजू बोलना चाहता था, पर न जाने उसका मुँह क्यों बन्द हो गया। अगर वह चाहता तो अपने बाप से माँ का बदला भी ले सकता था, पर वह चुपचाप इस महाभारत के काण्ड को देखता रहा।

'निकल जाओ, सुन रहे हो कि नहीं' नहीं तो मैं सब को मार डालूँगा।' भोलानाथ बड़े क्रोध में थे।

अभी न जाने कितनी देर तक यह महाभारत का युद्ध होता। पर बिल्लू राजू का शिष्य, सेठ जी का लड़का भोलानाथ को बुलाने के लिए आ पहुँचा। भोलानाथ बिल्लू के साथ ही सेठ जी के घर को चल पड़े सेठ उस समय शान्त मुद्रा में बैठे थे। सेठानी का स्वभाव तेज था। पर सेठ जी उसे समझा चुके थे कि अगर भोलू को जवाब दे दिया तो न बीस रुपये पर कोई ऐसा सच्चा ईमानदार नौकर ही मिलेगा और न बिल्लू को पढ़ाने उसका लड़का ही आयगा।' इन्हीं बातों को सोच सेठानी भी अपने किए हुए पर पछता रही थीं।

भोलानाथ आते ही सेठ जी के पाँवों पर गिर पड़े और बोले—'मालिक, मेरा कोई दोष नहीं है, उसका स्वभाव ही ऐसा है। आप मुझे माफ कर दें।'

सेठ जी बोले—'तुम उसे उसकी माँ के पास क्यों नहीं भेज देते ?'

'आज मैं उसे माँ के ही यहाँ क्या, मैं तो वहाँ उसे पहुँचा देता जहां से वह कभी वापस ही न लौटती पर भगवान ने उसे बचा लिया।'

'कोई बात नहीं भोलू, सेठानी का स्वभाव तुम जानते ही हो, यह लो दुकान की चाभी, जाओ काफी देर हो गई है। खाना खाया है या नहीं ? अगर न खाया हो तो खा लो और चलकर दूकान खोलो।'

भोलानाथ मन ही मन बड़ा खुश हो रहा था, साथ में यह भी सोच रहा था कि यह सब राजू की बदौलत है। बिल्लू किसी से भी न पढ़ता था, अब कितना सीख गया है। पर मुँह से कुछ नहीं बोले। चाभी लेकर खुशी-खुशी घर से बाहर निकल पड़े। भोलानाथ ने चाहा कि घर होकर दुकान पर जाऊँ, शान्ता को बताता चलूँ कि मुझे फिर नौकरी मिल गई है पर न जाने क्या सोच कर वह दूकान की ओर चलने लगा। आज सारा दिन भोलानाथ का मन दुकान पर नहीं लग रहा था, वह यही सोचता कि किस प्रकार दिन बीते, रात आमे तो मैं घर जाऊँ। अब मेरा भाग्य बदलेगा, राजू पचीस पहले से लाता है, दस तो सेठ भी देगा, पैंतीस रुपया हो जायेंगे। कुछ शादी के लिए जोड़ता रहूँगा। अगर शादी वहाँ नहीं करती तो न करें कहीं तो करेगी। मैं भी दिल खोल कर खर्च करूँगा, दिखा दूँगा कि भोलानाथ के पास भी पैसा है। अन्त में सूर्य डूबा, भोलानाथ भी दुकान बन्द करने लगे। उसी समय सेठ जी ऊपर से आ पहुँचे। 'क्यों भोलू ! आज तुम्हारा लड़का पढ़ाने नहीं आया।'

'मुझे तो नहीं मालूम, मालिक, घर जाऊँगा तो पता चलेगा, कहीं बुखार न आ गया हो, उसका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था।'

'अच्छा भोलू, यह लो तुम रुपये, पच्चीस हैं, गिन लो, मैंने पाँच रुपया तुम्हारे बढ़ा दिये हैं। हो सका तो अगले साल पाँच रुपया और बढ़ा दूंगा।'

भोलानाथ सेठ के पाँवों को छूकर बोला—'सब आप ही का है मालिक, आपका ही नमक खाता हूँ.।

सेठ जी ने साइकिल उठाई और चल दिए, भोलानाथ धीरे-धीरे घर की ओर चलने लगे। वह रास्ते भर सोचते रहे—'क्या वास्तव में शान्ता ने राजू की ट्यूशनें छुड़वा दी हैं। बड़ी शैतान औरत है। मेरा राजू कितना असल लड़का है। बिलकुल मेरी माँ पर गया है। पर यह ऐसी कुत्ते की पूँछ है जितना समझाओ, जितना सीधा करो, टेढ़ी ही रहेगी।'

पर मैं राजू को मना लूँगा। शान्ता से भी अब कुछ नहीं कहूँगा जो इच्छा करती है वही करे। इस प्रकार भोलानाथ जी सोचते हुए घर पहुँचे। पर सबसे निराशा उन्हें तब अधिक हुई जब घर पर अँधेरा पाया आज धनतेरस थी, इतना बड़ा त्योहार हो और मेरे घर में अँधेरा हो, कितनी बदतमीज औरत मुझे मिली है। अब घर छोड़कर चली गई है।

घर के दरवाजे की दो चाभियाँ थीं एक शान्ता के पास रहती थी एक भोलानाथ के पास। पर जब से भोलानाथ की दुकान शहर में आ गई है वह चाभी दुकान पर ही छोड़ देते थे। क्योंकि घर तो हमेशा खुला मिलता था। पुनः दुकान की ओर लौटे। दिन भर की खुशी एक क्षण में मिट गई। अगर कहीं रास्ते में शान्ता मिल जाय तो गला पकड़ ऐसा दबाऊँ कि याद करें। मरती भी नहीं, मर जाय, मेरे घर को बरबाद किया है।

भोलानाथ दुकान से चाभी लेकर घर लौटे—दरवाजा खोला—सुबह की दो रोटी पड़ी थीं, इच्छा की कि उन्हें खा लूँ पर उसी समय एक साधु मागता हुआ दरवाजे पर पहुँच गया। भोलानाथ ने दोनों रोटी साधु को दे भूखे ही बिस्तर बिछा कर लेट गया। वह पड़े-पड़े बिस्तर पर करवटें बदलता रहा और अपने किये हुए पर आँसू बहाकर पछताता रहा।

१३

सेठजी और निशा को बहुत देर इन्तजार नहीं करना पड़ा कि मधुप वहां आ गया। सेठ जी ने मधुप से पूछा—'कैसा रहा रिजल्ट।' मधुप चुप रहा, उसे बताते लज्जा आती थी कि मैं पास नहीं हो सका।

'चुप क्यों हो ? मधुप क्या पास नहीं हो सके ?'

मधुप ने सिर हिला दिया।

कोई बात नहीं, इस वर्ष न सही, अगले वर्ष सही, जीवन बहुत लम्बा है हिम्मत नहीं हारना चाहिये।

मधुप फिर भी चुप रहा। सेठजी ने पूछा—'तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?

मधुप—'वह स्कूल में पढ़ाते हैं।

'कहाँ पर तुम्हारा घर है ;'

'यहाँ से बीस मील पर गाँव है वहीं पर सभी रहते हैं।' मधुप ने कहा—

'कितने भाई बहिन हो ?'

'हम दो भाई हैं, एक का विवाह हो चुका है, और एक बहिन है जो अभी नवीं में पढ़ती है।'

इसी दौरान में मधुप के विवाह की बात भी सेठजी ने पूछ डाली तो मधुप ने कहा—यह सब पिताजी जानें।

'क्या पढ़-लिख कर भी पुरानी लकीरों पर तुम चलते हो।'

'जी हाँ, और अभी तो विवाह का मेरा विचार ही नहीं है।'

'कोई बात नहीं, जब चाहना तब करना, कहाँ तक पढ़ोगे ?'

'जितना पिता जी पढ़ायेंगे।' मधुप ने कहा—

उन्होंने मुझ से कह रखा कि जब तक पास होता जाऊँगा तब तक पढ़ता जाऊँगा, मेरा बड़ा भाई एफ० ए० में फेल हो गया था तो उसकी पढ़ाई भी बन्द कर दी गई थी।

'तुम्हारे पिता जी भी कमाल के आदमी हैं।'

यह तो उनके अपने विचार हैं पिता जी का कहना है कि जिन बच्चों का मन पढ़ाई में होता है वह कभी भी फेल नहीं होते हैं।'

'खैर अगर तुम पढ़ना चाहो तो मैं तुम्हें पढ़ा दूँगा। पर इस शर्त पर कि तुम्हें विवाह भी मेरे कहने पर ही करना होगा।'

मधुप ने कुछ उत्तर नहीं दिया, सेठ जी फिर बोले—'तुमने मेरी बेटी सुमन को देखा ही होगा। मैं उसी के लिए कह रहा हूँ।'

'अभी तो सेठ जी मेरा कोई विचार नहीं है, आगे देखा जायगा।'

अगर कोई और समय होता तो शायद मधुप उछल पड़ता कि उसको मुँहमाँगी मुराद मिल रही है। इतने बड़े सेठ की लड़की से विवाह, फिर पढ़ाई का भी खर्च मिले, परन्तु मधुप अभी से किसी बन्धन में नहीं पड़ना चाहता था। संसार की नयी रंग-बिरंगी तितलियों से मिलने के बाद ही वह विवाह करेगा। फिर पिता जी क्या कहेंगे कि तुम विवाह करने गये थे कि पढ़ने गये थे। न जानें कितनी बातें मधुप के दिमाग में घूमने लगीं।

'मधु बेटी, चाय तो बनाओ।'

'अच्छा पिता जी।'

इधर सुमन के काटो तो खून नहीं, वह अपनी साड़ी में मुँह छिपाकर रोने लगी। उसकी सभी आशाएँ और कल्पनाएँ समाप्त हुई जा रही थीं।

निशा ने सोचा कि रात वाला पत्र मधुप को दिखाऊँ और उसे बताऊँ कि तुम अभी तक क्या कह रहे थे, भागने से तो ज्यादा अच्छा यह है कि मुँह से कह कर विवाह कर लेता। वह उठी और बाक्स में से पत्र ढूँढने लगी, पर उसे वह कहीं न मिला। सुमन ने उसे पहले ही निकाल लिया था, निशा को इसका कुछ भी पता न था।

'किसी का जीवन बरबाद करने में तुम्हें क्या मिलता है मधुप।' निशा ने खड़े-खड़े ही पूछा—

'मैंने किस का जीवन बरबाद किया है बहिन जी।' मधुप ने कहा—

निशा न जाने कितनी फटकार उसे देती, रात वाली बात, उपन्यास देना, होटल जाना, सिनेमा जाना, सब बताती पर दुर्भाग्य कि उसी समय डाकिया तार दे गया जिसमें लिखा था कि 'राकेश की तबीयत खराब है।'

निशा उसे पढ़ और कुछ न कह सकी। इधर सेठ जी भी परेशान हो गए थे। मधु चाय तथा नमकीन और मीठी मिठाई रख गयी पर उसे किसी ने छुआ तक नहीं। मधुप भी नमस्ते कह उठ पड़ा। वह भगवान को आशीर्वाद दे रहा था जिसने आज उसे अपमान से बचा लिया था!

'निशा बेटी! चलने की तैयारी करो। आज शाम की गाड़ी से ही चलना होगा।' सेठ जी यह कह बाजार चले गये।

सुमन को कुछ मालूम नहीं था, वह वहीं लेटी सो रही थी, जब वह उठी तो अन्दर जाकर देखा, निशा कपड़े इकट्ठे कर रही थी!

मधु रसोई में थी! पिता जी घर पर न थे, तो वह सीधी छत पर पहुँची, और मधुप को आवाज दी और कहा कि 'आखिर बात क्या है?' फेल-पास तो लगा ही रहेगा। हम दोनों साथ रहेंगे तो सब ठीक हो जायगा।

'ठीक हो जायगा कि सब नष्ट हो जायगा।'

'तुम्हें क्या हो गया है मधुप ? 'सुमन ने कहा—

'बेशर्म, चुप रहो।' मधुप ने कहा—

'मधुप। क्या तुम अपने प्रेम का बदला यही दे रहे हो ? यही तुम्हारा न्याय है। मैंने तो तुम्हें सदैव के लिए अपना बनाया था। परन्तु अब तुम्हें हो क्या गया है ?'

'मुझे कुछ भी नहीं हुआ, परन्तु मैं ब्याह नहीं करूँगा।'

सुमन मन ही मन बड़ी दुखी हुई। वह संसार के ऐसे वातावरण को भी कभी देखेगी, सोचा ही न था। वह यकायक कह पड़ी—'मधुप, तुम धोखेबाज हो, विश्वासघाती हो।'

'मैं विश्वासघाती नहीं, बल्कि तुम हो जो अपने माँ-बाप से विश्वासघात कर किसी अन्य लड़के के साथ रात-रात भर गायब रहीं। अगर मेरी बहिन ऐसी होती तो मैं उसे जिन्दा गाड़ देता।'

इतना कहना ही था कि सुमन ने मधुप से मकान छोड़ने के लिए कह दिया।

'आपके कहने की जरूरत नहीं मैं खुद ही चला जा रहा हूँ।'

'लोफर, बदमाश, शर्म नहीं आती, ऐसा करते हुए।' सुमन ने क्रोध में कह डाला—

'सुमन ! सुमन ! निशा ने आवाज दिया—सुमन दूसरी ओर से आकर निशा के पाँवों पर गिरकर जोर-जोर से रोने लगी और बोली—'जीजी, तुमने मुझे बड़े जाल से बचा लिया, नहीं तो मैं नष्ट हो जाती।'

निशा ने उसे उठाकर गले लगाया और बोली—'निराश न हो सुमन, मैं तुम्हें बताना चाहती थी कि आज के युवक किस प्रकार लड़कियों का जीवन बरबाद करते हैं, वह खुद तो आजाद घूमते रहते हैं और लड़कियों को कहीं जगह नहीं रह जाती, वह जन्म भर एक बार की भूल पर रोया करती हैं।

सुमन जो अभी तक रो रही थी बोली—'बहिन ! मुझे पता नहीं कि तुम्हें हो क्या गया है ? मेरा मन अब कहीं नहीं लगता ।'

सुमन मैं अभी कुछ दिन और रह कर तुम्हारा मन बहला देती पर इधर तुम्हारे जीजा जी का तार आया है, वे बीमार हैं । मैं आज ही जा रही हूँ । देखो अब ठीक से रहना ।'

सुमन यह सुन और जोर से रो पड़ी । 'जीजी, मैं अब यहाँ न रहूँगी, मुझे यह घर काटे खाता है, अपने साथ मुझे भी ले चलो ।'

इच्छा तो मेरी भी थी कि मै तुम्हें साथ लेती चलूँ, पर तुम्हारे इम्तहान के फार्म भरे जा रहे हैं । परीक्षा के बहुत कम दिन है । मन लगाकर पढ़ो अगर तुम फर्स्ट आई तो मैं तुम्हें बड़े अच्छे उपन्यास भेंट करूँगी, जिन्हें तुम पढ़कर देखोगी कि समाज किस प्रकार चल रहा है ।'

'मैं अब न पढ़ूँगी ।'

'क्यों !' शशि ने कहा—

'इच्छा नहीं करती ।' सुमन ने कहा—

'पागल हो गई हो क्या । अभी तुम्हें पढ़ना है, खूब पढ़ना है । तुम्हें हर प्रकार की स्वतन्त्रता है, जो काम करो, बस सोच-समझ कर करो, ताकि कभी कोई कुछ कह न सके ।'

'क्या बातें हो रही हैं ?' शान्ता ने आते ही कहा—

'आओ बहिन शान्ता, अबकी बार तो लड़की हुई है न, मैंने पहले ही कहा था कि अब लड़की की ही जरूरत है ।'

मुझे तो लड़कियाँ बिलकुल पसन्द नहीं, भगवान ऐसा करे कि सब लड़कियाँ मर जाँय । उनका आज के संसार में कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया है ।'

निशा मुस्करा पड़ी और बोली—'शायद भगवान तुम्हारी यह

प्रार्थना न सुनेगा। अच्छा सुमन की देख-भाल तुम करना; मैं आज जा रही हूँ, तुम पर यह मेरी जिम्मेदारी रहेगी।'

शान्ता ने कहा—'भगवान उनकी लम्बी उमर करे, फिर कब आओगी ?'

'भगवान जाने अब कब आती हूँ। सुमन जाओ, मिठाई लाओ, उमेश को दो।' सुमन मिठाई लेने चली गई। निशा धीरे-धीरे शान्ता से कहने लगी, शान्ता सुमन का दिल टूट चुका है उसे लड़के ने जवाब दे दिया है उसकी देखभाल करना, समय-समय पर उसे आशा बँधाती रहना, किसी चीज की जरूरत हो तो माँग लेना।'

सुमन कान लगाकर सब सुन रही थी, वह यह सुनकर हैरान रह गई कि 'सुमन का दिल टूट चुका है—उस लड़के ने आज जवाब दे दिया है।' क्या शान्ता सब जानती है। हाय रे दुर्भाग्य ! शहर भर में मेरी बदनामी होगी, सब मुझ पर उँगली उठाएँगे। तुम्हारा नाश हो मधुप, तुमने मुझे कहीं का न रखा। सुमन ने अन्दर जाकर उमेश को मिठाई दी और वह वहीं बैठकर खाने लगा।

'तम चिन्ता न करो निशा ! सुमन भी मेरी बेटी ही है। मैं अब यहीं रहूँगी।'

'कहाँ ?' निशा ने कहा—

'यहीं मायके में।' शान्ता ने जवाब दिया—

'क्यों ?'

'वह मारते हैं। पूरा इतिहास आज तुम्हें खोलकर बताती, पर समय ही नहीं है।'

'ऐसा नहीं करना चाहिए शान्ता; घर-घर यही हाल है।' निशा ने कहा—

यह तो मैं भी जानती हूँ निशा, पर दिन रात वह मेरे पीछे पड़े रहते हैं यह देखो जो उन्होंने मुझे मारा है; इधर राजू का भी मन पढ़ने

में नहीं लगता, मैं उसकी सब ट्यूशनें छुड़वा देने की सोच रही हूँ। इधर बेचारा कालिज से पढ़ कर आता है फिर ट्यूशनें पढ़ाने चला जाता है। रात में कहता है कि मेरे सिर में दर्द है। ऐसे में तो मेरे बने-बनाए स्वप्न सब बिखर जाएँगे।'

'शान्ता बहिन, जो आवश्यकता हो, यहाँ से ले लेना।'

'सुमन ! शान्ता तुम्हारी ही बड़ी बहिन है। कभी रुपये माँगे तो दे देना, तुम्हारे पास तो रहते ही हैं।'

'अच्छा जीजी, फिर तुम कब आओगी ?' सुमन ने कहा--

'मैं तुम्हें भी वहाँ मंगवा लूँगी। तुम मन लगाकर पढ़ना। अच्छा मेरी रानी।' यह कहते हुए वह रो पड़ी।

'क्यों बेटी, क्या तैयार हो गई हो।' बाहर से ही सेठ जी ने पूछा—

'हाँ, पिता जी।' निशा ने कहा—

अपने परिवार-जनों से मिलकर निशा वहाँ से विदा हो गई। निशा के पिता ने शान्ता से पूछा—

'कब आई हो बेटी ? और सब ठीक है न ?'

'सब आपकी कृपा है पिता जी।' शान्ता ने उत्तर दिया।

सेठानी जी भी उसी समय आ पहुँची। शान्ता ने उन्हें भी नमस्ते किया और वहाँ से चलने को उठ खड़ी हुई।

सेठ जी ने फलों की टोकरी निशा को दी और जो कपड़े आदि लाए थे वे सब उसे देकर चले--'इन्हें रखो बेटी ! मैं भी तैयारी करता हूँ।'

निशा कपड़ों को अन्दर रखने गई उसे ऐसा मालूम पड़ा कि मधुप कह रहा है 'आओ ! और सुमन कह रही है 'नहीं।'

निशा बाहर आई और बोली—'पिता जी, अभी आप रहने दीजिये, दीपक मुझे पहुँचा आयेगा। अगर ज्यादा तबीयत खराब हुई

तो मैं तार भेज दूँगी। यहाँ घर पर भी तो किसी को रहना चाहिए।'

दीपक को उसके पिता ने बुलाया और कहा बेटा ! निशा के साथ चले जाओ, कल तक लौट आना, अगर जीजी जी की ज्यादा तबीयत खराब होगी तो मैं कल चला आऊँगा।'

'अच्छा पिता जी !' पिता की आज्ञा पाकर दीपक निशा को लेकर उसके घर चला गया। जाते समय मधु और सुमन ने कहा—'बहन ! हम लोगों की खबर लेते रहना और जल्दी ही अपनी कुशलता की सूचना देना।'

सभी ने निशा को बिदा किया। उस समय सभी की आँखों में आँसू थे। जरा देर में ही ताँगा आँखों से ओझल हो गया।

१४

निशा को बिदा कर सुमन और सेठ जी घर लौटे। सेठ जी तो अपनी दुकान पर चले गए और सुमन अपने कमरे में जा चारपाई पर लेट गई। उसके सामने सम्पूर्ण अतीत घूम रहा था। मधुप चला गया, निशा चली गई अब वह कैसे समय व्यतीत करेगी, अब सुमन नहीं पढ़ेगी, क्या करेगी, पढ़कर संसार कितना बदल गया है। क्या जितने भी प्रेम करते हैं सबका यही हाल होता है। पर मैंने आज तक जितनी किताबें पढ़ी हैं। लड़की ही लड़के को ठुकराती है। लड़का तो कभी नहीं ठुकराता फिर कुछ विशेष बात भी तो नहीं थी, यही था कि वह फेल हो गया था, क्या हुआ, गिरना, उठना तो लगा ही रहता है,

इसका यह अभिप्राय नहीं कि किसी का जीवन कोई बरबाद कर दे। उसने मनही मन सोचा कि मैं अब किसी पुरुष से बात न करूँगी उनकी शक्ल देख थूक दूँगी, सब पुरुष जाति ऐसी ही तो है। किस प्रकार बातें करता था, मानों आकाश के तारे भी मेरे लिए तोड़ सकता था। अभी परसों ही क्या कह रहा था— सुमन संसार में प्रलय आ जाय तुम और हम रह जायँ। फिर मनु और श्रद्धा का पार्ट हम अदा करें।' पर मैंने तो कामायनी पढ़ी ही नहीं, यह मनु और श्रद्धा कौन है। यह भी कोई उपन्यास होगा, पर मैं तो आज से कभी उपन्यास न पढ़ूँगी, निशा भी कह रही थी कि तुम फर्स्ट आना मैं तुम्हें बड़ी-बड़ी अच्छी किताबें दूँगी क्या संसार में यही उपन्यास रह गए हैं। मेरा कोर्स पूरा पड़ा है। इसके लिए मैंने उसे छोड़ रखा था, न जाने मेरे जीवन में यह कैसे आ गया। पर आज तो मैं न पढ़ पाऊँगी आज तो मेरा जीवन बदल रहा है अब मैं अपना भविष्य अपने आप बनाऊँगी। इस मधुर को भी दिखा दूँगी कि सुमन वास्तव में सुमन थी। वह धूल में मिल जाने वाली सुमन नहीं थी अपितु देवताओं के सिर पर चढ़ने वाला सुमन था। इन उपन्यासों ने मुझे खराब किया है। वरन् मैं इतनी छोटी अवस्था में क्या इतना जान लेती। मैं अभी तक कितना पागलपन करती रही। अगर वास्तव में मेरी सब बातें कोई जान ले तो मुझे एक क्षण भी घर न रहने दें। फिर एक बार भी तो मैं नहीं पकड़ी गई। चोरी की भी हद होती है।

सुमन सोचते-सोचते रो पड़ी, भगवान मुझे माफ कर देना मैंने जो कुछ किया वह अनजाने में किया है मुझे अभी तक नहीं मालूम था कि प्रेम होता क्या है। यह सोच-विचार कर ही रही थी कि नीचे से आवाज आई—'आज खाना नहीं खाओगी सुमन ?'

'आज भूख नहीं है, सिर में दर्द है केवल चाय पिऊँगी। सुमन ने कहा—

मधु ने फिर फुसफुसा कर चाय बनाना शुरू किया। जल्दी वह चाय बनाकर ले आई।

मधु की बात पर कि अपना बैठे-बैठे हुक्म जताती है। सुमन ने गुस्से में कप को उठा कर बाहर फेंक दिया। कप टूट गया। मधु रोसे हुए अपने कमरे में चली गई। सुमन उठ कर निशा के कमरे में गई। उसके सिर में इतना दर्द हो रहा था कि वह जल्दी ही अपने कमरे में लौट आई। क्या ऐसे ही सो जाऊँ परीक्षा कितनी नजदीक है। सुमन ने कविता की किताब उठाई पर उसे किताब पर कुछ अक्षर दिखाई न दिए। सुमन पुनः रो पड़ी और सोचने लगी—'मधुप जैसे तुमने मेरे हृदय को दुखाया है, वैसे तुम भी जीवन भर ठोकर खाते रहो मैं जीवन भर तुम्हें शाप ही देती रहूँगी। तुम जहां भी रहोगे कभी सुख से न रह पाओगे। मेरा जीवन बरबाद कर सुख की इच्छा करते हो। भगवान तुम्हें सदैव बेचैन ही रखे। सुमन मन के संताप में जल सी रही थी कि 'सो गई हो सुमन, आवाज आई—'अभी नहीं मां जी।' सुमन ने कहा—

'आज बिजली भी नहीं जलाई, क्या पढ़ोगी नहीं बेटी ?'

'नहीं मां, मेरी तबियत ठीक नहीं है। कल से पढ़ूँगी। जीजी के चले जाने से जी नहीं लगता है।'

सेठानी बोली—'क्या पागल हो गई हो सुमन ? तुम भी तो एक दिन यहाँ से जाओगी, मधु भी चली जायगी, लड़कियों का जीवन ही ऐसा है वह तो दूसरे घर की शोभा होती है।' यह कहकर सुमन को वह समझाकर चली गई।

मां के जाने पर सुमन ने पुनः सोचना शुरू किया। मेरी मां कितनी भोली है, दिन भर काम करती रहती है। सबसे पहले उठती है सबसे बाद में सोती है। मैंने आज तक कभी मां की सेवा नहीं की, मुझे मां क्या याद करेगी, एक निशा थी, जो घर का भी काम करती थी

हमेशा फर्स्ट भी आती थी, एक मैं हूँ जो न तो खाया हुआ बर्तन उठा कर रखतीं हूँ, और न कुछ करती हूँ। वह अपने किए हुए को सोच कर अपने को धिक्कारने लगी उसी बीच पुनः माँ चाय लेकर आ गई। सुमन ने चाय पी भी नहीं थी कि उसे ऐस्प्रो की याद आई और एक टिक्की चाय के साथ ली। उसके पिता ने भी आकर उसे समझाया।

जब वह पुनः लेटी तो विचारों के तारतम्य में उलझ गई, वह सोचती कि मैं रात को कैसे चली जाती थी, अगर कोई रास्ते में मिल जाता, होटल में कोई मिल जाता, सिनेमा में कोई देख लेता, तो अच्छा हुआ होता, कम से कम मैं ऐसे शब्द तो न सुनती, मैं बड़ी बेशर्म हूँ और क्या वह बेशर्म नहीं, भगवान उससे बदला लेगा, उसने जैसे मुझे बर्बाद किया है, वह भी बर्बाद होगा।

सुमन ने होम साँइस कि किताब उठाई। अस्थि पिंजर देख सोचने लगी यही सब में होता है। मधुप में भी यही था, मेरे में भी यही है। ऊपर की सुन्दरता पर मैं मर गई, क्या सुन्दरता हमेशा एक सी रहती है ? सोचती हुई पुनः विस्तर पर पड़ रही।

संसार में इससे भी सुन्दर-सुन्दर युवक हैं ! इसे अपनी सुन्दरता पर कितना घमंड था, जैसे संसार की सुन्दरता इसी में समा गई हो, एक मास्टर का लड़का हो कर अपने को राजा समझता हो। मैं तो उस पर थूकती भी नहीं, अगर आज चेचक निकल आये और अंधा हो जाय तो राजा के बेटा का सारा घमंड चूर हो जाय। पर मुझे क्या करना है मेरा मधुप क्या लगता है। मरे या जिये, जैसे गाड़ी में बैठने पर कितने यात्री मिलते हैं वैसे जीवन की गाड़ी में एक वह भी यात्री था, जो आया और चला भी गया। पर सारा कसूर तो मेरा था—मैं ही तो पहले गयी थी, किसी युवक के साथ एकांत में बातें करना, क्या किसी स्थान पर लिखा है।

मधुप ही क्या, कितने ही युवक हैं, पहले टीं, टीं करते हैं बाद में

सारा कसूर हमीं लोगों पर लगाते हैं। सुमन सोचते-सोचते सो गई। आज उसे किसी की इन्तजार में नहीं जागना है। रात को स्वप्न में सुमन ने क्या देखा कि मैं मधुप के साथ कलकत्ता भाग गई हूँ, कलकत्ता कितना बड़ा शहर है। वह रोज मुझे सिनेमा पर ले जाता है। अब रुपया और जेवर सब खतम हो गया, वह बी० ए० पास नहीं है मैंने अभी मैट्रिक पास नहीं किया है, नौकरी कहीं मिलती ही नहीं, मधुप अब रोज गाली बकता है। बेशर्म, कलंकी तूने मेरा जीवन बरबाद कर दिया; सुमन तंग आ गई, वह क्या करे, अकेली कैसे घर जाए, टिकट के लिए भी पैसे शेष नहीं। वह नदी में डूबने के लिए तैयार हो उठी एक दिन वह अंधेरे में ही उसी नदी के किनारे पहुँची, जिस पर किसी दिन मधुप उसे घुमाने के लिए ले जाता था, साथ वाले बगीचे से तोड़ कर फूल नदी में फेका करता था, कभी वहीं नदी के किनारे बैठ चित्र खींचता था, वह सोचते-सोचते कूद पड़ी उसी नदी में। उसी के पीछे मधुप किनारे पर खड़ा हँस रहा था और वह नदी में डूबते हुए चिल्ला रही थी 'मधुप ! निकालो, मैं डूबी जा रही हूँ। मधुप यह सुनकर और जोर से हँसने लगा।

सुमन पानी के साथ बहती चली गई। आगे बहुत दूर उसके पिता जी भी खड़े थे उन्होंने किसी को चिल्लाते हुए देखा। उन्हें ऐसा लगा कि यह सुमन ही है। यह सोचकर कि इसी कलंकिनी ने मेरा नाम बदनाम किया है, कलंक मुझ पर लगाया है, उसे निकालने के लिए आगे नहीं बढ़े और वह बहती आगे बढ़ गई। सेठ के साथ उनकी सेठानी भी गई हुई थीं। सेठ ने सेठानी से सुमन को बहते चले जाने के बारे में बताया, तो माँ की ममता उमड़ पड़ी और बेटी को बचाने के लिए उसी नदी में कूद पड़ी। यह दृश्य जब और लोगों ने देखा तो सुमन और सेठानी को उन्होंने बाहर पानी से निकाला। सुमन उस समय होश में न थी। होश में आने पर उसने देखा कि रात को मैंने कुछ बिछाया नहीं और वैसे सो गई थी, उसने बिजली जलाई, इधर-

उधर देखा कोई न था, घड़ी ने पाँच बजाए, नीचे रसोई में बर्तनों की आवाज आ रही थी। उसने सोचा, शायद माँ जाग पड़ी हैं।

ओह! कितना भयानक स्वप्न था, कहाँ से कहाँ ले गया मुझे, यह तो वही जमुना थी जहाँ पर सैर करने एक दिन मैं मधुप के संग गई थी, वहीं पर उसने मेरा चित्र खींचा था मैं कलकत्ते कैसे पहुँच गई। कितने ऊँचे महल थे। पिता जी ने मुझे देख कर धिक्कारा था। हा भगवान! मेरी जीवन नैया कैसे पार होगी आज तक तो मैंने कभी स्वप्न न देखा था क्या वास्तव में ऐसा ही होता अगर मधुप के साथ भाग जाती, प्रभो तुमने मुझे बचा लिया, नहीं तो मैं डूब जाती, मेरी मृत्यु पर कोई दो आँसू भी न बहाता। वह उठी और माँ के साथ नाश्ता बनाने में मदद देने लगी। कालिज का समय हुआ। सुमन तैयार हो कालिज पहुँची, आज उसका चेहरा ऐसा लग रहा था मानों रात भर वह जागती ही रही हो। एक सखी ने उससे पूछा—'आज तुम्हें क्या हो गया सुमन ?

'कुछ तो नहीं।' सुमन हँसने लगी—मन में वह सोचने लगी क्या एक ही दिन में इतना बदल गई हूँ ?

उसका आज फर्स्ट पीरियड खाली था, सुमन अपनी सखियों को साथ लेकर बाहर चली गई। बाहर दूसरी कक्षा की टीचर खड़ी थी और सब उसी के पास पहुँच गई। 'नमस्ते दीदी जी।'

'नमस्ते, कहो आज मिस नीलम नहीं आई क्या ?'

'नहीं, तभी तो दीदी जी हम सब घूम रही हैं।'

'दीदी जी एक प्रश्न पूछूँ ?'

'हाँ पूछो।'

'दीदी जी, लड़के-लड़कियों में इतना अन्तर क्यों ? वह लोग कुछ भी करें, कोई कुछ नहीं कहता और हम लोगों पर सभी की नजर कड़ी रहती है। यह क्यों ?'

[illegible] बड़ा [illegible] है । यह तो अपनी इज्जत के लिये करना [illegible] ।'

[illegible] भी बता रही थीं कि जब मैं तुम लोगों के बराबर थी तब घर [illegible] स्कूल छोड़ने और लेने आते थे, हमें दरवाजे पर नहीं खड़े होने दिया जाता था, खिड़की से झाँक नहीं सकते थे, मैंने शादी से पहले कभी सिनेमा नहीं देखा था । मेरी माँ कहा करती थी—बेटी ! लड़कियाँ सफेद कपड़े के समान होती हैं जिस पर थोड़ा-सा धब्बा पड़ जाने पर दिखाई दे जाता है और लड़के रंगीन कपड़ा हैं जिस पर कोई भी रंग डालो, तो कठिनाई से दिखाई नहीं देगा । बात हो ही रही थी कि घण्टी बजी, अब सब बोल उठीं, अच्छा दीदी जी कल मिलेंगे, नमस्ते ।'

सुमन आज सारा दिन सोचती रही कि लड़कियाँ सफेद कपड़े के समान हैं, ठीक ही तो है । यह सोचकर अपने और मधुप में समानता करती रही । उसने सोचा यह सचमुच सत्य है । स्कूल में सुमन अन-मनस्क-सी सोचती रही उसी बीच 'सूर ने किस भाषा में पद रचे हैं ?' मिस बनर्जी ने सुमन से पूछा—

सुमन उस समय न जाने क्या सोच रही थी ? उसे पता ही नहीं चला कि क्या पूछा जा रहा है । उत्तर देती भी तो क्या देती ।

'तुलसी ने किस भाषा में पद और चौपाई लिखी हैं ।' दूसरा प्रश्न मिस बनर्जी ने किया—

'सुमन फिर भी चुप थी ।'

'तुलसी का प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन-सा है ?'

सुमन कुछ भी नहीं बोली । ऐसा लगता था कि वह वहाँ पर बैठी ही नहीं है । इसी बीच कमला ने कहा—'दीदी, मैं बताऊँ ।'

मिस बनर्जी सुमन पर नाराज हो गईं और बोलीं—तुम आज दिन भर स्टूल पर खड़ी रहो । तुम अब बिलकुल नहीं पढ़ती हो । तुम्हारा

दिल न जाने कहाँ रहता है। तुम पता नहीं कैसे दसवें की परीक्षा दोगी।'

सुमन मौन थी। दीदी की आज्ञा पाकर खड़ी रही। उसका इसी प्रकार दिन बीत गया, छुट्टी हुई तो सब अपने-अपने घर को चली गईं। सुमन घर पहुँची तो सेठानी जी को बुखार था, सेठ जी, पास बैठे हुए थे। वह बोले—'सुमन जाओ आज नाश्ता भी तुम्हें बनाना है, रात का खाना भी बनाना है। तुम्हारी माँ तो आज नहीं उठ पाएँगी।

'मुझ से कुछ न होगा।' उसने सोचा कि अभी थकी हुई आ रही हूँ, परीक्षा नजदीक है। अब घर का खाना भी बनाऊँगी, सभी करूँगी; यही बड़बड़ाती हुई अपने कमरे में चली गई।

सेठ जी उसके बड़बड़ाने को सुन केवल ठण्डी सांस भर कर रह गये। अगर कहीं दीपक ने उत्तर दिया होता तो उसे घर से अभी निकाल देता, पर इसे क्या कहूँ, कितनी मुँह फट हो गई है। बेटी तो मेरी एक निशा थी, और यह है कि.........। रात को किसी ने खाना नहीं बनाया। मधु अपने कमरे में, सुमन अपने कमरे में, सेठ जी भी अपनी चारपाई पर बिस्तर बिछाकर अपने अतीत और भावी जीवन के बारे में सोचने लगे। सुमन भी न जाने रात भर क्या-क्या सोचती रही। उसकी आँख एक मिनट को न लगी। बीच-बीच में वह दो बूँद आँसू मधुप के नाम पर बहा देती।

१४

✦✦✦✦✦✦

निशा और दीपक का जैसे ही रिक्शा घर के आगे रुका, राकेश दरवाजे पर ही खड़ा मिला। निशा राकेश को देखकर हैरान हो गई।

रिक्शा से उतर कर राकेश के चरण छूकर बोली—'आपने तो·······।' बात पूरी भी न कर पाई थी कि राकेश ने बोल दिया—'हाँ, हाँ, मैंने तार·······।' बात खुलने न पाये और दीपक जानने न पाये इसीलिए निशा ने बात बदल दी।

निशा फिर भी मुँह की ओर ताकती रही। बाहर की आवाज सुनकर रेखा भी भाग करके आ गई।

'भाभी जी आ गईं ! भाभी जी आ गईं।' कहकर चिल्लाती हुई निशा से लिपट गई।

दीपक, निशा, राकेश सब थोड़ा-थोड़ा सामान उठाकर अन्दर पहुँचे। निशा ने अपने सास-ससुर के चरण छुये।

निशा की सास ने कहना शुरू किया—

'बेटी एक पत्र तो डाल देती—'क्यों बेटा दीपक ! अब तो तुम बहुत बड़े हो गये हो। राकेश के विवाह पर तो तुम बहुत ही छोटे थे, दीपक को अपने पास बुलाकर उसे प्यार करने लगी।

'माता जी पत्र भेजने का अवसर ही नहीं मिला, जैसे ही तार····।'

'नहीं माँ, इसने रात को स्वप्न देखा था कि मैं बीमार हूँ तभी भाग आईं हैं।' राकेश बीच ही में बोल पड़ा—

'हट ! तू पागल है। बीमार हों तेरे दुश्मन।'

'अच्छा बेटी, मैं तो खुद तुम्हारे ससुर को भेज रही थी, अच्छा हुआ जो तुम आ गईं।'

'रेखा ! रेखा ! खाना तैयार करो।'

'नहीं माँ, मैं खा-पी कर आई हूँ।' निशा ने कहा—

'यह क्या कह रही हो बहू, पहली बार बेटा हमारे घर आया है। उसे भूखा सुला दें क्या ?'

निशा कमरे में पहुँचकर कपड़े बदले और मुँह-हाथ धोने लगी।

रेखा ने इतने में खाना तैयार कर दिया, निशा और दीपक दोनों ने खाना खाकर सोने की तैयारी करने लगे। 'दीपक आज हमारे पास सोयेगा।' सेठ जी बोले—क्यों दीपक सोयेगा न ? तू तो बोलता ही नहीं, क्या गूंगा है ?'

'नहीं तो।'

दीपक को साथ लेकर सेठ जी अपने कमरे में गये, और पूछने लगे। 'कौन क्लास में पढ़ते हो बेटा।'

'दसवीं में।'

'तू तो यहाँ पहली बार आया है न ?'

'जी, हाँ।' दीपक ने उत्तर दिया—

'बहू क्या कह रही थी तार, तार किसने भेजा थी, यह तार।' सेठ जी जानना चाहते थे।

'यहीं से गया था कि जीजा जी सख्त बीमार हैं।' दीपक ने पूछने पर बताया।

यह लड़का भी पागल है, जब किसी को बुलाना हो, सख्त बीमार है बड़ा अच्छा बुलाने का बहाना है। सेठ जी मुस्करा पड़े। इधर निशा अपने कमरे में पहुँच पूछने लगी —'क्या आप ने तार नहीं भेजा था ?'

'तुमने स्वप्न देखा होगा निशा।'

'हाँ स्वप्न, बहुत अच्छा स्वप्न।'

मैंने सोचा था कि तुम पत्र भेजोगी मैं घर पर कह दूँगा कि निशा आ रही है।' राकेश ने कहा—

'पर तुमने सब गुड़-गोबर कर दिया।' निशा ने कहा—

आपको तो मजाक हो गया और उधर माता-पिता दोनों इतनी चिन्ता कर रहे थे कि क्या कहें। पिता जी तो मेरे साथ ही आ रहे थे।'

'सच कह रही हो ।' राकेश बोला—'और क्या ?' मुझसे कहा, अगर बीमार ज्यादा हों तो तार भेज देना । मैं पहुँच जाऊँगा । आप सुबह ही तार भेज दीजियेगा कि कोई चिन्ता की बात नहीं है ।'

'अच्छा देवी जी ! और कोई आज्ञा हो, बता दीजिए । सबेरे मैं तार भेज दूँगा ।'

'आपने बी० ए० का कोर्स तो खरीद ही लिया होगा ।'

'जब तक श्रीमती जी साथ नहीं जायँगी, तब तक कैसे खरीद लाऊँगा । इसीलिए तो देवी जी को तार दिया था ।'

'मुझे आप वहीं लिख देते कि यह काम है ।'

'देवी जी ! क्या वहीं से लेकर भेज देतीं, ठीक है न ?' राकेश ने हँस कर कहा—

'अच्छी बात है, जल्दी-जल्दी कोर्स खरीदिये आप को कालिज तो ज्वाइन करना नहीं है; रेखा ने तो पुस्तकें खरीद ही ली होंगी । तब तक उसी के साथ पढ़ते ।'

उसी बीच राकेश ने बात को बदलते हुए कहा—'निशा ! एक बात कहूँ ।'

'हाँ कहिए, क्या आज्ञा है ।'

'यदि मेरे पुत्र पैदा हो तो जानती हो उसका नाम क्या रखूँगा ?'

'आप क्या व्यर्थ की बातें करते हैं ।'

'यह व्यर्थ की बातें हैं । सारा संसार पुत्र के........।'

'और नहीं तो क्या ? मैं गाड़ी के सफर से इतना थकी आई हूँ और आप सोने भी नहीं देते, व्यर्थ की बातें करते हैं ।'

निशा को थकान थी । वह बीच-बीच में झपकी ले रही थी । राकेश भी पूर्ण रूप से इस बात को समझ चुका था । अतएव उसने बातें बन्द कर दीं और बोला—'अच्छा, अब सो जाना चाहिए, रात

भी काफी हो गई है। लेकिन उसे नींद नहीं आई। उसने पुनः निशा को उठाकर कहा—'निशा ! आज तुम बड़ी अच्छी लग रही हो।'

निशा ने राकेश की इच्छा का ध्यान रखते हुए अपनी निद्रा को भंग किया और बोली—'आज आप इतने सुन्दर लग रहे हैं कि जी चाहता है अपनी पलकों में बिठा लूँ।'

'आज पूर्णमाशी है न ?' राकेश बोला—आज राकेश अपनी चांदनी को साथ ले पूरी रात जागरण करेगा।

'आप थोड़ा सा काजल अपने मस्तक पर लगा लिया करें नहीं तो आपको मेरी नजर लग जायगी।' निशा ने कहा—'अच्छा ! आज मालूम हुआ कि तुम्हारी नजर भी लगती है।' बातों ही बातों में एक, दो, तीन तथा चार बज गये। सुबह की वेला आ पहुँची और निशा अपने दैनिक कार्य के लिये उठ पड़ी।

राकेश सो गया और जब नाश्ता निशा बना चुकी तो आठ बजे आकर राकेश को जगाया। राकेश को अपने आफिस दस बजे जाना है। वह जल्दी ही उठकर खा-पीकर तैयार हो गया। निशा सोचती कि संयम से मनुष्य को चलना चाहिए। संसार में बहुत से काम करने हैं। अभी राकेश को फार्म भरवाना है, परीक्षा दिलानी है। अक्सर वह इसी प्रकार भावी जीवन के बारे में सोचती रहती थी।

राकेश को फार्म भरना है। फिर भी वह कितना लापरवाह है। मानो उसे कोई चिन्ता ही न थी।

दूसरे दिन दीपक चला गया। राकेश उसे स्टेशन पर जाकर गाड़ी पर बिठा आया था। जाते समय दीपक से निशा ने कहा—'दीपक !' पिता जी से जाकर कह देना कि अब जीजा जी ठीक हैं, कोई चिन्ता न करें। मेरा नमस्ते सबसे कहना। मधु, सुमन को कहना कि मन लगाकर पढ़ें। माता जी को कहना, ज्यादा चिंता नहीं करेंगी, मैं जल्दी ही आ जाऊँगी। तुम भी मेहनत करते रहना दीपक।'

दीपक चला गया। रेखा भी स्कूल चली गई।

सेठानी जी भी बहुत दिनों से घर में अकेली होने के कारण कहीं गई न थीं, वह भी कहीं चली गईं। अब निशा घर में अकेली ही थी वह अपने कमरे में जाकर रोने लगी इस एकाकीपन में। वह सोचने लगी बेचारी सुमन की क्या दशा होगी, वह अकेली कैसे रहेगी, हो सकता है वह मैट्रिक में फेल हो जाय, मैं क्या करूँ, मां-बाप का बेटी पर अधिकार ही क्या ? ब्याह के बाद लड़की दूसरे की हो जाती है। वह सोचती थी कि माता जी की उमर ढलती जा रही है। वह घर का काम कैसे करेगी। इस प्रकार निशा सोचते-सोचते सो गई। उसकी नींद तब खुली जब दरवाजे पर बार बार खट-खट हो रहा था।

निशा ने दरवाजा खोला तो देखा राकेश बाहर खड़ा था। निशा घबड़ा गई कि इतनी जल्दी कैसे आ गये। उसने हकबकाकर पूछा— 'आज आप जल्दी आ गए।'

'अगर बुरा लगा हो तो लौट जाऊँ।' राकेश बोला—

निशा ने कुछ उत्तर नहीं दिया अपने कमरे में चली आई। राकेश पीछे से आकर बोला—

'क्या घर में और कोई नहीं है ?'

'नहीं।' निशा ने उत्तर दिया—

इसीलिए आप दरवाजे बंद कर रो रही थीं वहाँ मुझे टेलीफोन पहुँचा कि तुम अकेली हो, तो मैं भागा हुआ चला आया हूँ।

मेरा जी यकायक घबड़ा गया, इसीलिए दौड़ा हुआ चला आया हूँ। कितनी फिक्र तुम्हारी रखता हूँ और तुम हो कि कहती हो, जल्दी आ गए।'

निशा को हँसी आ गई और वह राकेश के निकट आ गई। दोनों बड़े ही प्रसन्न थे।

+ + +

शान्ता अकेली ही होती तो शायद शान्ता से भावज इतना महसूस न

करती पर जहाँ छः छः लोग आकर घर बैठ गए हों, वह फुस-फुस करने लगी। शान्ता निराश हो गई, नाहक वह घर से भाग आई है। मैं रोटी के लिये भी महँगी हूँ ? दिन-रात काम करती हूँ ? मेरा राजू दसवीं कर ले बस उसके बाद देखा जायगा। कितना अच्छा हो अगर वे मुझे लेने आ जायँ, पर मुँह माँगा बरदान कहाँ मिलता है। वह सोचने लगी कि अलग चूल्हा जला लिया करूँ, स्कूल में सर्विस कर लूँ। पर दुनिया क्या कहेगी। अपने माँ-बाप के घर शान्ता अलग चूल्हा जलाती है। क्या मेरे भाग्य में यही लिखा था। बचपन में ही माँ ने क्यों न मार दिया, सोचकर जितना सुखी थी उतना दुखी हो गई। जब यह बातें शान्ता के पिता के कानों पर पड़ीं तो वह चिल्लाकर कहने लगे, खबरदार— अगर मेरी बेटी को किसी ने कुछ कहा। धन्य है मेरी शान्ता बेटी जिसने मेरी लाज रखी है। अगर पहले मुझे भोला के विषय में मालूम होता तो क्या मैं अपनी चाँद जैसी बेटी को उसके गले बाँध देता। अगर कोई और होती तो चार दिन वहाँ न टिकती पर मेरी बेटी ने कितने वर्ष वहाँ रोते बिता दिए हैं। जब तक मैं जीवित हूँ इसको कोई कुछ नहीं कह सकता।

'मुझ में हिम्मत है ! मैं उसके पाँच बच्चों को क्या दर्जन भर बच्चों को खिला सकता हूँ।'

इतना कह वे शान्ता के पास गये और बोले—बेटी, खबरदार अगर तूने एक भी आँसू गिराया, अभी तुम्हारा बाप जीवित है उसके जीवित रहते तुम्हें किसी बात की चिन्ता नहीं है। मैं खुद तुम्हारा विवाह करके पछता रहा हूँ। मैं अब उस भोला के साथ कभी अपनी बेटी बिदा नहीं करूँगा। वह हीरे की पहचान क्या जाने !

'नहीं पिता जी, वह घर मेरा है।'

'यह घर क्या तुम्हारा नहीं है ?'

'नहीं पिता जी, वही घर मेरा है।

'अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम खुशी से जाओ मैं इनकार नहीं करूँगा। अगर तुम न जाना चाहो तो तुम्हें यहाँ किसी बात की कमी नहीं।'

'माता जी।' राजू बोला—

'क्या है बेटा ?'

'आज बिल्लू कह रहा था, कि पिता जी दुकान पर नहीं जाते, बहुत बीमार हैं।'

'कहाँ मिला था वह तुम्हें ?' शान्ता ने पूछा—

'कालिज में।' वह यह भी कहता था मुझे अगर आप यहाँ नहीं पढ़ाने आते तो मैं घर पर ही आ जाया करूँ।'

'तुमने क्या कहा ?'

'माता जी से पूछूँगा।' राजू ने कहा—

'अच्छा, देखा जायगा, पहले चलो अपने घर चलें।'

'नहीं माँ, मैं घर नहीं जाऊँगा।'

'राजू ! तुम क्या पागलपन की बातें करते हो। वहाँ तुम्हारे पिता हैं। दुकान से तो उन्हें जवाब मिल गया था, क्या फिर वहाँ जाने लगे थे।'

शान्ता ने सोच-विचार करके अपने पिता जी से कहा—

'अच्छा पिता जी, मैं रोज तो आती ही रहती हूँ, अब मुझे वहाँ जाना चाहिये, मैं कोई छोटी तो हूँ नहीं।'

'अच्छा बेटी, ईश्वर तुम्हें इससे भी अधिक बुद्धि दे।'

शान्ता वहाँ से विदा होकर घर की ओर चल पड़ी। जैसे ही वह पाँव आगे रखती थी उसका पाँव पीछे पड़ता था, वह डर गई थी कि भोलानाथ सख्त बीमार हैं। ईश्वर मेरी उमर भी उन्हें दें, मैं उनके बिना न रह पाऊँगी, चाहे जैसे भी हैं, हैं तो मेरे ही पति, वह मन ही मन उनके अच्छे हो जाने की कामना करने लगी। वह सोचती रही

कि पति लूला, लँगड़ा, कैसा भी हो। स्त्री हमेशा अपने पति के चरणों में ही मरे। बिना उसके औरत की कोई भी इज्जत संसार में नहीं होती। वह अपने घर पहुँच गई। भोलानाथ विस्तर पर पड़े थे। लेटे-लेटे ही बोले—'आ गई हो शान्ता।'

'जी हाँ।' आपकी तबीयत कैसी है। अब तो आगे से आराम है न? ईश्वर आप को मेरी भी उमर दे, मैं तो यही बिनती करती हूँ।

'ऐसा न कहो शान्ता, तुम तो इन बच्चों के साथ रह लोगी पर मैं तो एक दिन भी न रह पाऊँगा।'

किस डाक्टर की दवाई कर रहे हैं आप ?'

'अभी तो किसी डाक्टर की दवा नहीं ली है।'

'राजू, जाओ डाक्टर को बुला लाओ।' शान्ता ने कहा—

'रहने दो शान्ता, कोई आवश्यकता नहीं है।'

राजू डाक्टर बुलाने चला गया, इधर शान्ता अपने पति का सिर दबाने लगी।

'क्यों राजू बिल्लू को पढ़ाने क्यों नहीं जाता' भोलानाथ ने कहा—

'मैंने ही रोक दिया।'

'क्यों ?' भोलानाथ ने कहा—

'आप कहें तो चला जायगा।'

'नहीं, जैसे तुम्हारी इच्छा हो।' भोलानाथ करवट बदल कर बोले—

शान्ता डर गई। पति के विचारों में एकदम इतना परिवर्तन, भगवान रक्षा करना, वरना मैं कहीं की न रहूँगी। ईश्वर तेरे सिवा मेरी बात इस समय कोई नहीं सुनने वाला है।

डाक्टर आया, टैम्परेचर १०४ था। भोलानाथ के शरीर पर हाथ न रखा जाता था। शान्ता बड़ी हैरान थी। डाक्टर ने धीरे से

शान्ता ने कहा—'हालत बड़ी खतरनाक है। अगर कुछ बुखार और बढ़ गया तो रोगी न बचेगा।'

शान्ता यह सुनकर काँप उठा। किस अभागे के दर्शन करके वह इस घर से गई थी। वह अब कभी न जायगी, हाथ जोड़ कर बोली—'डाक्टर साहब बचाइए मेरे सुहाग को, जो आप माँगेंगे, मैं देने को तैयार हूँ।'

'चिन्ता न करो, यह दवाई है। तीन-तीन घंटे पर खुराक देना। सुबह टैम्परेचर लेकर देखना, अगर बुखार कम हो तो बच्चे को भेज देना, मैं दवाई बना दूँगा। अगर इतना ही रहा तो मैं खुद ही आ जाऊँगा।' डाक्टर ने सान्त्वना देते हुए कहा—

डाक्टर चला गया। शान्ता रात भर जागती रही। एक-एक घण्टे के बाद भोलानाथ से पूछती—अब कैसा हाल है ?

रात भर शान्ता आँसू बहाती रही और दिल में न जाने क्या-क्या सोचती रही। वह अपने पति के शीघ्र अच्छा होने की कामना करने लगी। उसने सुबह देखा तो बुखार कम था। राजू दवाई ले आया। इस प्रकार शान्ता प्रत्येक देवी-देवता को मनाती। उसने पति से चोरी करके दो सौ रुपया जोड़ रखा था, सब खर्च कर दिया। न जाने वह कितनी रातें जागती रही। उसकी सेवा सफल हुई। भोलानाथ अच्छे हो गए। अब वह चल फिर सकते थे। इसी बीच में बिल्लू और सेठ कितनी बार आ चुके थे। शान्ता जान गई कि सेठ और सेठानी का ढंग एक नहीं वैसे ही बहुत अन्तर है। भोलानाथ अब दुकान पर चले जाते थे। राजू अब तीनों ट्यूशन घर पर पढ़ाया करता था। खुद रात भर जाग-जाग कर पढ़ा करता था। शान्ता ने कितनी बार रोका कि छोड़ दो, पर राजू ने नहीं छोड़ी, भोलानाथ को अब भी कमजोरी बहुत थी, कभी-कभी वह दुकान पर चले जाते थे। कभी नहीं ! शान्ता अपने देवी-देवताओं की मनौती किया करती थी।

एक दिन शान्ता बोली—'आप दुकान के पास ही मकान क्यों नहीं ले लेते।'

'क्या किराये पर ?' भोलानाथ ने कहा—

'जी हाँ।' शान्ता ने उत्तर दिया—

आगे उसने कहा, 'कि इस मकान को किराये पर उठा दीजिए। यह ठीक रहेगा।'

'जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वही ठीक रहेगा।'

इसी के साथ ही साथ भोलानाथ ने पूर्ण रूप से मकान बदलने की स्वीकृति दे दी। लेकिन उसने यह भी कहा कि मकान आठ-दस रुपये किराये से ज्यादा न हो। यह समझाकर भोलानाथ दुकान पर चले गये। उनके जाने के बाद शान्ता सोचने लगी—भगवान ने इतना परिवर्तन इनमें कैसे कर दिया। ईश्वर इन्हें बड़ी उमर दें, बिवाह के बाद पति के सिवा कौन किस का होता है अभी तो यह सब बच्चे ही छोटे हैं। इनके खेलने-खाने के दिन हैं अभी यह सब बेचारे कर ही क्या सकते हैं। शान्ता ने आज सारा दिन मकान की खोज में बिताया। अन्त में जब बहुत खोज के बाद भी उस मकान का पता न चला तो वह सुमन के घर पहुँची। सेठानी जी बीमार थीं। शान्ता उनके पास बैठ गई। सेठानी बोली—बहुत दिनों बाद आई हो शान्ता, शायद निशा के जाने के बाद आज आई हो।'

'जी हाँ, वे बीमार हो गए थे इसीलिए नहीं आ सकी, मौका ही नहीं मिला आने का।' अब कुछ तबियत ठीक हुई तो आ पाई हूँ। मैं सोचती थी कि कहीं आपके आस-पास मकान मिल जाय तो ठीक रहे आपकी सेवा भी पास में रहकर अधिक कर सकूँगी।'

'आज ही मेरे घर के बगल में एक मकान खाली हुआ है। शायद कोई आ न गया हो। यह कहते हुए सुमन को बुलाया और कहा—सुमन तुम शान्ता के साथ जाकर उस मकान को देख आओ, जो खाली हुआ है।'

सुमन ने कहा—'मकान बड़ा छोटा है, कैसे गुजर होगा। वैसे किराया पाँच रुपया ही था लेकिन अब कहीं और किराया न बढ़ा ले।'

सुमन शान्ता के साथ घर देखने चली गई। मकान मालिक ने अब आठ रुपया किराया कर दिया है फिर भी शान्ता ने उसे ठीक कर ही लिया। फिर वह सेठानी जी से विदा होकर अपने घर चली गई। यह मकान सेठानी जी के घर के पास ही था।

१५

ज्यों-ज्यों परीक्षा नजदीक आ रही थी सुमन की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। सेठानी जी अक्सर बीमार ही रहा करती थीं। मधु अभी छोटी है, सुमन को ही रो-धोकर घर का काम करना पड़ता था। लेकिन अब शान्ता ने उसकी चिन्ता बहुत कम कर दी थी। वह सुबह ही अपना खाना बनाकर इधर आ जाया करती थी सब काम सँभाल लिया करती थी। शेष दिन सेठानी के पास बैठकर बिता देती थी। राजू शाम को कालिज से आता तो माँ को बुला लेता था। सेठानी जी भी अब आगे से बहुत कुछ ठीक थीं। क्योंकि वह अपने मन की बातें शान्ता से कर लिया करती थीं मानो निशा ही शान्ता है।

मानव की सब से बड़ी यही कमजोरी है कि जब तक वह अपने मन के भाव किसी पर प्रकट नहीं करता वह अशान्त रहता है। इधर सेठानी जी निशा और शान्ता में कभी अन्तर समझती ही न थीं। शान्ता सुबह अपने पति को बिदा कर सेठानी के यहाँ चली आती। पीछे

से उमेश रमेश, सब सुबह का खाना खाकर चले जाते थे अगर कभी कम हो जाता तो सेठ जी के यहाँ चले आते वहीं से खाकर चले जाते। शान्ता कभी अपना नया कपड़ा न खरीदती थी। सेठानी जी के वह पुराने कपड़ों से ही काम चला लेती थी। वह कहती थी कि कुछ रुपया जोड़ लूँ ताकि बच्चों को कुछ बना सकूँ। मैंने तो सुख नहीं देखा मेरे बच्चे तो देखें। नहीं तो कहीं वे भी इन्हीं की तरह बीस रुपया पर गुजारा करेंगे। अगर कभी कोई पूछता तो वह कहती मेरे पास बहुत रुपया है मेरे लड़के योग्य बन जायँ बस—मुझे और कुछ नहीं चाहिये।

अब भोलानाथ अधिकतर चुप रहते थे। जो काम करे शान्ता, उन्हें किसी से कुछ मतलब नहीं! सुबह उठकर दो घण्टा तुलसी के पेड़ के पास बैठ भगवान का नाम जपते उसके बाद नाश्ता कर दुकान पर चले जाते। खाना कभी राजू, कभी उमेश स्कूल जाते समय दे आते। कभी तो शान्ता सुबह ही पूरा खाना बना देती, तभी वह वहीं से खाकर चले जाते। शान्ता अब भी खुश न थी। वह मन में सोचती कि कभी तो वह मुझे बात-बात पर टोकते रहते थे, और आजकल वह कुछ कहते ही नहीं, जो मिल जाय उसी में शान्त रहते हैं। क्या भगवान मेरा स्वामी मुझसे छीनना चाहता है! क्या वह जंगलों में जाने की ही सोचा करते हैं! कहीं वह मुझे छोड़कर चले गये तो····।' मैं राजू को और न पढ़ाऊँगी, डाक्टर बनना उसके भाग्य में नहीं है, मैं उनकी मार, डाँट सह सकती हूँ, पर उनका मौन मुझे खलता है।

रात को तीन बजे ही उठ बैठना, समाधि लगा कर बैठ जाना, प्रभु अभी तो यह बच्चे छोटे हैं, मैं भी छोटी हूँ जो तुम कहो मैं करने को तैयार हूँ पर मेरा पति मुझसे मत छीनना। वह सदैव कामना करती रहती थी। शान्ता अधिकतर उदास सी रहने लगी, सेठानी के घर जाती जो वह बात करती, हाँ में हाँ मिलाती रहती उसे कुछ पता न

चलता था कि क्या कहा जा रहा है। एक दिन राजू ने पूछा—'मा! तुम क्यों उदास रहती हो ?'

'नहीं तो बेटा, मैं कहाँ उदास रहती हूँ।

'नहीं माँ, मैंने तुझे कभी हँसते हुए नहीं देखा!' राजू ने कहा—

'बेटा! तुम सब ट्यूशन छोड़ दो, मन लगा कर पढ़ो, शायद दसवीं के बाद तुम आगे न पढ़ सको।' वह उदास मन से कहने लगी।

'क्यों माँ ? ऐसी क्या बात है' ?

'बेटा! और भी तुम्हारे भाई हैं। फिर यह छोटी बहिन है, इन सबका खर्च भी तो मेरे..........।' यह कह कर उसके हृदय की आह आँखों के रास्ते निकल पड़ी।

बात काट कर राजू बोला—'माँ मेरी तो फीस माफ है। विशेष खर्चा तो मुझ पर नहीं होता। हाँ अगर तुम कहो तो मैं अभी छोड़ देता हूँ। आपकी आज्ञा मानना मेरा परम धर्म है।'

'नहीं बेटा,! ऐसी बात नहीं।' ठंडी साँस भर कर शान्ता चुप रह गई।'

'माँ, तुम सच क्यों नहीं कहती ? पहले तो तुम कहती थी मैं तुम्हें डाक्टर बनाऊँगी।' राजू के हृदय में आगे पढ़ने की बड़ी लगन थी।

'बेटा! अगर सबके मन के स्वप्न पूरे होते जायँ तो फिर मानव उदास क्यों रहे। तुम्हें पता नहीं कितनी आधी खिली कलियाँ बिना खिले ही मुरझा जाती हैं, धूल में इरादे मिल जाते हैं। इसी प्रकार मनुष्य के कुछ स्वप्न अधखिले ही रह जाते है, कुछ ही फूल बनते हैं। भगवान की इच्छा के विपरीत मनुष्य का कुछ बस नहीं चल पाता है।

नहीं माँ! मैं अभी पढ़ूँगा, अवश्य पढ़ूँगा। आपके हृदय की भावनाओं को सफल करूँगा।

मैं दिन-रात मेहनत करूँगा, जी-जान लगाकर कष्ट सहकर पढ़ूँगा। पिता जी की भी सेवा करूँगा। वह बीमार हैं, अब मैं उनकी

जिम्मेदारी अपने कंधों पर लूँगा।' राजू कहते-कहते चुप हो गया, माँ की उदासी का कारण वह सब समझ गया था और बोला—'मां ! तुम अब बहुत परेशान न रहा करो, स्वास्थ्य खराब हो जायगा। सेठ के लड़के तथा और सब यहीं पढ़ने आते हैं और भी लड़के पढ़ाने को बुला लिया करूँगा। इसी तरह काम चल जायगा। फिर बिल्लो को तो पढ़ाना ही पड़ेगा क्योंकि वह बड़ा प्यार करता है मुझे।'

माँ की ममता पुत्र को प्रति अपार होती है। वह स्वयं कष्ट सहकर काट सकती है पर पुत्र को सदैव सुखी देखना चाहती है। यही कारण था कि माँ के हठ करने पर राजू को दो ट्यूशन छोड़ने पड़े।

राजू उस रात कुछ न पढ़ सका। उसे पढ़ने का शौक था। सब मास्टर उसे चाहते थे। फिर दीपक, .मधु सब डाक्टर बनेंगे और मैं; ठीक है वह सब अमीर हैं, मैं गरीब हूँ, योग्यता कौन देखता है ? सब धन ही तो देखते हैं। धनवालों का ही यह संसार है, धन से चाहे संसार खरीद लो' पर योग्यता से संसार नहीं खरीदा जा सकता है। वह सब मन ही मन सोचकर उदास हो जाता था।

दीपक, सुमन, मधु तीनों अपने कमरे में पढ़ रहे थे। वह अक्सर रात को यही शर्त लगाते थे कि राजू को सुला कर सोवेंगे। उमेश तो रात को पढ़ता न था, वह सुबह जल्दी उठता था, राजू सुबह उठ न सकता था इसलिए कि वह रात को दो-तीन बजे तक अवश्य बैठता ! दीपक तो बेचारा दस बजे ही ऊंघने लगता। इधर सुमन और मधु दोनों बराबरी करने लगतीं। मधु भी सो जाती पर सुमन न सोती, कभी-कभी मधु सुमन के साथ राजू के सो जाने पर सोती।

जिस दिन राजू के सो जाने पर यह बहिन या भाई कोई भी सोता; सुबह मिलते ही राजू से कहते—क्यों राजू रात को तो हार गए थे न?'

राजू उत्तर देता—'अच्छा आज देखेंगे; कौन जीतता है ?'

आज जब तीनों बहिन-भाइयों ने खिड़की से देखा तो राजू के घर

अंधेरा था ! दीपक राजू के घर पहुँचा और पूछने लगा—'क्यों, आज राजू बीमार है क्या ?'

'नहीं तो।' शान्ता ने उत्तर दिया—'आज वह पढ़ नहीं रहा। दीपक ने कहा—'बेटा ! तुम उसे अपने पास ले जाओ, वहीं आज पढ़ लेगा, आज वह उदास है।'

दीपक राजू की उदासी का कारण बिना पूछे ही राजू को चारपाई से उठाया और उसे खींच कर अपने घर ले आया। दीपक पहले इतना राजू को न चाहता था। पर जब से वह घर के नजदीक आ गया था तभी वह उसे भाई के समान चाहने लगा था, साथ ही स्कूल जाना, मिलकर साथ ही खेलना-कूदना होता था। सुमन मधु उनके प्यार को देखती रह जातीं। राजू सिर नीचा करके कुर्सी पर बैठ गया।

दीपक ने पूछा—'क्यों राजू, आज तबियत ठीक नहीं है क्या ?'

राजू चुप रह गया, वह कुछ भी नहीं बोला।

'सुमन जाओ, एक कप चाय बना लाओ।' दीपक ने कहा—

नहीं मैं चाय नहीं पीऊँगा।' राजू बोला—

यह कहते-कहते वह रो पड़ा और आगे कहा—'कि मैं अब नहीं पढ़ूँगा। आज माँ ने मुझसे कह दिया है।'

'बस इतनी सी बात ? अभी यह दसवीं कर लो, बाद में हम तुम दोनों एडमीशन लें लेंगे, परेशान होने की बात क्या है ?'

'परन्तु माँ तो नहीं मानती, फिर उमेश, रमेश भी तो पढ़ेंगे, खर्च कहाँ से चलेगा।'

'भाई तुम घबड़ाते क्यों हो, हम तो अभी जीवित हैं।'

'नहीं दीपक बस, तुम डाक्टर बनना और मुझे अपनी दुकान पर कम्पाउण्डर बना लेना, यही मेरे लिये ठीक है।'

'मजाक न करो दोस्त, मैं तुझे भी डाक्टर बनाऊँगा।'

'माँ तो नहीं मानती, राजू ने सिर ऊपर किया, मां खर्च से डरती

जिम्मेदारी अपने कंधों पर लूँगा।' राजू कहते-कहते चुप हो गया, माँ की उदासी का कारण वह सब समझ गया था और बोला—'मां! तुम अब बहुत परेशान न रहा करो, स्वास्थ्य खराब हो जायगा। सेठ के लड़के तथा और सब यहीं पढ़ने आते हैं और भी लड़के पढ़ाने को बुला लिया करूँगा। इसी तरह काम चल जायगा। फिर बिल्लो को तो पढ़ाना ही पड़ेगा क्योंकि वह बड़ा प्यार करता है मुझे।'

माँ की ममता पुत्र को प्रति अपार होती है। वह स्वयं कष्ट सहकर काट सकती है पर पुत्र को सदैव सुखी देखना चाहती है। यही कारण था कि माँ के हठ करने पर राजू को दो ट्यूशन छोड़ने पड़े।

राजू उस रात कुछ न पढ़ सका। उसे पढ़ने का शौक था। सब मास्टर उसे चाहते थे। फिर दीपक, .मधु सब डाक्टर बनेंगे और मैं; ठीक है वह सब अमीर हैं, मैं गरीब हूँ, योग्यता कौन देखता है? सब धन ही तो देखते हैं। धनवालों का ही यह संसार है, धन से चाहे संसार खरीद लो' पर योग्यता से संसार नहीं खरीदा जा सकता है। वह सब मन ही मन सोचकर उदास हो जाता था।

दीपक, सुमन, मधु तीनों अपने कमरे में पढ़ रहे थे। वह अक्सर रात को यही शर्त लगाते थे कि राजू को सुला कर सोवेंगे। उमेश तो रात को पढ़ता न था, वह सुबह जल्दी उठता था, राजू सुबह उठ न सकता था इसलिए कि वह रात को दो-तीन बजे तक अवश्य बैठता! दीपक तो बेचारा दस बजे ही ऊंघने लगता। इधर सुमन और मधु दोनों बराबरी करने लगतीं। मधु भी सो जाती पर सुमन न सोती, कभी-कभी मधु सुमन के साथ राजू के सो जाने पर सोती।

जिस दिन राजू के सो जाने पर यह बहिन या भाई कोई भी सोता; सुबह मिलते ही राजू से कहते—क्यों राजू रात को तो हार गए थे न?'

राजू उत्तर देता—'अच्छा आज देखेंगे; कौन जीतता है?'

आज जब तीनों बहिन-भाइयों ने खिड़की से देखा तो राजू के घर

सवाल करते-करते बारह बज गए। दीपक ने पूछा—'क्या आज सोओगे नहीं ?'

'जैसा कहो, करूँ।' राजू ने कहा—

'मैं तो कहता हूँ कि रात भर सोएँ ही नहीं।' दीपक बोला—

'ऊँघ तो अभी से रहे हो।' मधु ने हँसते हुए कहा—

'चलो सुमन दीदी ! हम लोग अपने कमरे में चल कर सोएँ। सुबह उठना भी तो है।'

'हाँ चलो।' सुमन और मधु दूसरे कमरे में सोने चली गईं। दीपक और राजू ने भी लाइट बुझा कर एक ही बिस्तर पर लेट गए।

+ + +

रात भर मधु सोचती रही कि किस प्रकार राजू की मदद की जाय जिससे इसका पढ़ना न छूटे। कितना होशियार यह लड़का है। सुबह उठते ही वह अपने कमरे में जाकर अपना बक्स खोल उसमें से परस निकाल रुपये गिनने लगी, उसमें केवल दस-दस रुपये के दस नोट थे। वह सोचने लगी अगर उसको सब दे देती हूँ तो मैं क्या करूँगी ?' फिर सोचती कि माँ से माँग लूँगी, एक दिन सिर दबा दूँगी, बस रुपये मिल जाएँगे, या पिता जी से किताब कापी लेने के बहाने माँग लूँगी ! फिर मुझे अभी तो चाहिये ही नहीं, देखा जायगा। न जाने कितनी देर वह इन्हीं रुपयों को हाथ में ले सोचती रही। 'चाय पी लो मधु।' सुमन ने रसोई घर से उस समय आवाज दी।

मधु ने रुपयों को नोटबुक में रख लिया और रसोई घर की ओर चल पड़ी। अभी तक उसने मुँह-हाथ तक नहीं धोया था। शान्ता भी अभी तक घर नहीं आई थी। मधु ने आते ही पूछा—'क्या शान्ता अभी तक नहीं आई ?'

'वह क्या हमारी नौकर है, जब जी आयेगा तभी तो आयगी, उसे भी तो घर का काम करना होता है।' सुमन ने कहा—मधु ने

चाय न पी और सब्जी काटने के लिये बैठ गई तो सुमन ने कहा—'रानीं जी, पहले चाय तो पी लीजिए।'

मधु बिना मुँह-हाथ धोए हुए ही चाय पी गई और सब्जी काटने में जुट गई और सुमन खाना बनाने में। अभी वह खाना बना भी न पाई थी कि शान्ता अपनी बच्ची को गोद में लिये आ पहुँची। सुमन ने उसकी बच्ची को अपनी गोद में लेकर पूछा—'नाम क्या रखा है इसका दीदी ?'

'अभी तो कुछ भी नहीं रखा, तुम्हीं रख दो न ?'

'अच्छा, रश्मि, नीरू, सुधा, शशि, बताओ कौन सा नाम पसन्द है ?'

'जो तुम्हें पसन्द हो, वही नाम रख लो।'

'अच्छा इसी से पूछते हैं। मधु एक कागज और पैन्सिल ले आओ, पर्ची बनाएगें जो इसने उठा ली, वही इसका नाम होगा।'

मधु ने कागज और पेन्सिल लाकर दिया। सुमन चार कागज के टुकड़ों पर नाम लिखकर उसके आगे फेंक दिये। उसने एक कागज उठाकर अपने मुँह में डाल लिया। कागज देखा गया तो उसमें 'सुधा' लिखा था।

'वाह री सुधा, जब तुम्हारा भाई डाक्टर बनेगा, तो तुम्हारे ही नाम पर दुकान खोलेगा।'

'ऐसा कहाँ है भाग्य मेरा।' शान्ता ने कहा—

'ऐसा न कहो दीदी ! यह सब अच्छा नहीं लगता। रुपया-पैसा हम खर्च करेंगे, परेशान न हो।'

ठंडी साँस भरकर शान्ता बोली—'फिर जो भाग्य में है. वही होगा।'

मधु अपने कमरे में जाकर नोट बुक को उठाकर शान्ता के घर चल पड़ी। वहाँ पहुँचते ही बोली—

'राजन् ! राजन् !

'कौन है ?' राजू ने कहा—

'मैं हूँ मधु ।'

'बैठो कमरे में, मैं अभी नहा कर आ रहा हूँ ।' राजू ने कहा—

मधु कमरे में बैठकर राजू की एक कापी उठाकर सुन्दर-सुन्दर शब्द बनाकर लिखने लगी । उसने लिखा—'राजन् ! तुम्हें मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करना ही पड़ेगा ।'

'कहो क्या काम है मधु ?' राजन् कमीज गले में डालता हुआ अन्दर आया ।

मधु ने बहाना करके कहा कि सवाल पूछना है ।

'लेकिन किताब तो मैं भूल ही आई' इतना कहकर वह वहाँ से भाग गई । राजन् कुर्सी पर बैठ गया पेन्सिल उठा रफ कापी खोली, इतने नोट देखकर वह हैरान रह गया । उसने देखा, लिखा है—'राजन् ! यह तुच्छ भेंट ।'

राजू से वह अब राजन् बन गया । मधु ने इतने रुपये कहाँ से ले लिये ? क्या सेठों के घर इतने-इतने रुपये एक लड़की के पास भी होते हैं ? फिर मैं क्या काम करूँगा इन रुपयों का ? वह सोचने में मग्न था कि मधु भागती आ गयी ।

'यह रुपये तुम्हारे हैं मधु ?' राजू ने पूछा—

'हाँ, मैंने ही रखे हैं और तुम्हें लेना ही होगा । मैंने थोड़े-थोड़े करके इकट्ठे किये हैं ।

'किसी का धन मैं क्यों लूँ ।' राजू ने कहा—

मधु चुप रह गई ! वह क्या उत्तर दे, उसकी समझ ही में न आया । बोली—

'यह ले लो और फिर कभी न दूँगी ।'

'मैं इन रुपयों को क्या करूँगा मधु ?' तुम अभी कितना पढ़ोगी ? राजू ने पूछा—

'बस, अब आगे नहीं पढ़ूंगी ।' मधु ने उत्तर दिया ।

'क्यों ?'

'तो फिर क्या करोगी ? क्या अभी से शादी रचने की इच्छा है ? राजू ने कहा—

'नहीं राजन ! ऐसा अभी क्यों होगा ?' अभी तो सुमन दीदी की ही बात है, शादी करना ही नहीं चाहती ।

वह कहती है 'कि मैं पुरुषों से घृणा करती हूँ ।'

'तो फिर मुझसे भी घृणा करती होगी ?'

'नहीं ।'

वह तो तुम्हें बहुत प्यार करती हैं । वह तुम्हारे लिए ही सदैव सोच-विचार में लगी रहती है ।

'फिर तुम पढ़ोगी कि नहीं ?'

'हाँ अवश्य पढ़ूँगी 'जितना तुम कहोगे उतना पढ़ूँगी ।'

अच्छा बताओ, सुमन पुरुषों से घृणा क्यों करती है ? तुम जानती हो ? राजू ने पूछा—

'हाँ जानती हूँ, पर अभी नहीं, बाद में बताऊँगी ।'

'अच्छा सवाल कौन-सा है ? दिखाओ ।'

'अब देर हो गई है रात को समझ लूँगी आओगे न ?'

'आज नहीं आऊँगा ।'

'क्यों ?'

'अच्छा, मैं अब जा रही हूँ ।' मधु ने कहा—

'यह रुपये लेती जाओ । राजू ने कहा—

नहीं, मैं यह रुपये नहीं ले जाऊँगी ।'

'मधु भाग कर चली गई । राजू देखता रह गया । जमाना बद-

लता जा रहा है। इतनी छोटी अवस्था में इतना जान लेना, जो बातें मनुष्य बीस साल तक न जान पाता था आज वही दस साल का बच्चा जानता है। सुमन पुरुषों से घृणा करती है, मधु भी तो सुमन की बहिन है। यह भी ठोकर खायगी ! पर नहीं इसे मैं ठोकर न खाने दूँगा। 'कालिज नहीं चलोगे ?' दीपक ने बाहर खड़े हो कर पूछा—

'खाना खा लूँ अभी चलता हूँ राजू ने उत्तर दिया— और फिर अपनी रफ कापी उठा कर अपने बाक्स में रखकर जल्दी से एक रोटी खाकर दीपक के संग चल पड़ा। रास्ते में दोनों ने एक होटल में चाय पी तो राजू ने देखा कि अमीर लोग कितना खर्च करते हैं। मालूम होता है कि कहीं से मुफ्त पैसा आता है। इससे तो अच्छा होता कि चने पर आदमी गुजर कर ले और सादा जीवन बिताए। दोनों हँसी-खुशी अपने स्कूल पहुँच गये। राजू अपने हृदय के भाव को रोक नहीं सका और दीपक से कहने लगा कि 'आज के संसार में सब पैसे के मजे हैं।' दीपक चुपचाप सुनता रहा।

१६

\+++++

दिन बीतते गये, परीक्षा आ गई। समय का पता भी न चला, पेपर्स देकर सभी छुट्टी पा गए। एक दिन दीपक ने राजू से पूछा— छुट्टियां कहाँ बितानी है ? चलो कहीं घूमने चलें।'

'मैं तो न जा सकूँगा दीपक ! मैं टाइप सीखने जाता हूँ राजू ने कहा—

'क्या आगे नहीं पढ़ोगे ?'

'पढ़ूंगा क्यों नहीं, पर अगर फर्स्ट आया तो····।'

'उसमें क्या सन्देह है ?'

'नहीं दीपक, बड़े-बड़े होशियार लड़के असफल हो जाते हैं, भाग्य की बात है ।'

'तुम चिन्ता न करो । अवश्य फर्स्ट आओगे ।'

अभी बातें हो ही रही थीं कि पोस्टमैन तार फैंक गया । निशा को लड़का पैदा हुआ था । दोनों खुशी-खुशी भागते हुए सबको सूचना देने चले गये । आगरा से मथुरा कुछ विशेष दूर नहीं था सब जाने की तैयारी करने लगे । शान्ता भी जाना चाहती थी । पर भोलानाथ ने मना कर दिया ! इस पर भी उसने पति से राजू को निशा को सगुन देने के लिए देकर कहा, राजू तुम चले जाओ, जल्दी लौट आना राजू की इच्छा तो नहीं थी पर इनकार न कर सका, सेठानी जी को छोड़ सभी परिवार गाड़ी पर सवार हो गया । एक घण्टे में वह लोग निशा के पास पहुँच गए । राकेश, रेखा, दिनेश सभी इन लोगों से मिल बड़े खुश हुए ।

सेठ जी तो दूसरे दिन वहाँ से लौट आए पर शेष लोग कुछ दिन मथुरा के मन्दिरों को देखने की इच्छा रखते थे, सेठ गंगाराम जी इसी लिए राकेश के विवाह के बाद आगरा छोड़ मथुरा आ गए थे वह लक्ष्मी-सी बहू पाकर खुश थे । दिनेश, रेखा आदि का विवाह अपने आप बहू रानी करेंगी अब उन्हें चिन्ता न थी । अब वह कृष्ण भक्ति में शेष जीवन बिताना चाहते थे । दीपक और राजू सारा दिन घूमते रहे ! दूसरे दिन वह भी जाने को तैयार हुए । राकेश ने दो दिन और रुकने के लिए कहा, पर वे नहीं माने ।

'तुम लोग इतना जल्दी क्यों जाना चाहते हो' राकेश ने पूछा।

'राजू ट्यूशन करता है साथ में टाइप सीखता है।'

बात काट कर राकेश ने कहा—'क्या सर्विस करोगे ?'

राजू ने उत्तर दिया—'जरूर करूँगा।'

'लेकिन सर्विस प्राइवेट है।' राकेश ने कहा—

'वेतन कितना मिलेगा ?' राजू ने पूछा—

राकेश वे कहा—'वेतन यही लगभग पचहत्तर रुपये मिलेगा। शुरू-शुरू में कोई अधिक तो देता है नहीं। हाँ कार्य बढ़ जाने पर तनख्वाह भी बढ़ जायगी।'

अब राजू दूसरे दिन से सर्विस करने जाने लगा था। दो-चार दिन दीपक वहीं रहा और फिर वापस चला आया। दीपक दूसरे दिन शान्ता को पूरी सूचना देकर और उसका सामान लेकर राजू को पहुँचा आया। अब सुमन बहुत खुश थी। मधु, निशा, दिनेश, राकेश सभी मिल कर ताश आदि खेलते, केरमबोर्ड मँगवा लिया गया था, सभी मिल कर आनन्द के दिन बिता रहे थे।

एक महीना बीतने पर राजू ने पचास रुपया घर पर भेज दिया। शेष अपने पास रख लिया इस एक महीना में वह कितनी ही बार माँ-बाप से मिल आया था। अब उसने सोचा कि आगरा में ही रह जाऊँ मथुरा आने जाने का पास बनवा लूं ! खाना आदि भी अच्छी तरह खा लूँगा। इधर शान्ता और भोलानाथ भी चिन्तित रहते थे। राजू अभी छोटा ही है फिर आंखों से दूर चाहे इग्लैंड हो या मथुरा उनके लिए बराबर था। दूसरे-तीसरे दिन ही राजू का पत्र आ जाता था। भोलानाथ खुश तो अवश्य था कि अब राजू पढ़ेगा नहीं, पर पढ़ाई की इज्जत देखकर वह भी इधर ध्यान देने लगा था। अगर उमेश जल्दी सो जाता तो उसे जगा-जगा कर कहता—'बेटा। खूब पढ़ो अगर मैं जानता कि पढ़ाई से इतना आदर मिलता है तो मैं खुद भी पढ़ता।

बिलू इसी भोलानाथ के पास प्रतिदिन दुकान पर पहुँच जाता कि मास्टर साहब को अपने पास बुलाओ। सेठ जी भी अब भोलानाथ का बहुत सम्मान करते थे। घर जाने पर अब उसे चाय दूध, या कुछ न कुछ नाश्ता अवश्य करवा देते। अब उसे भोलू न कह भोलानाथ पुकारते थे! इन सब बातों की ओर ध्यान कर भोलानाथ अब चाहता था कि राजू और पढ़ ले।

वह प्रतिदिन डाकिया से पूछता कि राजू का पत्र आया है। पर वह इनकार कर देता था! एक दिन वह बाहर खड़ा था। डकिया आया तो भोलानाथ ने फिर उससे पूछा। पर कोई पत्र आज भी नहीं था। पत्र न आने पर वह निराश हो जाता था।

आज भोलानाथ बड़ी देर वहीं पर खड़े होकर सोचने लगे कि तीन दिन से राजू का पत्र नहीं आया, क्या बात हो गई? बड़े ही सोच-विचार में वह पड़ गया।

दूसरे दिन शान्ता भागी-भागी अन्दर से आई और उस पत्र को उठाकर पढ़ने लगी, जो दूसरे दिन आया था। भोलानाथ ने अन्दर आकर कहा। 'शान्ता क्या तुम बीते समय का वैर निकाल रही हो?'

'क्यों क्या बात हो गई? ऐसी तो कोई बात नहीं है।'

'तुमने शायद डाकिया को रोक रखा है कि मुझे पत्र न दिया करे।'

'नहीं तो।' शान्ता बोली—

'फिर उसने मुझे क्यों नहीं चिट्ठी दी।' भोलानाथ बोला—

शान्ता हँसने लगी और बोली कि आपने चिट्ठी राजू के नाम की माँगी थी और पत्र आपके नाम था इसीलिए डाकिये ने नहीं दिया।'

दोनों हँसने लगे। अच्छा लिखा क्या है? भोलानाथ ने पूछा—

'वह आज यहाँ आ रहा है।' शान्ता ने कहा—

'सच कह रही हो या झूठ, लाओ मैं चिट्ठी दुकान से पढ़ा लाऊँ।'

'क्या मैं पढ़ी नहीं हूँ। मुझ पर आपको विश्वास ही नहीं होता।'

'बड़ा अच्छा है। तुम जल्दी-जल्दी खाना बनाना, मैं अभी घूम कर आता हूँ आज दुकान तो खोलूँगा नहीं।'

'क्यों ?'

'सप्ताह में एक दिन छुट्टी रहती है न।'

'यहीं जाता हूँ अभी आ जाऊँगा।' साफ क्यों नहीं कहते कि सेठ के घर जा रहा हूँ।

भोलानाथ हँसने लगा और बोला। 'तुम तो ज्योतिषी हो।

'त्रिलू मुझे रोज परेशान करता है उसको जाकर बताता हूँ। वह तो राजू को स्टेशन पर लेने भी जायगा।'

'आप नहीं जायेंगे क्या ?' शान्ता ने कहा—

'उसी के साथ मैं भी जाऊँगा।' और भोलानाथ घर से हाथ में छड़ी ले सेठ के घर की ओर चल पड़े। राजू आज आ गया। उसके साथ सुमन और मधु भी लौट आईं थीं। आना तो निशा भी चाहती थी पर सेठ जी ने रोक दिया था कि अभी वह नहीं जायगी। वहाँ तो सभी लोग अपने रिजल्ट को भूल गए थे पर यहाँ पर सबको उसकी याद थी। सब उसी का इन्तजार कर रहे थे।

दोपहर को सुमन और मधु खाना खा रही थी कि बाहर से आवाज आई। 'हाई स्कूल रिजल्ट, हाई स्कूल रिजल्ट आ गया।' यह सुनकर उस समय सुमन के हाथ-पाँव काँपने लगे, मधु भागकर अखबार मोल ले आई। सुमन फर्स्ट थी, राजू और दीपक द्वितीय। मधु हैरान रह गई कि जिसके पास होने की आशा न थी वह फर्स्ट, और जो सबको प्रश्न बताता था वह द्वितीय आया। वह भागती हुई राजू के घर पहुँची वहाँ दीपक पहले ही अखबार लिए बैठा हुआ था।

रात को सरविस से लौटने पर जब राजू को मालूम हुआ कि सुमन फर्स्ट आई है और मैं, और दीपक सेकण्ड तब वह रोने लगा, पर आँसू बाहर नहीं निकले। दूसरे दिन राजू तो नौकरी पर चला गया

क्योंकि प्राइवेट नौकरी थी अगर छुट्टी करता तो शायद वह जवाब दे दें। पर पीछे भोलानाथ का घर सब से भर गया। कोई आ रहा था, कोई जा रहा था। जहाँ भी भोलानाथ जाता था वह यही सुनता था बधाई हो भोलानाथ, हमारे कुल का नाम भी ऊँचा हुआ। किसी ने भी दसवाँ पास नहीं किया था। भोलानाथ बड़ा खुश था उसके पाँव आज जमीन पर न पड़ते थे मानो वह आकाश में उड़ रहा हो।

कुछ दिनों बाद दीपक कालिज से मार्क्स शीट ले आया। जब उसने राजू की मार्क्स शीट देखी तो हैरान रह गया कि राजू एक नम्बर से फर्स्ट आने में रह गया था। राजू ने जब यह सुना तो उसे और भी अधिक दुःख हुआ। और बोला—'अब मैं कभी न पढ़ूँगा।'

तुम दस रुपये भेजकर एक नम्बर बढ़वा लो न?' दीपक ने कहा—

'यह सब पाखण्ड है दीपक। गरीबों की कोई नहीं सुनता।'

'तुम ठंडी साँस क्यों भरते हो। आगे पोजीशन लाने की कोशिश करना।' नहीं दीपक अब मैं और न पढ़ूँगा। यह नौकरी एक महीने की और है फिर कहीं और तलाश करूँगा।' इस उमर में कहाँ नौकरी मिलेगी। वह प्राइवेट सर्विस थी, सारा जीवन क्या इन्हीं रुपयों पर गुजारना है?'

'पिता जी भी तो········।'

'चुप रहो, राजू पढ़-लिख कर भी ऐसी बातें सोचते हो, मैं आज से तुम्हारा मित्र नहीं अगर तुमने एडमीशन नहीं लिया तो।'

'पिता जी नहीं मानेंगे।'

'खर्च मैं दूँगा, तुम्हारे पिता को भी मना लूँगा।'

राजू उदास मन उठकर बाहर चला गया और दीपक की बातों को सोचता रहा। कितना अपार प्रेम दीपक को राजू से था।

सुमन दीपक सबने फर्स्टइयर में एडमीशन लिया। पर राजू का

मन उधर न जाता था वह सोचता था । आज दीपक मेरा खर्च दे रहा है कल कोई बात हो जायगी तो मैं कैसे मुँह दिखाऊँगा । भाग्य ही अगर बलवान है तो अगले साल प्राइवेट दे दूँगा । फिर विचार में आता, साइंस कैसे पढ़ूँगा, थ्योरी तो कर लूँगा, प्रैक्टिकल कैसे करूँगा ? यही सब सोचते-सोचते महीना बीत गया, राजू अपना वेतन लेकर घर पर बैठ गया । मधु प्रतिदिन शान्ता के यहाँ आती थी, केवल यह पता लगाने कि राजू कब घर पर मिलता है पर वह तो सुबह ही घर से निकल जाता था, रात होने पर आता था । आज अचानक उसे घर पर देख वह खुश होकर बोली—'क्यों आप एडमीशन, क्यों नहीं ले रहे हैं ।'

'अब मन नहीं करता मधु ।'

'तो मैं भी पढ़ना बन्द कर देती हूँ ।' मधु ने कहा—

'जब आप ही नहीं पढ़ रहे हैं तो मैं पढ़ कर क्या करूँगी ? मुझे कालेज में अच्छा नहीं लगता इसी कारण कभी-कभी चली जाती हूँ । अगर आप ने कल ऐडमीशन नहीं लिया तो मैं अपना नाम कटवा दूँगी ।'

'मधु........।' राजू ने कहना चाहा पर कुछ कह न सका ।

'चुप क्यों हो ? रुपये कब आपको खर्च करना है ? मुझे जो भी मिलेगा मैं सब आपको दे दूँगी ।'

'नहीं मधु ! मैं ऐसा न करूँगा ।'

'अच्छा, तो आज से फिर........।'

'सुनो मधु ! दीपक भी रूठ गया वह मुझसे बोलता तक नहीं, सुमन तो कभी दिखाई नहीं देती, अब तुम भी रूठ जाओ तो मैं यहाँ नहीं रहूँगा ।'

'जब आप मनमानी करते हैं तो हम लोग मनमानी करेंगे । यह लो मेरी अँगूठी........।'

'नहीं, नहीं, मेरे पास अभी तुम्हारे पहले वाले पूरे रुपये रखे हैं ।

मैंने उनमें से एक रुपया भी खर्च नहीं किया। मेरी इच्छा है उसमें कुछ रुपया और मिलाकर तुम्हें रिस्टवाच ले दूं।'

'जब तक आप डाक्टर नहीं बन जाएंगे मैं आपसे एक पैसे की चीज नहीं लूंगी।

'यह सब स्वप्न है मधु ! मैं और डाक्टर।'

शान्ता दीदी जन्म से कहा करती थीं कि मैं..........को डाक्टर बनाऊंगी।'

'मेरा नाम क्यों नहीं लेती हो।' राजू ने कहा—

'मेरी इच्छा।'

'अच्छा मधु ! मैं सोचूंगा। बात हो ही रही थी कि किसी ने आवाज दी—मधु ! मधु !' यह उमा की आवाज थी। उमा शीघ्र ही सुधा के साथ अन्दर आ गई और अपने साथ मधु को लेकर लौट गई।

राजू अपनी चारपाई पर जाकर लेट गया वह क्या करे, क्या न करे ! खाने के लिए जब उमेश ने जाकर बुलाया तो राजू सोया हुआ था। शान्ता ने जाकर देखा, तो राजू को बुखार था। भोलानाथ को सूचना भेजी गई वह बेचारा भागता हुआ घर पर आया, उसका बना हुआ महल कहीं गिर न जाय, राजू ने ही तो उसे इतना सुन्दर रूप दिया था। उमेश डाक्टर बुला लाया। दीपक को सूचना मिली। मधु भी भागती हुई आई ! दीपक और मधु दोनों शान्ता से बोले—'शान्ता दीदी ! राजू सारा दिन घर पर अकेले बैठा रहता है तभी वह परेशान रहता है आप उसे कालिज क्यों नहीं भेजतीं ?'

इसका उत्तर भोलानाथ ने दिया—'कौन रोकता है दीपक, मैं तो चाहता हूं कि पढ़े, ईश्वर उसे अच्छा करे, तुम अपने साथ ले जाना।' उसी समय वहां पर डाक्टर आ पहुंचा ! टैम्परेचर लिया गया, एक सौ

चार था । डाक्टर बोला—-'कोई चिन्ता की बात नहीं कल तक बुखार हलका हो जायगा ।'

जाओ उमेश दवाई ले आओ ।' भोलानाथ ने कहा—

दीपक उठकर डाक्टर के साथ दवाई लेने चला गया । वहां दस रुपया का नोट देकर दवाई ली और जल्दी ही लौट आया । भगवान की कृपा से राजू शीघ्र ठीक हो गया । शान्ता, भोलानाथ, मधु, दीपक सब एक ओर थे और राजू विचारा अकेला था । कुछ दिनों बाद खुद भोलानाथ दीपक और राजू को साथ लेकर उसका एडमिशन करवा आये ! घर का खर्च वैसे ही चल रहा था, कभी दीपक राजू को रुपए देता, घर से चोरी करके मधु भी दे जाती थी । राजू के इनकार करने पर वह रूठने की धमकी देती थी । राजू एहसानों से लदा हुआ दिन-रात पढ़ने में लगा था । वह चाहता था कि अबकी बार जरूर पोजीशन लेकर आऊँगा । जिन बच्चों की टच्यूशन वह करता था, केवल उन्हीं के पढ़ाने में जो समय लगता उसको छोड़ वह कहीं भी न जाता था ।

इधर सुमन जो तीस रुपया वजीफा ले रही थी, अब चाहती थी कि इण्टर में भी फर्स्ट ही आऊँ । राजू आगे भी तो पढ़ता था, ज्यादा पढ़ने से क्या होता, फिर उसका वही हाल होगा । एक दिन वह छत पर बैठी पढ़ रही थी कि सामने से एक लड़का और लड़की अलग-अलग साइकिल पर हँसते और बातें करते जा रहे थे । वह यह देख सोचने लगी, यह भी कोई मधुप और सुमन होगी, अब कैसी हँस रही है एक दिन यह भी मेरी तरह एकाकी हो जायगी । पर उसी समय एक दूसरा लड़का आया, लड़की से साइकिल लेकर उसे पीछे बिठाकर चल दिया । वह यह सब देख रही थी उसे मालूम ही न था, कब से मधु मेरे पीछे खड़ी है । सुमन ने मुड़कर देखा, तो मधु बोली—'क्या था दीदी ?'

'कुछ भी नहीं, लड़की साइकिल ले जा रही थी वही देख रही हूं ।'

'वह तो उसके भाई की थी ।'

'दूसरा लड़का कौन था ?' सुमन ने पूछा—जो साइकिल लेकर चल रहा था ।

'वह भी उसी का भाई था ।' सुमन ने कहा—

'तुम उन्हें कैसे जानती हो ?' सुमन ने पूछा—

'मेरी क्लास ही में तो पढ़ती है कभी-कभी भाई इसे छोड़ने ओर लेने जाते हैं ।'

'अच्छा ! मैं तो कुछ ओर ही सोच रही थी ।' सुमन ने कहा—

दीदी, सब आजकल यही सोचते हैं अगर मैं भी न जानती तो मैं भी यही सोचती कि वे आपस में·······।'

'ठीक है मधु ! समय ही ऐसा है । आजकल भाई और बहिन भी मिलकर नहीं चल सकते ।'

फिर उसने पूछा, 'अब मधुप कब लौटेगा ?'

'कौन मधुप ?' सुमन पूछने लगी—

'वही जो तुम्हारी छत पर रहता था ।'

'मैं क्या जानूं ! आज तुम्हें कैसे उसकी याद आ गई ?' सुमन बोली—

लड़का तो अच्छा था, मुझे हर रोज कुछ न कुछ खाने को दिया करता था । मुझे बहुत चाहता था ।

सुमन ने कुछ उत्तर नहीं दिया, किताब लेकर नीचे उतर आई ।

१७

समय बड़ी जल्दी बीत गया ! प्रीवियस परीक्षा में राजू फर्स्ट था, सुमन और दीपक भी पास थे परन्तु डिवीजन कुछ भी न थी पर

राजू इस पर भी प्रसन्न न था ! बोर्ड में फर्स्ट आये ! इसमें तो मैं हमेशा ही फर्स्ट आया करता हूँ । सुमन अब मेहनत करने लगी वह बहुत बुरी तरह पिछड़ी थी । वह किसी हालत में राजू को आगे नहीं बढ़ने देगी । सुमन घर भर से बहुत कम बोलती थी कभी एक समय ही खाकर दिन बिता दिया ! उसे मधुप की याद आती अवश्य थी पर बहुत कम, वह इस को अपनी ही गलती मानती थी ! जीवन में मनुष्य बहुत भारी-भारी भूल करता है । वह भूल मुझसे भी हो गई तो क्या हुआ ! उसका सुधार भी हो सकता है ।

सुमन जितनी भी मेहनत करती दीपक उससे आधी भी न करता था । परन्तु वह सदैव परीक्षा में अच्छे नम्बर लाता था । सबसे मुश्किल बात यह थी कि सुमन ने दसवीं में तो साइंस ली न थी, वह संस्कृत में अच्छी थी, यहाँ साइस लेकर वह पीछे रह गई । दीपक को जो समझ में न आता था वह राजू के पास चला जाता, परन्तु सुमन बेचारी, वह तो पुरुष जाति से घृणा करती थी, वह राजू से क्यों बात करेगी ? वह दीपक से पूछती तो दीपक इधर-उधर टाल जाता । सुमन रोकर चुप रह जाती । उसकी बड़ी ही अजीब दशा थी । धीरे-धीरे उसकी फाइनल परीक्षा नजदीक आ गई । अब सुमन ने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी और वह राजू से बात करने लगी, क्या करे किसके पास जाय और तो कोई कुछ बताने वाला था ही नहीं ।

मधु राजू का बड़ा ध्यान रखती थी । समय-असमय राजू के रोकने पर भी किताबें, प्रश्नोत्तर, रुपया उसको देती रही । मधु थी छोटी, पर सुमन से कम न लगती । वह कविता, कहानी लिखना बड़ी अच्छी तरह जानती थी । जब वह कहानी लिखकर पत्रिका में भेजती तो पहले कोई विश्वास ही न करता कि यह बाल-सदस्य की सदस्य भी है । धीरे-धीरे मधु की ख्याति फैल गई । वह अब सभी पत्रिकाओं में कुछ न कुछ लिखकर भेजती रहती थी । मधु कभी न पढ़ती थी । सारा दिन घूमना,

इधर-उधर की खबर लाना, बस यही उसका काम था ! फिर भी वह अच्छे नम्बरों में पास होती थी।

राजू उसे दिल से चाहने लगा था पर कहाँ धरती का कीड़ा, और कहाँ गगन का चाँद ऐसे स्वप्न करना भी रेत पर घर बनाना है। वह इन स्वप्नों को अपने तक ही सीमित रखता था। जितने खर्च से सुमन, मधु और दीपक ने उसकी मदद की थी। राजू ने उसमें से एक भी पैसा अभी तक खर्च नहीं किया था। वही टयूशन का रुपया जो लाता था, उसमें से एक या दो रुपया अपनी आवश्यकतानुसार ले लेता बाकी अपनी माँ को दे देता था। अथक परिश्रम से उसका स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। सुबह उठते ही पढ़ना, कालेज से सीधे टयूशनें करने जाना, घर पर खाना खाकर पुनः पढ़ने बैठ जाना, रात जागते-जागते बिता देना, यह उसका नित्य-प्रति का कार्य था। कभी-कभी किताब खोले ही सो जाता और उसकी माँ शान्ता उठकर किताब बन्द करती थी और बिजली बुझाती थी। जिस दिन उसे पता न चलता; रात भर बिजली जलती ही रहती।कभी-कभी शान्ता सब बच्चों की चोरी से कुछ दूध भी पिला देती थी। पर इतनी मेहनत में एक पाव दूध क्या करेगा ? फाइ-नल परीक्षा समाप्त हुई। पर अब भी बेचारों को चैन कहाँ थी, सबको पी. एम. टी. की परीक्षा में बैठना था। एक दिन भी किसी ने आराम नहीं किया। इधर परीक्षा समाप्त हुई कि दूसरी परीक्षा की तैयारी होने लगी। रिजल्ट आउट हुआ, राजू फर्स्ट था शेष, दोनों द्वितीय थे। पर किसी ने इसमें चिन्ता नहीं की, सबको अपनी उस परीक्षा की चिंता थी जिस पर भावी जीवन अवलम्बित था। फिर क्या पाँच साल तो किसी प्रकार बीत ही जाएँगे। कुछ कठिन था, तो ऐडमीशन होना ही कठिन था। परीक्षा हुई। सुमन और राजू दोनों सफल हुए पर दीपक सफल नहीं हो सका। राजू को इस बात का बहुत दुःख हुआ। पर दीपक ने सांत्वना दी कि इस वर्ष न सही मैं अगले वर्ष पुनः परीक्षा दे दूंगा।

राजू के सामने समस्या थी उसको अब रुपये की आवश्यकता थी, इकट्ठा साढ़े तीन सौ रुपया कहाँ से आये ? उसके पास कुल टोटल तीन सौ रुपया था, जो उसने जोड़-जोड़ कर रखा था। अगर वह फीस में दे देता है तब और खर्च कैसे चलेगा ? अगर माँ से या पिता जी से कहूँगा तो वे डर जाएँगे। हो सकता है वे सुनकर ही घबड़ा जाएँ।

इसी सोच में राजू बड़ा उदास रहने लगा। यह बात तो उसने सोची थी कि फीस माफ अवश्य हो जायगी पर यह न सोचा था कि पहले तो देनी ही पड़ेगी। जब वह इन्हीं भाव-तरंगों में डूब रहा था मधु आ पहुँची और बोली—'अब तो आप डाक्टर बन गए-कहिए, स्वप्न पूरे हुए या नहीं ?'

'अभी कहाँ मधु········मैं शायद अब न पढ़ूंगा।' ठंडी सांस भर राजू बोला—

'ऐसा क्यों ?' मधु ने कहा—

'मधु, खर्च बहुत अधिक है, यही एक मेरे सामने समस्या है।'

'यह कौन सी समस्या है जब तक मैं········।'

'नहीं मधु ! मैं इतना भार न सह सकूंगा।'

अगर यह कर्ज देने के पहले ही मैं मर जाऊँ तो फिर इसको कौन अदा करेगा ?'

'आप ऐसी बातें क्यों करते हैं ? कम से कम मेरा ख्याल तो कीजिए। बात अभी मधु समाप्त भी न कर पाई थी कि उसी समय सुमन आ पहुँची, और बोली—'कहो ! राजन् कुछ मिठाई खिलाओगे कि नहीं ?'

राजन् चुप रहा, उसकी दशा बड़ी ही विचित्र थी। उसका हृदय अन्दर-अन्दर रो रहा था अपनी दशा पर, कि—'यह लो रसीद मैं तुम्हारी फीस जमा कर आयी हूँ। मैंने कालिज में कह दिया है कि हम दोनों भाई-बहिन हैं। प्रोफेसर के सिवा सब लड़के हमको भाई-

बहिन की नजर से ही देखेंगे।' एक साथ ही सुमन इतना कह वहीं जमीन पर बैठ गई।

'सुमन। यह तुमने क्या किया ?' राजू ने कहा—

'क्या कोई बुरा काम किया है मैंने ? सुमन ने कहा—

राजन् अब चुप था, बेचारा कहता ही क्या ? वह इन सभी लोगों के एहसान से दबा हुआ था। वह मन ही मन सोचता-कितना भाग्यशाली मैं हूँ कि यह लोग मुझे अपना अभिन्न समझते हैं।

राजू सोच ही रहा था कि सुमन ने कहा—'आज हम लोग पिक्चर चलेंगे, खुशी मनाएंगे।

पिक्चर का प्रोग्राम बन ही गया उस समय राजन् की इच्छा न थी। पर मजबूरी में उसे भी इनका साथ करना ही पड़ा। वह हैरान था कि सुमन में इतना जल्दी, और इतना परिवर्तन कैसे हो गया है। वह सोचकर भी कुछ न सोच पा रहा था। राजन पर सुमन के घर वाले पूरा-पूरा विश्वास करते थे। इसीलिए किसी प्रकार की कोई भी उसकी उपेक्षा न करते थे।

पिक्चर से लौटने के बाद सुमन जब खाना खाकर विस्तर पर लेटी तो वह बहुत खुश थी। अब वह एक दिन डाक्टर बन जायगी। वह मधुप को बतायेगी कि अगर तुम्हारा साथ रहता तो शायद मैं दसवाँ भी न पास कर पाती, किन्तु आज मैं डाक्टर की उपाधि लेने वाली हूँ। परन्तु राजन् क्या बुरा है ! गरीब अवश्य है लेकिन सुन्दरता में मधुप से सौ गुना बढ़कर है। सबके दिन एक समान नहीं रहते। एक दिन राजन् डाक्टर बन जायगा। तब तो घर······छिः, छिः मैं पुनः पतन के गढ़े में गिरने लगी। इसमें तो हजारों मनचले युवक मिलेंगे, एक नहीं हजारों मधुप के समान होंगे। उसकी मनो भावनाएँ बनती-बिगड़ती रहीं, तमाम प्रकार की बाते उसके हृदय में उठतीं और विलुप्त होती थी। वह सोचती कि वहाँ रुपयों को पानी की तरह बहाने वाले

भी होंगे। सभी अपनी-अपनी शान में होंगे। अगर अब की बार मैं फिसल गई या किसी के चंगुल में आ गई तो जीवन बिताना ही कठिन हो जायगा। आगे की भूल परेशान करती रहती है। फिर दुबारा भूल हुई तो जीवन से हाथ ही धोना होगा। मैं कहीं की न रहूँगी, बनी बनाई इज्जत भी नष्ट हो जायगी। वह बराबर सोचती थी कि मधुप चित्र अच्छे बनाता था। वह आजकल एक अच्छा चित्रकार होगा। पर मैंने उसका चित्र कहीं भी नहीं देखा, मधु भी तो एक दिन पूछ रही थी कि कब वह आयेगा। बड़ा ही वह अभागा था, अगर वह मुझे पा लेता तो मैं उसकी दुनियाँ बना देती। खैर जहाँ भी तू होगा, खुश नहीं होगा। मैं आज भी खुश हूँ। तुम से सुन्दर-सुन्दर युवक मेरी प्रशंसा करते हैं।

वह अपने मन की बातों को किसी से कैसे कहे फिर भी सोचती कि इसी राजन को देखो, ऊपर से चाहे कुछ न कहे लेकिन मन ही मन मेरी बड़ाई करता होगा। वह अवश्य सोचता होगा कि हम दोनों साथ रहें तो बड़ा ही अच्छा हो।

मनस्ताप से जल उठी और कहने लगी—'छोड़ो इस झंझट को, ऐसे ही दिमाग परेशान है। फिर अब कल से कालिज भी ठीक समय पर जाना है। कितना अच्छा होता अगर दीपक भी आ जाता। खैर अगले वर्ष आ ही जायगा। राजन् कितना भाग्यशाली है, मुझसे छोटा है फिर भी कितना मेहनती है। अब वह डाक्टर बन जायगा? अगर कहीं मेरे साथ उसका विवाह तो········।

लेकिन शीघ्र ही वह अपने को धिक्कारने लगती। कहती—यह क्या सोचती हूँ। वह तो मेरा भाई है, मेरा छोटा भाई है। अगर वह साथ न देता तो मैं कभी न आगे बढ़ पाती। विचारा कितना शर्मीला है। भगवान्! उसकी मेहनत सफल करता रहे। एक दिन वह डाक्टर बनेगा। और········मैं········।'

सुमन न जाने क्या इधर-उधर की सोचती रही जब बारह की घंटी बजी तो वह निद्रा देवी की गोदी में चली गई। रात भर वह इसी प्रकार के स्वप्न देखती रही।

१८

++++++

'राजन्!'

'कौन? मधु!'

मधु—तुम कभी घूमने नहीं जाते?

राजन्—कवि लोग घूमते हैं।

मधु—और डाक्टर क्या करते हैं?

राजन्—वह परिश्रम करते हैं।

मधु—'धत्! चलो ताजमहल देखने चलें।'

राजन्—क्या कभी नहीं देखा है?

मधु—'नहीं।'

राजन्—साथ में कौन चलेगा?

मधु—'कोई भी नहीं, सब देख आये हैं। केवल मैं ही बची हूँ। हम दोनों ही चलेंगे।

राजन्—बहुत अच्छी बात, तैयारी करो।

दोनों जाने के लिये तैयार हो गये। किसी ने कुछ कहा नहीं। वह रिक्शे से एक ही घंटे में ताजमहल के निकट पहुँच गये। वहाँ बहुत से लोग पहले देखने आए हुए थे। कई युवतियाँ कैमरों से फोटो

खींच रही थी। इधर-उधर फर्श की पक्की सड़क थी, बीच में फव्वारा लगा था। दोनों चलते गए, सीढ़ियाँ चढ़ कर सैंडल और बूट उतार दिए गए। दोनों ऊपर चढ़ते गए। अब वह उस जगह पर आ पहुँचे जहाँ शाहजहाँ और उसकी पत्नी मुमताज की कबर बनी थी। एक मुसलमान हाथ में लालटेन लिए सब को बारी-बारी घुमा-घुमा कर दिखा रहा था और उन दोनों के प्रेम की कहानी सुना रहा था।

'पसन्द आया मधु ?' राजन् ने पूछा—

'बहुत ही सुन्दर हैं, फिर पसंद क्यों न आए।'

'सुना जाता है यहाँ जो भी व्यक्ति वर माँगता है वह पूरा हो जाता है।' मधु ने कहा—

'सच ?' राजन् ने पूछा—

'बिलकुल सच।'

'मैंने तो वर माँग लिया है।'

'क्या है तुम्हारा वर ?'

'बताऊँ क्यों ?' मधु बोली—

'अच्छा न बताओ पर मैंने भी वर माँग लिया है।'

'यही माँगा होगा कि डाक्टर बन जाऊँ या कहीं से दो-चार लाख रुपये की लाटरी मिल जाय, इसके सिवा और क्या माँगा होगा ?'

'नहीं, मैं धन-दौलत नहीं चाहता, मैं कभी धनवान बनना नहीं पसंद करता। मैं एक साधारण आदमी ही बना रहना चाहता हूँ। मैं मानव से प्यार करता हूँ और सदैव करता रहूँगा। उसी बीच उसे याद आया किसी कवि का वह छन्द कि 'आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।'

'क्या आप कवि हैं ?' मधु ने पूछा—

'नहीं मैं कभी कवि नहीं बन सकता। कवि तो वही होता है जिसे प्रकृति की देन होती है।'

'खैर, जाने दो इन बातों को, पहले बताओ कि तुमने माँगा क्या है ?'

'अच्छा पहले तुम बताओ।' राजन् ने पूछा—

'नहीं, पहले तुम।'

मधु के तुम कहने में 'एक प्यार का श्रोत था।' वह बड़ा ही प्रसन्न हो रहा था कि उसे भी कोई चाहता है। उन दोनों में कोई किसी प्रकार का विशेष अन्तर नहीं है। मधु भी ध्यान रखती कि कोई ऐसी बात उसके मुँह से न निकले कि राजन् को दुःख हो। राजन् ने कहा कि अब तुम हमेशा मुझे 'तुम' ही कहा करो, यह उच्चारण बड़ा अच्छा लगता है।

'अच्छी बात है राजन् !' मधु ने कहा—

'अच्छा पहले बताओ, कि क्या माँगा है तुमने ?'

वे दोनों बातें करते-करते जमुना के किनारे तक पहुँच गये थे जो ताजमहल के पीछे बहती थी और उस पर ताजमहल का अक्स पूरा पड़ता था। पूर्णमासी की रात जब चन्द्रमा अपनी सज-धज के साथ निकलता है तब तो इसकी सुन्दरता देखते ही बनती है। आज भी पूर्णमाशी थी। राजू ने कहा—'रात तक रुको तो तुम्हें और भी सुन्दर दृश्य यहाँ दिखाऊँगा।'

मधु चुप रही, वह सहम-सी गई।

'क्यों नाराज हो गई हो ?' राजन् ने कहा—

मधु अब भी चुप थी, और राजन् ने पुनः कहा—'मधु ! मधु ! तुम्हें हो क्या गया है ?'

यकायक मधु रो पड़ी और बोली—'बताओ तुमने क्या माँगा है ?'

राजू हँस पड़ा और बोला—'वाह मेरी मधु ! तुम तो अभी बिलकुल बच्ची ही हो। पता नहीं तुम कविता और कहानी लेती हो। तुमने कुछ समझा ही नहीं कि मैंने क्या माँगा है ?'

'फिर तुम टाल रहे हो न ?' मधु बोली—

'अच्छा तुम पहले बताओ, क्योंकि पहले तुमने वर माँगा था, फिर मैंने इसलिए पहले तुम्हें बताना चाहिये फिर मैं बताऊँगा।'

'अच्छा बताओगे न ? कहीं ऐसा तो········?'

'क्या मुझ पर तुम्हें विश्वास नहीं है ?'

'मैंने यह माँगा है कि हम दोनों की जोड़ी जन्म-जन्मान्तर बनी रहे। हम सदैव एक साथ जियें और मरें।'

'वाह री मेरी मधु ! तुमने मेरे मन की बात चुराकर बता दी है।'

'अब बताओ, तुमने क्या माँगा है।' मधु ने कहा—

'वह तो तुमने पहले ही बता दिया। अब मैं क्या बताऊँ ?'

'मेरी कसम।'

'तुम्हारी कसम के साथ मुझे अपने जीवन की कसम अगर झूठ बोल रहा होऊँ········।'

'तब तो हम आज से········।'

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं, यह लो जमुना का पानी, इसे लेकर मैं कसम खाता हूँ अगर साथ करूँगा तो तुम्हारा, नहीं इसी यमुना में कूद पड़ूँगा।'

'मैं भी इस यमुना की कसम खाती हूँ अगर आपने········।'

'चलो आओ किश्ती पर सैर करें। फिर दोनों प्रेम-सागर में डूब कर एक दूसरे के अत्यन्त निकट पहुँच गए।'

किश्ती जल्दी ही बीच धार में पहुँची तो मधु ने कहा—राजन् ! कहीं मझधार में तो न डुबो दोगे।'

राजन् ने मौन स्वीकृति दे दी और उसने कहा—'हम दोनों जीवन में क्या एक हो सकेंगे ?'

'क्यों नहीं ? पिता जी ने सबको कह रखा है कि जो तुम चाहो,

कर सकती हो पर सोच-समझकर करना जिससे पीछे पछताना न पड़े। मैं सोचती हूँ कि मैंने अपना पति चुनने में भूल नहीं की है। मैं उन लड़कियों से अच्छी हूँ, जो घर से चोरी-चोरी भाग जाती हैं। अन्त में ठोकर खाती हैं। उनका जीवन बरबाद होता है। अपने कुल को भी कलंकित करती हैं।' मधु कहती गई—मैंने सब सोच-समझ कर ही अपना हाथ तुम्हारे हाथ में देने का निश्चय किया है', और यह कहते-कहते वह राजन् की गोद में सिमट आई।

राजन ने बात काटते हुए कहा—'मधुप से सुमन ने क्यों नहीं विवाह कर लिया, क्या कोई और बात पैदा हो गई थी ?'

'हाँ', यह तुमने ठीक ही पूछा है—

मधुप अच्छा व्यक्ति न था। जितना पैसा उसे बाप भेजता था, वह सब उड़ा देता था, कभी भी वह एक का प्रेमी नहीं बन सका। इसीलिए जब पिता जी ने उसे बुलाया तो उसने साफ इनकार कर दिया कि अभी मैं अपने जीवन को बन्धन में नहीं डालना चाहता।'

'मधु ! ऐसे ही लड़के भारत का भविष्य बिगाड़ते हैं। न आज वह भारत की ललनाएँ रही हैं और न वह युवक ही रहे हैं। आज जमाना कितना बदल गया है। अपने देश में भी पाश्चात्य सभ्यता का राज आ चुका है। यदि कुछ कमी है तो वह भी शीघ्र ही आ जायगी, अब वह समय दूर नहीं है।

मधु ने कहा—'हे भगवान ! ऐसा समय हमारे यहाँ न आये तो अच्छा हो।'

मल्लाह ने किनारे पर उन्हें उतार दिया। राजू ने पूछा—'खाना कहाँ खाओगी ?'

'आज भूख नहीं है राजन्।' मधु ने शर्माते हुए कहा—आज ही तो मन की भूख मिटी है। आज जितनी मैं प्रसन्न हूँ, संसार में उतना और कोई प्रसन्न न होगा।

'नहीं मधु ! तुम भूल करती हो; आज जितना मैं खुश हूँ उतनी तुम न होगी । मैं बहुत दिनों से इसी घड़ी की राह देख रहा था ।'

अब जल्दी-जल्दी पाँच साल आपके पूरे हों कि हमारे मन के स्वप्न पूरे हों । आपके डाक्टर बन जाने पर कोई इस सम्बन्ध से इनकार भी न करेगा । सब कुछ ठीक हो जायगा । अभी तो इस बीच में बहुत सी बाधाएँ आ सकती हैं और हो सकता है कि बीच में ही कोई बाधा ऐसी आ जाय कि········।

'नहीं मधु ! यह अब असम्भव है कि हम दोनों अलग हों ।' राजन की बात में दृढ़ता थी । उसने फिर कहा—'यदि कुछ भी इसके विपरीत हुआ तो मेरा जीवन समाप्त हो जायगा ।'

दोनों एक दूसरे के प्रति सोचते हुए अपनी दैनिक बातों की याद करने लगे और राजन् अपनी कठिनाइयों को सोचकर उदास हो गया । मधु राजन् के भाव समझ गई और बोली—'जो कुछ मेरे पास है, वह सब तुम्हारा ही है । परेशान क्यों होते हो ?'

मधु को कोटि-कोटि धन्यवाद देते हुए राजन् ने कहा—'मधु ! तुम्हारे सभी स्वप्न सफल हों । अच्छा अब घर चलें, बड़ा समय हो गया है । सब लोग इन्तजार कर रहे होंगे । कहीं सब लोग परेशान न हो जायँ ।

दोनों ने वहीं से रिक्शा किया और घर की ओर चल दिये । रास्ते में राजन् ने पूछा—'मधु, तुम्हें यह ताजमहल कैसा लगा ?'

'वैसे तो इससे भी सुन्दर-सुन्दर मन्दिर हैं । जिनमें इससे भी ज्यादा शायद खर्च हुआ हो, पर यह इमारत प्रेम की प्रतीक है । इसका अपना महत्वपूर्ण स्थान है । प्रेम जीवन का आवश्यक अंग है । इसका अवलोकन करते ही हर मानव-हृदय प्रेम के संसार में निवास करने लगता है । प्रसाद और शेक्सपियर ने भी तो प्रेम की सराहना अपनी कविता में की है ।'

'तुमने यह सब कहाँ पढ़ा है मधु ?'

'किताबों में ।'

'लेकिन उमेश तो यह सब नहीं जानता ।'

'ठीक कह रहे हो, जो जिस पथ पर चलता है वह उस पथ का आदि, अन्त मध्य सब जानना चाहता है । फिर उस विषय में जो भी उसको किताब मिल जाती है, वह पढ़ता है । फिर मेरी सोसायटी शुरू से ही ऐसी ही रही है ।'

'अच्छा मधु, आज का दिन जीवन की प्रथम सीढ़ी है, जन्म भर यह दिन याद रहेगा ।'

दोनों बातें करते-करते घर के निकट आ गए । मधु ने अलग होने के पूर्व ही कहा—'अब कब घूमने चलेंगे ?'

'जब कहोगी । मैं तो तुम्हारी कोई बात टाल ही नहीं सकता हूँ । तुमने तो मुझ पर जादू डालकर ऐसा बना दिया कि कभी भी तुमसे अलग रहकर जीवन में चैन नहीं पा सकता ।'

\+ \+ \+

जीवन की गाड़ी सुख में या दुःख में चलती ही रहती है । दुःख के दिन याद करके हम रोते हैं और सुख के दिन याद कर ठण्डी सांसें भरते हैं । जाड़े के दिन थे । भोलानाथ अपने छोटे लड़के और छोटी लड़की को लिए धूप में बैठे हुए थे कि उसी समय बाहर से किसी ने आवाज दी—'डाक्टर साहब !' यह सिविल सर्जन की आवाज थी ।

'कौन ? डाक्टर राजन् ? भोलानाथ ने पूछा--

'हाँ ।' सिविल सर्जन ने कहा—

'नहीं, वह कहीं गये हैं ।' भोलानाथ ने उत्तर दिया—

सिविल सर्जन साहब उलटे पाँव लौट गये । भोलानाथ उठकर गए और शान्ता से बोले—'अरी शान्ता, आज वह सिविल सर्जन डाक्टर राजू को बुलाने आया था ।' इतना कहकर वह मन ही मन अपने ऊपर

गर्व करने लगे, वह सोचने लगे कि मेरे राजू ने मेरे घर को इस योग्य बनाया कि बड़े-बड़े लोग आने लगे। 'उन्हें बिठाया नहीं, एक कप चाय पीकर तो जाते।' शान्ता बोली—'सिविल सर्जन साहब पता नहीं मन में क्या सोचते हों, उनका आदर-सत्कार करना हमारा कर्तव्य था।'

भोलानाथ को अपनी गलती महसूस हुई। लेकिन उसी समय उसने कहा, कि अगर उन्हें बिठा लेते तो अपनी फीस भी माँगते, इसी कारण मैंने········।'

शान्ता हँसने लगी और बोली—'कितना अच्छा होता कि आप थोड़ा-बहुत पढ़े होते। आपको तो मुझे छोटी-छोटी बातें बतानी पड़ती हैं। सिविल सर्जन अब मेरे लिए वह डाक्टर नहीं है, वह तो हमारे राजू का अब दोस्त बन गया है। मैं कितनी बार उनके घर से चाय पी आई हूँ और राजू तो रोज ही उन्हीं के यहाँ चाय पीने जाता है। राजू जब भी उन्हें बुलाने जाता है, वह पकड़ कर उसे बिठा लेते हैं। बड़ा ही आपस में प्रेम हो गया है।'

भोलानाथ ने पूछा—'यह ऐसा अब क्यों है ?

शान्ता ने भोलानाथ का हाथ पकड़कर पास बिठा लिया और बोली—

'सुनिये, वहाँ कालिज में एक बहुत बड़ी लायब्रेरी होती है, जिसमें बहुत सी डाक्टरी की किताबें होती हैं, एक-एक किताब की कीमत चार-चार सौ रुपये होती है। कोई-कोई तो हजार तक की होती हैं, सब किताबें तो कोई खरीद ही नहीं पाता। यह डाक्टर भी अभी और आगे पढ़ रहे हैं, दूकान पर नौकर को बिठाकर राजू के साथ उसी लायब्रेरी में पढ़ने के लिये जाते हैं।' वह बात पूरी भी न कर पाई थी कि भोलानाथ ने शान्ता से पूछा—'कितने साल राजू अभी और पढ़ेगा ?'

अब उसका तीसरा वर्ष चल रहा है। पाँच वर्ष का कोर्स होता है। तब वह भी सिविल सर्जन डाक्टर बन जायगा। शान्ता ने कहा—

'राजू तो कुछ और ही कह रहा था ।' भोलानाथ कहने लगा—

'वह कह रहा होगा कि पाँच साल के बाद एम० बी० बी० एस० डाक्टर बन जाऊँगा । यही न ?' शान्ता ने उत्तर दिया—

'हाँ, हाँ, यही, तुम कितनी अच्छी हो शान्ता, तुम किसी पढ़े-लिखे घर जातीं तो वहाँ की रानी बनकर रहतीं, नौकर-चाकर होते परन्तु ...., मैंने तुम्हें कितना ही दुःख दिया है शान्ता ।' यह कहकर भोलानाथ ने दुःख प्रकट किया ।

'आपने तो कभी दुःख नहीं दिया, सदैव मुझे माना है । आज भी तो मेरी बात नहीं टालते हैं ।' शान्ता बोली—

भोलानाथ बिना कुछ कहे आँखों में आँसू भर बाहर चले गए ।

'डाक्टर साहब हैं ?' सुमन अन्दर आती हुई बोली—

'वह अभी ट्यूशन पढ़ाने गए हुए हैं । आओ, अन्दर बैठ जाओ सुमन अभी आते ही होंगे । शान्ता बोली—

'शान्ता दीदी ! तुम अब ट्यूशन छुड़वा क्यों नहीं देती हो । अगर अच्छे नम्बर आ गये तो गवर्नमेन्ट अपने खर्चे से विलायत उन्हें भेजेगी । और फिर........।'

'बस, बस, सुमन यहीं पाँच साल पूरे हो जाएँ । यही मेरे लिये बहुत है, अभी हम इतने नहीं बड़े हुए हैं । राजू अपने पुत्रों को विलायत भेजेगा, इतना ही क्या कम उस बेचारे ने किया है ।'

'शान्ता दीदी ! कब राजू का ब्याह करोगी ? सुमन बोल उठी—

'कोई योग्य लड़की जब मिल जायगी, ब्याह कर लिया जायगा ।' शान्ता ने कहा—

'तुम तो अमीर की लड़की से करोगी राजू का ब्याह ।' सुमन ने कहा—

'नहीं, मैं तो किसी गरीब की लड़की से करूँगी जो आकर घर-

बाहर का भार सँभाल लेगी, मैंने बहुत किया अब कुछ दिन सुख भी तो देखना चाहती हूँ।'

'वाह री शान्ता दीदी ! अभी तो बहुत लम्बी-चौड़ी जिन्दगी है फिर तुम अभी थक गई हो, कहीं राजू ने खुद विवाह कर लिया तो ?' सुमन यह कहकर बड़ी उत्सुकता से शान्ता का मुँह ताकने लगी।

'तब भी मुझे कोई एतराज नहीं होगा, मैं उसको भी अपनी आँखों की पलकों में बिठाऊँगी। वह भी तो किसी काम की बेटी होगी मेरी तरह।' शान्ता ने कहा—

'फिर दिन-रात तुम उससे घर का काम करवाओगी ?' सुमन हँसती हुई बोली—

'क्यों ? उसकी इच्छा होगी तो करेगी नहीं तो मैं अभी स्वयं ही काम के लिए काफी हूँ। मैंने सुख नहीं देखा तो क्या वह भी न देखे।'

शान्ता को अपने बीते हुए दिन याद आ गए और उसकी आँखों में आँसू छलक पड़े।

'तो फिर उसके लिए कपड़े-गहने बनवाना शुरू करो दीदी।' सुमन ने कहा—

'अभी नहीं, सुमन दो वर्ष बाद, राजू जब कमाने लगेगा तो उसी रूपये से उसकी रानी के गहने बनवाऊँगी, अभी तो केवल घर का खर्च ही मुश्किल से चलता है। मेरे पास और रखा ही क्या है जो यह अभी से सब सोचूँ।'

'उसका खर्च ही क्या है ? फीस उसकी माफ है, खाना जैसे आगे खाता था वही अब खाता है। जो कपड़े पहले पहनता था, वही अब पहनता है।

केवल दो ऐप्रन ही तो उसने बनवाए हैं.......।' सुमन ने कहा—

'ऐप्रन क्या है सुमन ?' शान्ता ने पूछा—

'अरे वही सफेद कोट; और उसका क्या खर्च है ? किताबें उसने

केवल दो ही खरीदी हैं। बाकी सब लायब्रेरी में बैठ-बैठ कर नोट्स बनाता है ?'

'नहीं, सुमन फिर भी कुछ न कुछ खर्च हो ही जाता है। अभी पिछले वर्ष उसने पचीस रुपये लगाकर फार्म भरा था, फिर वह हर महीना एक आध कापी पैन्सिल चाक आदि लेता ही रहता है।'

शान्ता को अनुभव काफी था वह जानती थी कि कितना ही कम वह क्यों न खर्च करे फिर भी कुछ न कुछ खर्च तो होता ही है।

'चाक का क्या करता है ?' सुमन पूछने लगी—

'पता नहीं सुमन, एक ब्लैक बोर्ड कहीं से ले आया है जैसे स्कूलों में छोटे बच्चों का होता है। उसी पर रात दो-दो बजे तक बैठ-बैठ कर डाइग्राम, कभी सिर का, कभी हड्डी का, कभी दिमाग का, मैं तो डाक्टरी पढ़ी नहीं हूँ, नहीं तो सब बता देती।'

'अब तो दसवीं पास कर लो दीदी।'

शौक तो बहुत है सुमन, अब इच्छा है कि राजू का कोर्स पूरा हो जाय तो। फिर उस की शादी भी हो जाय तो। तब फिर कुछ चिन्ता दूर हो जायगी, तब मैं भी फार्म भर दूंगी।' शान्ता बोली—

'अच्छा तो अपनी लड़की के साथ फार्म भरना।' इतना कहकर सुमन उठ खड़ी हुई।

'बैठो सुमन, चाय पी लो, तुम जा रही हो, कुछ काम था क्या राजू से ?' शान्ता ने कहा—

'हाँ, मुझे एक कापी उनसे लेनी थी।' सुमन ने कहा—

'जाओ, उसके कमरे से उठा लो तुम्हारा ही तो घर है सुमन।'

शान्ता के मुँह से यह सुनकर 'तुम्हारा ही घर है' सुमन मन ही मन प्रसन्न हुई और बोली, 'कालिज में ले लूँगी ?'

'थोड़ी देर बैठो, अभी आता ही होगा, साथ-साथ चले जाना।' बात कह ही रही थी शान्ता कि राजू आ गया और बोला—

'कौन आता होगा माँ ?'

'तुम्हारी बहुत लम्बी उमर है राजू, अभी तुम्हारी ही बातें हो रही थीं।'

'कालिज नहीं चलोगे क्या ?' सुमन पूछने लगी।

'क्यों नहीं चलूँगा ? दो मिनट में खाना खाकर चलता हूँ, थोड़ी देर रुको।'

'नहीं, तुम खाना खाओ, जब तक मैं भी कपड़े बदल लूँ, जब यहाँ से जाने लगिएगा तो बुला लीजिएगा, साथ ही साथ चलेंगे।' सुमन ने कहा—

'अच्छा, जल्दी ही करना, मैं अभी आ रहा हूँ।'

'दीपक चला गया क्या ?'

'हाँ, उसे आठ बजे ही जाना था। सुमन बोली !

'अच्छा तो तुम चलो मैं अभी आया।'

जितनी देर राजू ने खाना खाया उतनी देर में सुमन ने कपड़े बदल लिये। जैसे राजू ने आकर आवाज दी सुमन अपनी साइकिल के पीछे किताबें लगा कर चल दी। दोनो साइकिल पर बैठकर वहाँ से चले गये और जरा देर में ही कालेज पहुँच गए। रास्ते में वह बड़े प्रसन्न थे। दोनों की मुखाकृति से एक अपूर्ण आभा चमक रही थी। कालेज पहुँचते ही सुमन को पता चला कि प्रोफेसर चटर्जी के पिताजी का निधन हो गया है उसने आकर राजू से कहा—कि बड़ा अच्छा हुआ, प्रोफेसर ने सात दिन की छुट्टी ले ली है। अब हम लोग····।'

बात पूरी भी सुमन न कह पायी थी कि राजू ने कहा—'तो आओ पार्क में चलें या फिर लायब्रेरी में बैठ कर पढ़ें।'

सुमन तो पहले ही से गप-सप के मूड में थी। वह चाहती थी कि आज राजू से दिल खोल कर बात करें और जब राजू ने पार्क में बैठने को कहा तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुई। शीघ्र ही वह दोनो पार्क में जाकर

बैठ गए। वहाँ बैठकर सुमन ने पहले ही से उठती हुई भावनाओं को व्यक्त करना शुरू किया उसने कहा—'राजन्! एक बात पूछूँ।'

'एक नहीं हजार बातें पूछो।' बोलो—

'तुम अपना विवाह कब करोगे?' सुमन ने पूछा—

'मैं तो अपना विवाह कर चुका हूँ सुमन।' राजू के इस उत्तर को सुनकर सुमन चकित हो गयी—

'झूठ! बिल्कुल झूठ! सुमन ने हँसी में कहा—

'झूठ नहीं यह सत्य है, मैं एक लड़की से विवाह का वादा कर चुका हूँ कि पढ़ाई समाप्त करने के बाद विवाह कर लूँगा।'

'वह कौन भाग्यशालिनी है राजू?'

'बूझो तो जाने।' राजू ने कहा—

'मैं कोई बुझक्कड़ हूँ क्या? क्या कोई ज्योतिषी हूँ?' सुमन ने कहा—'कि 'सरला होगी।'

'नहीं।' राजू बोला।

'तो फिर ममता होगी।'

'नहीं, वह भी नहीं है।'

'तो फिर कमला ही हो सकती है।'

'नही, सुमन, वह भी नहीं है, कोई और ही है।'

'तो फिर अब तुम ही बताओ, वह कौन है?' सुमन बोली—

'पहले उससे पूँछ लूं। अगर उसने कह दिया कि बता दो, तभी बताऊँगा। मैं किसी के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहता। अब मेरा जीवन भी तो किसी दूसरे का हो चुका है। उसके बिना पूछे कुछ भी नहीं बता सकता हूँ।'

'इसमें विश्वासघात की क्या बात है? मैं क्या किसी को बताने जा रही हूँ? क्या आप मुझ पर विश्वास नहीं करते?' सुमन रोष करती हुई बोली—

'तुम तो नाराज हो गई हो, उसने मुझे रोक रखा है। अगर मैं तुम्हें बता दूं। तुम दीपक को बता दोगी या किसी और को, अगर उसने यह जान लिया तो विश्वास घात नहीं तो और क्या होगा ?'

'अच्छा यह तो बता ही दो कि वह हमारे सेक्सन में पढ़ती है या दूसरे में।'

'नहीं, यह बता दूंगा तो तुम जान जाओगी।'

'तुम नहीं-नहीं' करते ही जाते हो, ममता और कमला के अतिरिक्त कोई इतनी भाग्यशालिनी नहीं हो सकती।'

'नहीं सुमन, मैं करूँगा ब्याह तो 'म' से ही, लेकिन ममता से नहीं।' राजू ने नाम के पहले अक्षर की ओर संकेत कर दिया।

'लव मैरिज करोगे क्या ?' सुमन ने पूछा—

'नहीं, वह अपने घर में कह देगी और मैं अपनी मां से कह दूंगा। सब काम रस्म-रिवाज के साथ होगा।'

'अगर घर में उसकी बात किसी ने न मानी तो उसे लेकर क्या भाग जाओगे ?'

'नहीं सुमन, ऐसा नहीं हो सकता। मेरी माँ तो मान ही जायगी, रही लड़की के घर की बात अगर वह मुझे योग्य समझेंगे तो कर देंगे, नहीं तो जन्म भर तपस्या करूँगा और अगले जन्म में हम दोनों मिल जाएँगे, हम दोनों को कोई अलग न कर सकेगा। हम दोनों जन्म-जन्मान्तर······'

इसी बीच 'डाक्टरी पढ़ कर भी तुम अगले जन्म से विश्वास करते हो, सुमन बोली—

'हाँ सुमन' मैंने जब ऋषियों मुनियों पर अत्याधिक विश्वास किया है। उन योगियों और महापुरुषों का कहना था कि सच्चे मन से की गई तपस्या कभी व्यर्थ नहीं जाती, प्रेम अजर-अमर है।'

'तो फिर इस जन्म में एकाकी ही रहोगे ?'

'हाँ, अगर ठुकरा दिया गया तो अवश्य एकाकी रहूँगा। मैं कभी

अब अन्य का होकर इस संसार में नहीं रहूँगा।' वह आगे कहता ही गया—'सुमन ! जब वह ठुकरा देगी तो हो सकता है जिससे करूँगा, वह भी कभी ठुकरा दे। यह संसार विचित्र है, किसी का ठिकाना ही क्या, परन्तु मैंने एक को वचन दिया है, उसी का रहूँगा।'

'नहीं लड़की कभी नहीं ठुकरायेगी ।'

'मैं उसके मां-बाप की बात कर रही हूँ कि कहीं आज्ञा न दी तो·······।'

'देखा जायगा सुमन ! अभी दो वर्ष पढ़ना है ! मैं योग्य हो जाऊँगा। तो मां-बाप क्यों ठुकरायेंगे, मुझमें कोई और कमी तो रहेगी नहीं।'

'अच्छा उस भाग्यशलिनी से पूछ कर तो आप मुझे बताइयेगा, अगर मैं कुछ मदद कर सकी तो अवश्य करूँगी।' बात समाप्त भी न हो पायी थी कि कुछ लड़के-लड़कियों का घूमता हुआ एक ग्रुप पास आकर बैठ गया और कुछ-समय के लिये निस्तब्धता का वातावरण हो गया।

१८

आजकल निशा अपनी माँ के घर आई है। उसका लड़का अब चलने-फिरने लगा है। सेठानी जी सारा दिन उसे लेकर उससे बात करने में मस्त रहती हैं। घर का काम निशा सम्भाले है। शान्ता अब भी घर से छुट्टी पाकर सेठानी जी के पास आकर बैठ जाती है। पर अधिकतर सेठानी जी अपनी निशा के साथ ही बातें करती रहती हैं।

एक दिन सेठानी जी से अपने पास बालक को सुला उठ कर बैठने लगी थी कि निशा हाथ में सेठ जी का स्वेटर लेकर आ गई और बोली-'माँ फन्दे इतने ही रहें या बढ़ा दूँ।'

'नहीं निशा, इतने ही फन्दे बहुत हैं, नहीं तो पिता जी को आ जाने दो, उनसे नाप ले लेना।'

सेठानी को पता नहीं था। उसके पिता जी खाना खा रहे थे। वह और कुछ बिना कहे हुए उठ कर पिता जी के पास जाने लगी कि सेठ जी खुद ही कमरे में आ गये। वह बोली—'इतनी ही नाप का स्वेटर बुनूँ या इससे बड़ी कर दूँ।'

'नहीं बेटी, यह बहुत काफी है।'

'बेनी सो गया है क्या ?'

'हाँ, अभी अभी तो सोया है।' सेठानी जी ने उत्तर दिया।'

'रसोई घर में सेव रखे हैं उसे उठाकर खिला देना, वापस आते समय और लेता आऊँगा।'

'आज आराम नहीं करोगे क्या ?' सेठानी जी पूछने लगीं।

पाँच-छः बजे तक लौट आऊँगा। अभी कहीं काम से जाना है।

'अच्छा, जल्दी चले आइयेगा।'

सेठ जी चले गए। अपनी दूकान पर जाकर बैठ गए। पर वहाँ भी जी न लगा। पोस्टमैन ने चिट्ठी दी जो निशा को ससुराल से आई थी उन्होंने पूछा था कि कब विदा कराने आयें। सेठ जी ने दुकान बन्द की, और घर की ओर चल पड़े! कुछ-कुछ उस समय अँधेरा हो रहा था। चाँदनी रात में सेठानी जी लड़के को खिला रही थीं निशा पास बैठी स्वेटर बुन रही थी। जब निशा वहाँ से चली गयी तो बोले—'कि जब निशा यहाँ से चली जायगी तो फिर क्या करोगी ?'

'मैं निशा को अपने ही पास बुला रही हूँ।' सेठानी बोली—

'यह लो, चिट्ठी आई है उनकी, उन्होंने पूछा है कि कब निशा को लेने आवें।'

'मैं नहीं जाऊँगी, अभी तो आई, हूँ अभी लेने आयेंगे। आप जवाब ही न दीजिये पिताजी।' निशा कहने लगी और उदास हो गई।

सेठ जी मुस्करा पड़े और बोले—'बेटी, सुमन, मधु दो और बैठी हैं। भगवान करे उन्हें भी तुम्हारी ही तरह कोई सुन्दर घर मिल जाय, जिससे वह भी रानी की तरह जीवन बितायें।

'पिताजी आप घबराते क्यों हैं, घर मिल ही जायेगा। सुमन का तो उन्हीं के छोटे भाई से कर दीजिये और मधु के लिए फिर बाद में सोचेंगे। दीपक भी तो बैठा है, उसका भी ब्याह करना है।'

'वह तो लड़का है बेटी, जब जिससे चाहेगा, विवाह कर ही लेगा। हमारे समाज ने अभी लड़कियों को तो इतनी स्वतन्त्रता और छूट नहीं दी है। क्या किया जाय मेरे विचार स्वतन्त्र हैं पर समाज के तो नहीं।'

'अभी चलिये, दूध पीजिये और आराम कीजिये। सुबह पुरोहित को बुलाऊँगी।' सेठानी बोली—

'वाह री माँ, अब जमाना पुरोहितों का ही है? निशा ने कहा—आराम करिए सुबह विचार करेंगे।'

रात भर निशा यही सोचती रही कि किसी प्रकार मधु का नहीं तो सुमन का विवाह हो ही जाय! अभी वे मुझे लिवाने आ जाएँगे, मैं फिर सब कुछ भूल जाऊँगी; फिर चार-पाँच महीने तक घर का मेम्बर एक और बढ़ जायगा क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आता। क्या सुमन, दिनेश से विवाह करेंगी; वह केवल बी० ए० है और वह अब डाक्टर बन जायगी।' फिर सोचती कि अगर ऐसा हो जाय तो फिर केवल मधु का मामला रह जायगा तो मधु का दिनेश से कर दूँ।

दिनेश कभी मेरा कहना नहीं टालेगा, जैसा कहूँगी वैसा ही कर लेगा। वह मेरी बहुत बात मानता है। बड़ा ही अच्छा लड़का है देवता जैसा। लेकिन वह सोचती कि उधर रेखा भी तो है उसका भी तो ब्याह कहीं करना ही है। दिनेश कहता था पहले रेखा का होगा फिर मैं अपना ब्याह करूँगा। इधर पिता जी की अवस्था गिर चुकी है अगर किसी दिन········। 'नहीं, भगवान ऐसा न करें, नहीं माँ तो कुछ जानती भी नहीं है। वह क्या करेगी? दीपक का न हो पर सुमन, मधु का तो अवश्य हो ही जाना चाहिये। मेरी नजर में तो कोई योग्य लड़का आता ही नहीं। पिता जी की कितनी जायदाद है। केवल यही मकान ही लाख-दो लाख से कम का न होगा इतनी बड़ी कोठी पूरे शहर में न होगी। पहले तो फिर भी पूरी कोठी न थी परन्तु अभी कुछ दिन पहले पिता जी ने पूरी कोठी खरीद ली है। फिर दुकान भी तो अपनी है। क्या करेंगे? दीपक तो दुकान पर बैठेगा नहीं। डाक्टर बनकर क्या जेवरों का व्यापार करेगा? उसकी बीबी तो गहनों से भर जायेगी। पिता जी का नाम पूरे आगरा में' मशहूर है। अगर कहीं बुरी बातें हो गई तो कितनी बदनामी होगी। उसके हृदय में भाँति-भाँति के उद्गार उठ रहे थे। वह सब सोचकर दुःखी हो रही थी। उसने आगे सोचा—'नहीं, नहीं सुमन का विवाह हो जाना चाहिये। उस लड़के (मधुप) के जाने के बाद कुछ दिन वह उदास रही है। कहती थी पुरुषों से मैं घृणा करती हूँ। अब तो वह फिर वैसे ही हो गई है। पढ़ने-लिखने से दिमाग विस्तृत होता है। क्यों न सुबह उसे बुलाकर पूछ लूँ कि तुम विवाह कब करोगी।' बारह की घंटी बजी, निशा इधर-उधर सोचती हुई सो गई। सुबह सब से पहले उठी और नहा-धो रसोई घर में चाय बनाने चली गई। चाय बनाते हुए भी उसे रात की ही बातों का ध्यान आ रहा था। वह यही भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि दोनों का नहीं तो एक का विवाह तो मेरे रहते पक्का हो ही जाय। शादी चाहे हम इकट्ठी दोनों की कर देंगे।

'निशा ! निशा !' शान्ता ने आवाज दी—

'कौन ? शान्ता दीदी ?'

'हाँ, यह लो किताब राजू ने भेजी है; सुमन की है। वह आज कालेज नहीं जा रहा है।'

'क्यों ?'

'क्या बताऊँ निशा, मैं ऐसी पागल हूँ कि मुझे कुछ याद नहीं रहता, कल वह मुझे कह गया था कि मेरा कोट धो देना; मैं आकर प्रेस कर लूँगा, मुझे याद नहीं रहा। तभी वह आज कालेज नहीं जा रहा है।'

'नहीं, उसे कालेज भेजो, यहाँ आकर सुमन, दीपक किसी का कोट पहन ले, ऐसे नहीं छुट्टियाँ मनाई जाती हैं। यह दूसरी-तीसरी क्लास तो नहीं है, कि जब चाहा घर बैठ गये। प्रोफेसरों का कुछ नहीं बिगड़ेगा, जो आज वह काम करायेंगे या बताएँगे उसके लिये यह क्या करेगा ?'

'मैंने बहुत कहा, पर वह मानता ही नहीं। शान्ता ने मन्द स्वर में कहा—

'अच्छा, उसे मेरे पास भेजो।'

शान्ता किताब वहीं रखकर घर चली गई और राजू से बोली— 'निशा बुला रही है तुम्हें।'

राजू जैसे बैठा था, वैसे ही उठ कर निशा के यहाँ चला गया।

'क्यों राजू, आज कालेज में छुट्टी है क्या ?' निशा ने पूछा—

'नहीं तो····यह किसने···?'

'तो फिर जाते क्यों नहीं हो ?' निशा ने कहा—

राजू चुप रहा, वह कुछ भी नहीं बोला।

'चुप क्यों हो बताओ न ? सुमन, दीपक किसी का कोट लेकर

पहन लो, ऐसे बिना मतलब घर नहीं बैठ जाना चाहिए, यह कहते हुए उसने जोर से आवाज दी—'सुमन ! सुमन !'

'जी ।'

'अपना कोट लाओ जो कल नया सिलकर आया है ।'

सुमन हाथ में ऐप्रिल लेकर आ गई और रसोई घर में चली गई। शान्ता ने सुमन से कोट लेकर राजू को दे दिया और बोली—'यह लो कोट, अब तो जाओगे न ?'

राजू कालेज वहाँ से एक कप चाय पीकर चला गया। रास्ते भर मन ही मन तमाम बातों को सोचता रहा और अपने भाग्य को सराहता रहा।

राजू के जाने के बाद निशा सोचने लगी—राजू लड़का भी तो योग्य है, अभी दो साल में डाक्टर बन जायगा। गरीब हुआ तो क्या हुआ। सुमन भी डाक्टर बन जायगी थोड़े ही दिनों में अच्छे परिवारों में गिने जाने लायक हो जाएँगे। फिर सोचती क्या मैं पागल हूँ ? राजू सुमन से छोटा है, यह ठीक न होगा। मधु के लिए यह ठीक रहेगा। पर सुमन बड़ी है पहले सुमन का ब्याह करना चाहिए। इसी उधेड़-बुन में वह बराबर लगी रहती।

आज जब सभी खा-पीकर चले गए। केवल सेठानी जी और निशा घर पर रह गयीं। निशा बेबी के कपड़े बदलने कमरे में जा रही थी कि सुमन आ गई।

'क्यों सुमन, बड़ी जल्दी आ गई ?'

'आज रात की ड्यूटी है दीदी।'

निशा ने कहा—'एक बात इधर सुनो।'

'कहो दीदी !' सुमन ने पूछा—

'सुमन ! यह राजू कैसा लड़का है ?'

'बड़ा ही अच्छा है ? मुझे तो वह बड़ा ही भोला लगता है, उसमें सभी अच्छे गुण हैं।'

'अच्छा, तुम्हें शादी कब करनी है ?' निशा ने सुमन से पूछा—

'अभी नहीं दीदी, हो जायगी, जल्दी क्या है ? अभी तो•••।'

बात काटते हुए निशा ने कहा—'देखो सुमन, पिता जी वृद्ध हो गए हैं, अस्वस्थ रहते हैं, उनका अब अधिक दिन का हम लोगों को सहारा ही क्या, सूखे पत्ते की भाँति किसी दिन हम लोगों का साथ छोड़ दें। अच्छे-अच्छों का भरोसा जीवन का नहीं रहता। फिर पिता जी को भी बड़ी चिन्ता रहती है। कम से कम तुम दोनों बहनें ठिकाने पर लग जातीं तो उनकी कुछ चिन्ता कम होती।'

'मैं विवाह कभी नहीं करूँगी दीदी।'

'सुमन विचार बदलते देर नहीं लगती, आज तुम यह कह रही हो कि विवाह नहीं करोगी। कल तुम कहीं कर लेती हो तो जानती हो कितनी अपमान की बात होगी, कुल में कलंक लग जायगा। इज्जत सब मिट्टी में मिल जायगी।'

नहीं दीदी, मानो तो ! अभी तो मेरा कोई विचार ही नहीं है। राजू, दीपक आदि के साथ मैं भी डाक्टरी करूँगी, अगर कभी विचार आ गया तो मैं तुम्हें सब बता दूँगी। मुझ पर विश्वास करो दीदी।'

'अच्छा वचन दो कि कभी गलत रास्ते पर न चलोगी जैसे पहले•••।'

'विश्वास करो। मैं सच कह रही हूँ दीदी। अब कभी मेरे पैर••••।' वह कहते-कहते आँसू बहाने लगी और फिर कहने लगी—

'मेरी अच्छी दीदी, तुम धन्य हो, तुमने मुझे बहुत बचाया है, जानते हुए भी तो तुमने किसी से कुछ नहीं कहा।'

निशा ने बात मान ली और कहा—'सुमन, राजू के साथ मधु का विवाह हो तो कैसा रहेगा।'

'परन्तु वह नहीं करेगा।' सुमन बोली—

'क्यों ? क्या तुम दोनों ने शपथ खाई है कि विवाह नहीं करेंगे।'

नहीं दीदी, एक दिन ऐसे ही बातचीत के दौरान में वह कहता था कि मैं जिससे वादा कर चुका हूँ उसी से व्याह करूँगा, नहीं तो जन्म भर तपस्या करूँगा। वह बड़ा ही अटल है अपनी बात पर।'

'नहीं, वह मजाक करता होगा। मेरा कहना वह कभी नहीं टाल सकता। शान्ता भी मुझे मानती है। वह भी तो बड़ी देवी है। अगर उससे मैं शरीर का खून मागूँ तब भी वह दे देगी। वह गरीब अवश्य है, पर योग्यता में मुझसे भी बढ़कर है। बेचारी ने कष्ट झेल कर जो कुछ किया है, हम सबके लिए एक उदाहरण है।'

'अगर मान जाय तो बड़ा ही अच्छा होगा दीदी।'

'लेकिन तुम अब रात को चली जाओगी दीदी, तो फिर क्या होगा ?'

अभी बात हो ही रही थी कि निशा की माँ वहाँ पर आ गई। निशा बेबी के कपड़े बदल चुकी थी। माँ ने निशा के पास आकर कहा—'निशा, अब तुम चली जाओगी तो मैं कैसे क्या करूँगी। मेरा तो दिमाग काम ही नहीं करता। कम से कम सुमन और मधु के लिए कुछ तय करके जाती, यह मेरे ऊपर बहुत बड़ा बोझ है। अब यह दोनों बड़ी हो गईं हैं और कहीं जरा भी किसी का पैर फिसला तो मान-मर्यादा धूल में मिल जायगी।' माँ कहते-कहते बड़ी उदास हो गई।

'माँ ! सुमन तो अभी विवाह करती नहीं है। डाक्टरी पढ़ जाने के बाद यदि उसकी तबीयत आयगी तो वह करेगी। मेरा यह विचार है कि पिता जी अपनी आधी जायदाद सुमन और मधु में बाँट दें और मधु का विवाह राजू से कर दें, वह बड़ा ही होनहार लड़का है, गरीब है तो क्या हुआ।'

'राम, राम कहो निशा !' माँ ने कहा—

'दुनिया क्या कहेगी कि जो घर में बर्तन साफ करती थी उसके लड़के के साथ सेठ ने लड़की का व्याह कर दिया।'

'माता जी अब वह समय नहीं रहा। गरीब-अमीर सभी होते हैं। जहाँ भाग्य होता है वहाँ ब्याह हो जाता है, लड़का बड़ा योग्य है। शान्ता के माँ बाप क्या कम अमीर थे। वह कितने गरीब परिवार में गई थी। देखा, उसके लड़कों में एक डाक्टर है, दूसरा बी० ए० में पढ़ रहा है। तीसरा दसवें में है चौथा आठवें में हैं तुम देखना सभी लड़के बड़े अच्छे बनेंगे। एक दिन वह अपने माँ-बाप का नाम अमर करेंगे।'

'नहीं निशा मेरी तो ऐसी इच्छा नहीं है। अपने पिता जी से पूँछना, देखो क्या कहते हैं ?'

'माँ, पिता जी कुछ भी नहीं कहेंगे, जो आप कहेंगी, वह हो जायगा। लड़का सुन्दर है, योग्य है जब इतनी जायदाद हो जायगी, तब वे और भी ऊँचे महलों में रह सकते हैं।'

'मालूम है किस मकान में रहते हैं।'

'हाँ माँ, तुम अपनी कोठी में से एक बँगला उन्हें दे देना, कुछ खर्च करो तो लड़का विलायत होकर आ जायगा। तब तो ऐसा दामाद स्वप्न में भी किसी को न मिला होगा।'

'मुझे क्या मालूम निशा, जो तुम ठीक समझो वही करना; ऐसा न हो मधु दूसरे दिन ही वहाँ से चली आए।

'माँ, मैं बिना मधु की सलाह लिए यह रिश्ता करूँगी भी नहीं।'

'तो क्या मधु से पूछोगी ?' माँ ने कहा—

'नहीं मां, मैं ऐसे ढंग से पूँछ लूँगी कि मधु जान ही न सके, मैं पूछूँगी कि राजू कैसा लड़का है ? तुम्हें पसन्द है या नहीं ? वह हाँ या न कर ही देगी।'

अगर वह हाँ कर दे तो मुझे कोई इनकार नहीं, जरा दीपक सुमन से भी पूँछ लेना बाद में वह मुझे गाली न दें।'

'तुम अब उसकी चिन्ता न करो माँ, मैं यह सब कर लूँगी।

२०

दो प्रेमियों का आपस में मिल जाना स्वर्ग को प्राप्त करना है। मधु का सगुन शान्ता के घर भेज दिया गया बात पक्की हो गई। जिस समय निशा और सुमन तिलक लेकर शान्ता के घर पहुँची तो शान्ता हैरान रह गई। उसे तो यह स्वप्न में भी ध्यान न था कि निशा अपनी बहन का ब्याह राजू के साथ करेगी। सब लोग मिलकर सेठ जी के घर बधाई लेने चले। उसमें भोलानाथ बिल्लु को और सेठ जी को भी साथ ले गया। वहाँ सेठ जी को भी मिठाई का थाल और रुपये मिले। सब देख कर हैरान थे। पर मुँह से कुछ न कहते थे।

अब तो भोलानाथ का बड़ा आदर होता था। जहाँ भी जाता वहीं उसे आदर से लोग बिठाते। वह जहाँ भी जाता—शान्ता की ही प्रशंसा करता रहता और कहता था कि अगर उसने राजू को पढ़ाया न होता तो आज मुझे इतना आदर कहाँ से प्राप्त होता।

परन्तु भाग्य को लिखी रेखा को कौन मिटा सकता है। मनुष्य न ज्यादा चिन्ता और न ज्यादा खुशी ही सहन कर पाता है। भोलानाथ ने चारपाई पकड़ ली।

डाक्टर पर डाक्टर आये पर उनकी कोई बीमारी न पहचान सका। वह चारपाई पर पड़े-पड़े अपने आप कहता रहता—'शान्ता ! मुझे माफ करना, मैंने तुम्हें बड़ा दुख दिया है।'

'ऐसा क्यों कह रहे हैं आप बड़ी जल्दी ठीक हो जाएँगे।'

'नहीं शान्ता मैं ठीक हो भी जाऊँ, पर मैं अब ठीक होना भी नहीं चाहता । धन्य हो तुम, कोई और होती तो ।' कहते-कहते उसके नेत्र जल से भर जाते ।

'आप मेरे नाथ हैं । अभी तो आपको राजू का, उमेश का ब्याह तथा भविष्य देखना है ।'

अब तुम करना शान्ता तुम पर ही तो इन सबकी जिम्मेदारी है, मैंने कभी किया ही क्या है ।'

'नहीं मेरे स्वामी, आपका ही सब आशीर्वाद है । आपको अभी बहुत कुछ करना है ।' शान्ता ढाढ़स देती हुई बोली—

उसने फिर कहना प्रारम्भ किया—'अभी तक तो हमने गरीबी देखी है, दुख झेला है अब सुख के दिन आए हैं । आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जायँगे ।'

भोलानाथ ने कहा—'शान्ता यह बँगला, यह बाग, यह ठाठ सब तुम्हारी तपस्या के ही फल हैं । इसका भोग तुम कर सकती हो, मैं नहीं—मैं तो पढ़ाई को महत्व ही नहीं देता था, मैं तो सोचता था कि लोग न जाने क्यों इस पर दिमाग खराब करते हैं ? मास्टरों की मार खाते हैं, इससे ज्यादा अच्छा है कि दिन भर में मजदूरी करके दो रुपया कमा लें ।

'अभी दो वर्ष बाद देखियेगा । हमारा राजू एक दिन में दो सौ रूपया कमायेगा । हमारा घर, घर बन जायगा, अभी आपने देखा ही क्या है । शान्ता बड़े ही भाव के साथ कहती थी ।

भोलानाथ हँसने लगा और बोला—'शान्ता तुमने मेरे साथ बहुत किया, तुम्हारा उपकार जन्म जन्मान्तर न भूलूँगा ।'

यह सुनकर शान्ता का हृदय भर आया और भोलानाथ का हाथ अपने हाथ में लेकर बोलने ही वाली थी कि भोलानाथ ने 'और भी तो······ ।' कहकर ही रोक लिया । फिर थोड़ी देर में बात घुमाकर

बोले—'मुझे आज एक बचपन की घटना याद आ रही है कि मैं जब पहले पहल स्कूल गया। और मुझे सबक न आने पर मास्टर ने मारा तो मैं घर भाग आया। उस दिन मां दिन भर मास्टरों को गाली देती रही कि मेरे लड़के को क्यों मारा है। वह अब कभी अपने लड़के को स्कूल नहीं भेजेगी। जब कभी पिता जी कुछ भी मुझे कहते, तो माँ उन्हें डाँट देती। अगर मैं भी पढ़ा होता—तो………… ।'

'क्या हुआ आप नहीं पढ़े तो आपके लड़के तो पढ़ ही गए । आप इन्हीं का सुख देखिये।'

'मेरा भाग्य ऐसा नहीं शान्ता कि जिनको मैंने मारा-पीटा; उनका सुख देखूँ।' भोलानाथ जीवन से निराश से हो गये थे। इसीलिये उनका मन तमाम बातों की ओर दौड़ता था। कभी-कभी वह अपने किये पर पश्चाताप भी करते थे।

'माता जी ! क्या हाल है बाबूजी का ?' राजू अपनी कापी वहीं पर रखता हुआ बोला—

'कुछ पता नहीं चलता बेटा राजू; तेरे पिताजी बड़े घबड़ाये हुए हैं।'

'राजू ! ओ राजू ! भोलानाथ ने आवाज दी।

'हाँ पिता जी।' राजू बोला—

'तुम्हें मेरी मार तो याद आती होगी बेटा। आओ, आओ मेरे लाल मेरे निकट बैठो।' अपने पास राजू को बिठाकर कहता—'बेटा ! तुमने मेरा नाम ऊँचा किया है, मुझे तुम पर गर्व है।'

राजू पिता को समझाता, सान्त्वना देता और भगवान से प्रार्थना करता रहता कि उसके पिता जी जल्द ही स्वास्थ हो जायँ। यकायक भोलानाथ बोले—'जीते रहो बेटा, अपनी माँ की देख-भाल करना, इनका ऋण मैं तो नहीं दे सका मगर तुम जरूर इनकी सेवा करके अदा करना। मैंने जीवन में सदैव इन्हें दुखी ही किया है अब तुम कभी भी माँ को दुःखी न होने देना, नहीं तो मुझे मरने के बाद भी कष्ट होगा।'

'पिता जी ! यह आप क्या कह रहे हैं ? आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाइएगा। अच्छी-अच्छी दवाइयाँ चल रही हैं। आप तनिक भी न घबड़ाएँ।' राजू ने कहा—

'राजू ! सुख उठाना जिनके भाग्य में होता है, वही सुख भोगते हैं। फिर मैने ही तुम लोगों को क्या सुख दिया है। उमेश, रमेश सब कहाँ है ? सब तुम्हारे छोटे भाई हैं। अब उन सबका भार तुम पर ही तो है। तुम सदैव उनकी पढ़ाई का ध्यान रखना; मेरी इच्छा है कि वह भी तुम्हारी भाँति अच्छे आदमी बनें। मेरी बच्ची सचमुच देवी है, उसका भी पूरा ख्याल तुमको रखना है, अच्छे घर में उसका व्याह करना।' वह यह सब कहते-कहते रो पड़े।

'पिता जी ! आप को आज यह सब हो क्या गया है ? मैं अभी किस लायक हूँ अभी तो आपका सहारा ही मेरे लिए बहुत है। भगवान आपको जल्दी ही स्वस्थ करे।' राजू ने कहा—

भोलानाथ ने कराहते हुए कहा—'बेटा ! भगवान जो करता है, सब ठीक करता है। अब मेरे अन्तिम दिन हैं, जितने दिन भी चल जाऊँ, बहुत हैं।'

भोलानाथ चारपाई पर पड़े राजू को समझा रहे थे कि राजू की माँ ने आकर कहा—'जाओ राजू, तुम डाक्टर को बुला लाओ ! कोई ऐसी दवाई दें कि तुम्हारे पिता को नींद आ जाय।'

माँ की आज्ञा पाकर राजू डाक्टर के घर चला गया और शान्ता वहीं भोलानाथ के पास बैठ गई। भोलानाथ ने कहा—'शान्ता तुम फजूल रुपया क्यों खराब कर रही हो ? मैं अब सदा की सोने वाली नींद सोऊँगा। भागवान को अब यही मंजूर है। मेरे दिन पूरे हो चुके हैं। शान्ता नीचे मुँह किये रोती रही उसके आँसुओं से नीचे का फर्श भीग गया वह अब समझ चुकी थी कि मेरे प्रीतम सदैव के लिये साथ छोड़ने ही वाले हैं। उसके जीवन का दीप बुझने ही वाला है।

अपने प्रीतम की खाट के पास बैठे-बैठे शान्ता तमाम प्रकार से देवी-देवताओं की आराधना करती रही। स्त्री-हृदय बड़ा ही कोमल होता है वह अपने पति के जीवन के लिये, अपने सुहाग की रक्षा के लिये, अपने जीवन की बाजी तक लगा देती है। भारतीय नारी शान्ता जो अपने पति द्वारा सदैव ठुकराई गई थी, उसके पति ने तमाम प्रकार की यातनाएँ उसे दी थीं, घर तक से जिस शान्ता को निकाल दिया गया था, वही आज अपने जीवन का शेष भाग अपने पति के चरणों में अर्पण करने को तैयार है। वह धन्य है, स्त्री रूप में देवी है। आज अपने देश में ऐसी ही सती, साध्वी नारियों की आवश्यकता है।

शान्ता ने अपने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर कहना शुरू किया—'नाथ! यह हाथ कभी न छोड़ना, इसे यदि आपने छोड़ दिया तो मेरा संसार उजड़ जायगा, मेरे बने-बनाए महल ढह जायँगे। मैं संसार की किसी भी निधि को नहीं चाहती परन्तु आप..............।' कहते-कहते वह रो पड़ी, उसके मुँह से बोल ही न निकल पा रहा था। उसी बीच मोटर की आवाज सुनाई दी। शान्ता ने अपने आँसू पोंछे। राजू डाक्टर को लेकर अन्दर आ गया।

डाक्टर बनर्जी कुर्सी पर बैठकर भोलानाथ की नब्ज देखने लगे।

भोलानाथ को बड़ा तेज बुखार था, नब्ज बड़ी तेज चल रही थी। डाक्टर ने कहा—'बुखार काफी है, मैं इन्हें एक इन्जेक्शन दे देता हूँ, रात तक कुछ सुधार अवश्य दिखाई देगा।'

भोलानाथ को कुछ-कुछ होश था वह बोले—'डाक्टर साहब, अब सुई मुझे कुछ भी लाभ न करेगी, अब भगवान को यही मंजूर है कि मैं.......।' बात पूरी भी नहीं कर पाये थे कि खाँसी आ गयी। थोड़ी देर रुककर खाँसी के रुकने पर वह पुनः बोले—'मैंने बड़ा अन्याय किया है, बड़ा दुःख दिया है, मैं अब इस संसार में रहने योग्य नहीं हूँ।'

डाक्टर भोलानाथ की बातों को गौर से सुनते रहे और फिर राजू को एक ओर ले जाकर बोले—'ऐसा लगता है कि इन्हें अपना अतीत याद आ रहा है, इनके दिमाग में वही गूँज रहा है जो चैन नहीं लेने देता। यदि इन्हें नींद आ जाय तो कुछ आराम मिले।'

डाक्टर की राय राजू ने मान ली। वह एक इन्जेक्शन लाकर पिता जी के लगा दिया। सुई के लगने से भोलानाथ को नींद तो आ गई परन्तु मर्ज न रुका, उसकी प्रगति बढ़ती ही गई।

भोलानाथ अब बड़े ही शिथिल हो चुके थे। वह अब मुश्किल से बोल पाते थे और उनकी आँखों से अविरल आँसू प्रवाहित थे। उनके पैरों के पास ही शान्ता बैठी थी, वह भी अपने सुहाग को लुटने का अनुभव कर आँसू बहाती थी।

जीवन में सबसे कठिन यही दिन होता है जब मनुष्य संसार के माया-मोह, कुटुम्ब, धन-दौलत सभी कुछ को छोड़कर अंतिम गति को प्राप्त करता है। भोलानाथ बोल तो न पाते थे लेकिन इशारे से सभी की ओर देखकर एक सुन्दर सपने का निर्माण अपने परिवार के भविष्य के लिये कर रहे थे उन्हें अब कुछ-कुछ संतोष हो चुका था और वह अनुभव कर रहे थे कि उन्हें अब देखना ही क्या शेष है।

एक बार उन्होंने अपने आप को फिर सम्भाला और जोर लगाकर बोले—'बेटा। राजू, यह सब तेरा ही संसार है, तू ही इसको सम्भालने वाला है। मेरी अन्तिम आँकाक्षा भी पूरी करना, आ मेरे पास और वादा कर कि तू मेरे भार को सहन करेगा।' फिर शान्ता की ओर देखकर कहा—'देवी ! तुम मुझे अन्तिम समय माफ कर दो, मैंने बड़ा ही दुःख दिया है।'

शान्ता और राजू रो पड़े। साथ ही उमेश, रमेश भी आँसू बहाने लगे। बेबी जो रीता के साथ गुड़िया खेल रही थी, वह भी आ गयी।

मरने के पूर्व सभी को यह आशा रहती है कि आखिरी साँस तक कर्तव्य करने से शायद भगवान सुन ही ले, इसी विचार से राजू दवा लेने फिर डाक्टर के पास चला गया था।

पूरा परिवार एकत्र था। सुमन, निशा भी आ गई थी; दीपक निशा के माँ-बाप को खबर करने गया था। मधु भी बैठी हुई आँसू बहा रहा थी।

दुःख की बेला थी। शान्ता को सभी सान्त्वना दे रहे थे परन्तु उसके आँसू न रुक रहे थे, उसका सुहाग लुट रहा था। वह सोचती कि यदि स्त्री का पति नहीं तो उसका जीवन व्यर्थ है। सभी की आँखों में आँसू थे।

राजू दवाई लेने गया था। वह अभी लौटकर आ भी न पाया था कि उसी बीच भोलानाथ को हिचकी आयी और उनके प्राण-पखेरू सदैव के लिए उड़ गये।

शान्ता वहीं पछाड़ खाकर गिर पड़ी और सभी की आँखों से आंसू बह पड़े थे। राजू दवा लेकर आया तो वह भी 'पिता जी !' कहकर धड़ाम से उनके पैरों पर गिर पड़ा।

भोलानाथ तो नहीं रहे परन्तु भारतीय आदर्श नारी शान्ता आज भी अपने कष्ट से बसाए हुए संसार में दिन बिता रही है और भोलानाथ स्वर्ग में संतोष पा रहे हैं।

समाप्त